



# प्रत्युष नवबिहार

रांची संस्करण

www.tezrafterlive.com  
Email-navbiharjh@gmail.com

रांची, पटना और दिल्ली से प्रकाशित

रांची • मंगलवार • 10.09.2024 • वर्ष : 15 • अंक : 52 • पृष्ठ : 12 • आभ्यन्तर मूल्य : 2 रुपया

## महिला सशक्तिकरण को दिया जा रहा नया आयाम

अब तक 2.59 लाख सखी मंडलों को बैंक क्रेडिट लिंकेज से जोड़ा गया

रांची

ग्रामीण महिलाओं के उत्थान और उनके आर्थिक स्वावलंबन के प्रति संवेदनशील मुख्यमंत्री हेमन्त सोरेन के विजनरी सोच का परिणाम है कि 2019 से पूर्व सखी मंडल को जितना क्रेडिट लिंकेज दिया गया, उसका 10 गुना क्रेडिट लिंकेज विगत साढ़े चार वर्ष में सखी मंडल की दीदी-बहनों को मिला। यही नहीं, सखी मंडल की संख्या में भी बढ़ोतरी दर्ज की गई है। वर्ष 2013 से 2019 तक स्वयं सहायता समूह को क्रेडिट लिंकेज के तहत ₹1,114 करोड़ की राशि दी गई, जबकि 2019 के बाद 30 जून 2024 तक ₹10,111 करोड़ की राशि सखी मंडल की महिलाओं को सशक्तिकरण हेतु दी गई। वहीं 2013 से 2019 तक 2.45 लाख सखी मंडल की संख्या बढ़कर 30 जून 2024 तक 2.88 लाख हो गई।

### आजीविका से जोड़ने का क्रम जारी

ग्रामीण महिलाएं और अर्थव्यवस्था सशक्त हो, इसके लिए राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन के जरिए राज्य के 26 लाख परिवारों को आजीविका के सशक्त माध्यमों से जोड़ा गया है। कृषि, पशुपालन, वनोपज, अंडा उत्पादन, जैविक खेती आधारित आजीविका से ग्रामीण परिवारों को आच्छादित किया जा रहा है। राज्य संपोषित जोहार परियोजना के तहत 17 जिलों के 68



मुख्यमंत्री ने पश्चिमी सिंहभूम में कार्यक्रम के दौरान सखी मंडल को 30 करोड़ रुपये से अधिक का बैंक क्रेडिट से जोड़ा

प्रखण्डों के 3,816 गांव में 3,900 उत्पादक समूह एवं 21 उत्पादक कंपनियों का गठन एवं संचालन हुआ। जिसके तहत राज्य के करीब 2.25 लाख परिवारों की आय में बढ़ोतरी हुई।

### वनोत्पाद से मिल रहा लाभ

महिला किसान सशक्तिकरण परियोजना के जरिए भी राज्य के 2.09 लाख परिवारों को लाभ, रेशम, औषधीय पौधे की खेती, ईमली, कृषि एवं पशुपालन से जोड़ा गया है। राज्य संपोषित झारखण्ड माइक्रोडिपेंडिंग इरिगेशन परियोजना के तहत करीब 14,246 किसानों को टपक सिंचाई

तकनीक से जोड़ कर उन्नत खेती की जा रही है। इस परियोजना के तहत 30 हजार महिला-पुरुष किसानों को जोड़ने का लक्ष्य है।

### तकनीक में निपुण हो रही महिलाएं

राज्य में बैंकिंग कॉरिस्पॉन्डेंट सखी, पशु सखी, कृषि सखी, वनोपज मित्र, आजीविका रेशम मित्र, सीआरपी समेत, करीब 80,000 सामुदायिक केंद्र को प्रतिष्ठित कर परियोजना के क्रियान्वयन एवं विस्तारण में लगाया है। आधुनिक संचार तकनीक से इन महिलाओं का क्षमता वर्धन किया गया है।

### 2019 से पूर्व सखी मंडल को जितना क्रेडिट लिंकेज दिया गया, उसका 10 गुना क्रेडिट लिंकेज विगत साढ़े चार वर्ष में दिया गया

## झारखण्ड मुख्यमंत्री मंडियां सम्मान योजना (JMMSY)



### रश्मि बुडेली, चाईबासा

झारखण्ड मुख्यमंत्री मंडियां सम्मान योजना से जो पैसा मुझे मिल रहा है, उसका उपयोग मैं अपनी पढ़ाई में करूंगी। झारखण्ड सरकार को धन्यवाद, उन्होंने हमें इस योजना से जोड़ा। हेमन्त दादा को धन्यवाद और जोहार



### दिव्या तिवारी, विश्रामपुर, पलामू

रक्षा बंधन पर हेमन्त भैया ने हमें उपहार दिया है। हर साल ₹12,000 प्राप्त होगा। हेमन्त भैया का आभार। यह पैसा मेरी जरूरतों को पूरा करने में सहयोग करेगा। हेमन्त भैया को धन्यवाद



### रमिता रंजन, नावाडीह, चतरा

योजना से जो पैसा मिला है और आगे जो पैसा मिलेगा, उसे अपने बच्चों की पढ़ाई में खर्च करूंगी। मेरे स्वामें ₹1,000 आया है, हर साल मुझे ₹12,000 मिलेगा। सीएम हेमन्त जी को आभार



### चांदनी देवी, पाकुड़

26 अगस्त को मेरे बैंक अकाउंट में योजना का पैसा आ गया था। इस पैसे का उपयोग मैंने अपने छोटे-मोटे कार्यों में किया है। योजना में हमलोग को साल का ₹12,000 मिलेगा। महिलाओं के लिए यह बहुत अच्छी योजना है। हेमन्त सरकार को बहुत-बहुत धन्यवाद



### मैं अकिता कुजूर,

झारखण्ड की निवासी हूँ। मेरा चयन जूनियर इंजीनियर (यांत्रिक) के लिए हुआ है। मैं खुश हूँ, मुख्यमंत्री जी ने जो वादा किया था, वह ससमय पूरा किया। हमें इंतजार का अच्छा परिणाम मिला और हम सरकार के अंग बनें।

मुख्यमंत्री जी को बहुत-बहुत आभार...

## अबुआ आभार हेमन्त सरकार



### मैं प्रकाश कुमार मंडल,

धनबाद जिले का निवासी हूँ। मेरा चयन पाइपलाइन इंस्पेक्टर (नगर विकास एवं आवास विभाग) में हुआ है। मैं खुश हूँ, मुख्यमंत्री हेमन्त सोरेन जी के प्रयास से हम लोगों को समय पर नियुक्ति पत्र मिल गया। अब मैं झारखण्ड के विकास में अपना योगदान दूंगा।

मुख्यमंत्री जी को बहुत-बहुत आभार...



### नियुक्ति नियमावलियों की अड़चनों को दूर कर हजारों की संख्या में गरीब परिवार के युवाओं को सरकारी नौकरी दी गई।

### निजी क्षेत्र में भी हजारों की संख्या में स्थानीय युवाओं को ऑफर लेटर मिला। वर्तमान में हजारों सरकारी नियुक्तियां प्रक्रिया में हैं।



## महिलाओं के बड़े वर्ग को प्रभावित करेगा योजना



सुमन देवी, बोकारो ने कहा कि झारखण्ड मुख्यमंत्री मंडियां सम्मान योजना से जुड़कर खुशी हो रही है। बच्चों की पढ़ाई में होने वाले खर्च में सरकार द्वारा दिए जा रहे इस राशि का उपयोग करूंगी। सुमन देवी ने कहा कि सरकार का यह प्रयास सराहनीय है। जरूरतमंद महिलाओं को झारखण्ड सरकार कई योजनाओं का लाभ दे रही है, लेकिन यह योजना, महिलाओं के बहुत बड़े समूह को प्रभावित करेगी। जहां मैं रहती हूँ, वहां की लगभग सभी महिलाओं को इस योजना का लाभ मिला है। रोजमर्रा की जरूरत को पूरा करने में यह राशि हम जैसी अन्य महिलाओं को काफी मदद करने वाली साबित होगी। जिससे बड़ी संख्या में महिलाओं को योजना का लाभ मिल सकेगा। सुमन देवी ने कहा कि बच्चों की पढ़ाई में हर माह पैसे खर्च होते हैं, अब ₹1,000 की राशि जो झारखण्ड सरकार हम

लोगों को दे रही है उससे हर माह होने वाले खर्च को हम लोग संतुलित कर पाएंगे और जीवन अच्छे से गुजर सकेगा। सुमन देवी ने बताया कि इस योजना के संबंध में उसने अपने परिचितों को भी जानकारी दी है और वे भी इस योजना का लाभ ले चुकी हैं। सभी के बैंक खाता में ₹1,000 आ गया है। बोकारो जिला में जगह जगह शिविर लगाकर हम महिलाओं को योजना से जोड़ा गया है। सरकार ने महिलाओं को आवेदन जमा करने और उसे भरने में काफी मदद की है। सुमन देवी ने कहा कि घर-घर प्रखण्ड कार्यालय से लोग योजना का आवेदन देकर गए थे। आवेदन जमा करने के 10 दिनों के अन्दर पैसा आ गया। योजना को लेकर जितना कहा जा, वह कम है। एक बार फिर झारखण्ड सरकार को आभार। और विशेषकर सीएम हेमन्त भैया को बहुत-बहुत धन्यवाद देती हूँ।

### मैं बारहवीं कक्षा की छात्रा हूँ। मुझे दो-दो बार - ग्यारहवीं और बारहवीं कक्षा में सावित्रीबाई फुले किशोरी समृद्धि योजना से ₹5-5 हजार का लाभ मिला है। हेमन्त दादा को धन्यवाद, जोहार! सुशांति कुजूर, लोहरदगा



## हम सभी कृतज्ञ हैं ...

खूंदी की स्नेहा कुमारी खुश है। उसे मुख्यमंत्री मंडियां सम्मान योजना से आच्छादित किया गया है। स्नेहा कहती है कि राज्य सरकार से जो उसे सम्मान राशि प्राप्त हो रही है, वह उसके आने वाले कल में सहायक होगी। वह इस राशि को अपनी शिक्षा में व्यय करेगी। उसने बताया कि उसकी कई सहेलियों को भी इस योजना का लाभ मिला है और वे सभी सरकार की इस योजना का स्वागत करती हैं। हेमन्त सरकार ने जो सम्मान दिया है, इसके लिए हम सभी कृतज्ञ हैं। राज्य के मुख्यमंत्री के प्रयास से यह संभव हो पाया और हम जैसी लड़कियों को योजना का लाभ मिलने लगा है। स्नेहा ने बताया कि उसके स्वामें

में ₹1,000 की राशि आ गई है ऐसे ही उसके जानने वालों के स्वाते में भी राशि आई है। मुख्यमंत्री के प्रति आभार व्यक्त करते हुए उसने कहा कि इस तरह की अन्य योजनाएं भी महिलाओं को सशक्त कर रही हैं। खूंदी जिले में सखी मंडल के जरिए भी महिलाएं अपनी आजीविका के मार्ग को प्रशस्त कर रही हैं। खेती से लेकर बैंकिंग तक में खूंदी की महिलाओं की भूमिका देखी जा रही है, मुख्यमंत्री का यह प्रयास सराहनीय है। स्नेहा ने बताया वह अन्य महिलाओं और अपनी सहेलियों को इस योजना का लाभ लेने के लिए प्रेरित करेगी।

## महिलाएं बनेंगी सशक्त...



चाईबासा प्रखंड की रहने वाली आशा रानी ने कहा कि जब झारखण्ड मुख्यमंत्री मंडियां सम्मान योजना के संबंध में जाना तो उसकी खुशी का ठिकाना नहीं था। सूदूर गांव में रहने के कारण उसे ऑनलाइन आवेदन जमा करने में जब परेशानी हुई तो वह निराश हो गई, लेकिन दूसरे ही दिन मुख्यमंत्री ने जब ऑफ लाइन आवेदन लेने का आदेश दिया तो रानी पूर्ण का चेहरा खिल गया। रानी ने बताया कि इसके बाद उसने सीधे पंचायत भवन जाकर अपना आवेदन जमा कर दिया।

रानी ने कहा कि कुछ ही दिन गुजरे थे कि उसे झारखण्ड मुख्यमंत्री मंडियां सम्मान योजना के तहत ₹1,000 की सम्मान राशि बैंक खाते पर प्राप्त हुई है। वह बताती है, कहने को तो सरकार की सभी योजनाएं लोगों के रहन-सहन में बदलाव लाने के लिए चलाई जाती हैं, परंतु राज्य के मुख्यमंत्री हेमन्त सोरेन के द्वारा महिलाओं को सशक्त बनाने की सोच के तहत चलाई गई यह योजना काफी सार्थक है। इससे मिलने वाली राशि का प्रयोग बच्चों की पढ़ाई-लिखाई के साथ-साथ खुद के जीवन को सशक्त करने में संभल प्रदान करेगी। राज्य के मुख्यमंत्री को बहुत-बहुत धन्यवाद और जोहार करती हूँ यह योजना राज्य के सभी महिला को सशक्त बनाने में काफी उपयोगी सिद्ध होगी। हम सभी को हर वर्ष ₹12,000 की राशि प्राप्त होगी।

एक नजर

नव पदस्थापित तीन शिक्षिकाओं का अजप्ता ने किया स्वागत

चौपारण : अखिल झारखंड प्राथमिक शिक्षक संघ चौपारण इकाई द्वारा सोमवार को विभिन्न जिलों से चौपारण प्रखंड में नव पदस्थापित तीन शिक्षिकाओं के लिए स्वागत समारोह के लिए स्वागत समारोह का आयोजन आदर्श मध्य विद्यालय चौपारण में किया प्राथमिक विद्यालय महुदी में शकुंतला कुमारी, आदर्श मध्य विद्यालय चौपारण में सविता कुमारी, और प्राथमिक विद्यालय यवपुर में कुंती कुमारी का पदस्थापन हुआ है, ये तीन शिक्षक स्थानांतरण के द्वारा यहां पदस्थापित हुए हैं। अखिल झारखंड प्राथमिक शिक्षक संघ के अध्यक्ष कमलेश कुमार कमल एवं सचिव बदी उज्जमा के द्वारा पुष्प एवं शॉल देकर इन्हें सम्मानित किया गया कार्यक्रम की शुरुआत विजय कुमार के स्वागत गीत के द्वारा हुआ। समारोह का संचालन मध्य विद्यालय के शिक्षक राजेश राम ने किया। वरिष्ठ शिक्षक जनार्दन प्रसाद वर्मा, राकेश कुमार, डॉक्टर प्रदीप साहू, सुरेंद्र दास, उमेश सिंह ने उनका हार्दिक अभिनंदन किया। नवस्थानांतरित शिक्षिकाओं ने पुरे जोश एवं उत्साह के माहौल में सकारात्मक विचारों के साथ अखिल झारखंड प्राथमिक शिक्षक संघ अजप्ता की सदस्यता ग्रहण की। इन्होंने संगठन के साथ कदम से कदम मिलाकर चलने का प्रण लिया।

गणेश पूजा में भाजपा नेता ने महाभोग का किया वितरण



हजारीबाग : बाबूगांव स्थित स्वर्ण चेतक पूजा समिति द्वारा आयोजित गणेश पूजा महोत्सव के पावन अवसर पर भाजपा नेता डॉ. अमित सिन्हा ने महाभोग का वितरण किया। डॉ. सिन्हा ने इस अवसर पर कहा कि धार्मिक आस्था हमारे समाज की सांस्कृतिक पहचान है, और इसे बनाए रखना हमारा कर्तव्य है। विकास कार्यों के साथ-साथ हमारी धार्मिक परंपराओं को भी हमें उतनी ही श्रद्धा और सम्मान के साथ निभाना चाहिए। उन्होंने यह भी कहा कि धार्मिक पर्व हमें एकता और समर्पण का संदेश देते हैं। यह हमारी सांस्कृतिक धरोहर है और हम सभी का यह कर्तव्य है कि हम अपनी परंपराओं को जीवित रखें। उन्होंने स्थानीय लोगों के साथ समय बिताया, उनकी समस्याएं भी सुनीं। डॉ. सिन्हा ने केवल विकास कार्यों में अग्रणी हैं, बल्कि वे अपने क्षेत्र में धार्मिक और सांस्कृतिक परंपराओं का पालन करने में भी सक्रिय भूमिका निभा रहे हैं। गणेश पूजा के इस विशेष अवसर पर उनके द्वारा भक्तों के बीच महाभोग का वितरण यह दर्शाता है कि वे न केवल अपने राजनीतिक कार्यों में बल्कि समाज और संस्कृति के प्रति भी गहरे समर्पित हैं।

भाजपा प्रदेश कार्यसमिति सदस्य ने किया जनसंपर्क

हजारीबाग : भाजपा प्रदेश कार्यसमिति सदस्य उदयभान नारायण सिंह ने सदर विधानसभा क्षेत्र के मेरु एवं अमनारी पंचायतों में जनसंपर्क किया। सर्वप्रथम मेरु पहुंचने पर स्थानीय लोगों ने सिंह को माला पहना कर गर्मजोशी से स्वागत किया। उपस्थित लोगों से उदयभान नारायण सिंह ने कहा कि हम सबको मिलकर इस बार राज्य में भाजपा की सरकार बनानी है और यह तभी संभव होगा जब आप लोगों का पूर्ण साथ एवं सहयोग मिलेगा तत्पश्चात सिंह अमनारी पंचायत पहुंचे तथा शिव मंदिर प्रांगण में स्थानीय लोगों के साथ बैठक की। सिंह ने कहा कि इस क्षेत्र से उनके परिवार का पुराना नाता रहा है और वे सदैव लोगों की सेवा के लिए तत्पर रहेंगे।

सरकारी योजनाओं का लाभ आदिवासियों को मिले यह सुनिश्चित करना आवश्यक : आशा लकड़ा

प्रत्युष नवबिहार संवाददाता

हजारीबाग : राष्ट्रीय अनुसूचित जनजाति आयोग, नई दिल्ली की सदस्य डॉ आशा लकड़ा ने आज हजारीबाग जिले में संचालित बालक बालिकाओं के जनजातीय छात्रावासों का निरीक्षण किया। इस दौरान उन्होंने छात्रावासों में मिलने वाली व्यवस्था और विद्यार्थियों को दी जा रही सुविधाओं की जानकारी ली। जांच के दौरान उन्होंने नवाग्रह अवस्थित बालक छात्रावास एवं केबी महिला कॉलेज परिसर पर अवस्थित बालिका छात्रावास के कमरों, शौचालय, रसोईघर, लाइब्रेरी, बिजली, पानी आदि व्यवस्थाओं का जायजा लिया। इस दौरान उन्होंने मौके पर मौजूद छात्रों से मुलाकात की एवं



उनके अन्य समस्याओं को जाना तथा इस संबंध में लिखित आवेदन प्राप्त की। माननीय सदस्य ने छात्र छात्राओं से रूबरू होते हुए बताया कि आयोग की टीम आपके समस्याओं को सुनने तथा उनके निराकरण के लिए आई है। बाद में उन्होंने आयोग की टीम के साथ हजारीबाग समाहरणालय में जिले

भाजपा नेता हर्ष अजमेरा ने आशा लकड़ा से की शिष्टाचार मुलाकात

प्रत्युष नवबिहार संवाददाता

हजारीबाग : भाजपा नेता हर्ष अजमेरा ने सोमवार को भाजपा की राष्ट्रीय मंत्री एवं जनजातीय आयोग की सदस्य आशा लकड़ा से फूलों का गुलदस्ता भेंट कर शिष्टाचार मुलाकात किया, इस दौरान हजारीबाग आगमन पर उनका स्वागत व अभिनंदन किया। इस मुलाकात के दौरान अजमेरा ने



बल्कि उन्हें राष्ट्रीय विकास के केंद्र में ला रही हैं। अजमेरा ने आगे कहा, हमारा उद्देश्य केवल विकास नहीं, बल्कि हर जनजातीय परिवार की खुशहाली सुनिश्चित करना है। प्रधानमंत्री के नेतृत्व में केंद्र सरकार ने जो जनहितैषी योजनाएं शुरू की हैं, उनसे हर क्षेत्र में सकारात्मक बदलाव आ रहा है। जनजातीय समुदाय के उत्थान के लिए हर संभव प्रयास करता रहूंगा।

भाजपा नेता टोनी जैन ने बाबूलाल मरांडी और नेता प्रतिपक्ष से की मुलाकात

प्रत्युष नवबिहार संवाददाता

हजारीबाग : भारतीय जनता पार्टी के वरिष्ठ नेता और प्रदेश कोषाध्यक्ष टोनी जैन ने रांची में भाजपा प्रदेश अध्यक्ष बाबूलाल मरांडी और नेता प्रतिपक्ष अमर कुमार बाउरी से उनके आवास पर मुलाकात की। इस बैठक में हजारीबाग सदर विधानसभा की राजनीतिक रणनीति और संगठन के भावी कदमों पर विस्तार से चर्चा हुई। टोनी जैन, जो पिछले 20-22 वर्षों से पार्टी की सेवा में हैं, उन्होंने समीक्षात्मक रिपोर्ट एक बुक के तौर पर पेश की और अपनी गहरी प्रतिबद्धता व्यक्त करते हुए कहा कि उन्होंने हर जिम्मेदारी को पूरी निष्ठा और समर्पण के साथ निभाया है। उन्होंने संगठन को आश्चर्य प्रकृत किया कि अगर उन्हें हजारीबाग सदर विधानसभा से प्रतिनिधित्व

देशभर के 10 से 12 करोड़ आदिवासी समाज का संरक्षण का कार्य करती है। बैठक के दौरान होने शिक्षा, स्वास्थ्य, कल्याण, समाज कल्याण, सामाजिक सुरक्षा, खाद्य आपूर्ति, मनरेगा, उद्योग, जेएसएलपीएस, कौशल विकास, पशुपालन, गव्य विकास, मत्स्य, बिजली, कृषि, वन एवं पर्यावरण एवं पुलिस विभाग की विस्तार से समीक्षा की। समीक्षा के क्रम में उन्होंने सभी विभागों में संचालित केन्द्र व राज्य प्रायोजित योजनाओं में झारखंड के अनुसूचित जनजातियों के उत्थान के लिए क्या प्रभावी कदम उठाए गए हैं तथा कितनी एसटी समुदाय के लोगों को लाभान्वित किया गया है उसकी जानकारी ली। उन्होंने

बताया आदिवासी समाज अभी कई मामलों में पीछे है जिसके उन्नयन के लिए आयोग निरंतर कार्य कर रही है। आयोग सभी जिलों में भ्रमण कर आदिवासी हितों के लिए किए जा रहे कार्यों की समीक्षा करती है। राज्य व केंद्र के द्वारा संचालित योजनाओं का समुचित लाभ आदिवासियों को मिले यह सुनिश्चित करना आवश्यक है। जिलास्तर पर संचालित आदिवासी छात्रावास के भी सुचारू व सभी आवश्यक सुविधाएं उपलब्ध हो सुनिश्चित होना चाहिए। आदिवासी समाज के लोगों की न्याय व उन्होंने हितों की रक्षा के लिए पुलिसिया कार्रवाई भी सुगम व बिना भेदभाव के हो यह भी सुनिश्चित होना चाहिए।



का अवसर मिलता है, तो वे पार्टी और जनता दोनों की अपेक्षाओं पर पूरी तरह से खरा उतरेंगे। उनका कहना था कि भाजपा एक संगठनात्मक पार्टी है, जहां हर कार्यकर्ता का सम्मान किया जाता है, और वे संगठन के निर्देशों के अनुसार काम करने में विश्वास रखते हैं। प्रदेश अध्यक्ष बाबूलाल मरांडी और नेता प्रतिपक्ष अमर कुमार बाउरी ने टोनी जैन के योगदान की सराहना की और उन्हें भरोसा

दिलाया कि पार्टी हमेशा अपने मेहनती और निष्ठावान कार्यकर्ताओं का सम्मान करती है। उन्होंने कहा कि पार्टी के फैसले कार्यकर्ताओं और संगठन दोनों के हित में होंगे, और हजारीबाग सदर विधानसभा में पार्टी को मजबूत करने की दिशा में ठोस कदम उठाए जाएंगे। भाजपा की ताकत उसके समर्पित कार्यकर्ताओं में निहित है, और हजारीबाग सदर विधानसभा में 2024 की जीत निश्चित है।

डॉ. नजीर अंसारी ने विष्णुगढ़ प्रखंड के नरकी पंचायत के नरकी खुर्द का किया दौरा

प्रत्युष नवबिहार संवाददाता

हजारीबाग : मांडू विधानसभा के भावी विधायक प्रत्याशी डॉ. नजीर अंसारी ने विष्णुगढ़ प्रखंड के नरकी पंचायत अंतर्गत नरकी खुर्द गांव का दौरा किया। जैला पर गांव के लोगों के द्वारा एक बैठक की गई जिसकी अध्यक्षता मो. सैफ अंसारी ने की। गाँव के लोगों ने अपनी गंभीर समस्याओं को साझा किया जो इस प्रकार है- ग्रामीणों में पीने का पानी की बहुत बड़ी समस्या जो की आज भी वहां के लोग चूने और नाला का पानी पी रहे हैं, बच्चों के लिए उच्च शिक्षा का कोई व्यवस्था नहीं है, रोड की जर्जर स्थिति है, कई लोगों का आवास तक नहीं मिल पाया है, बहुत से लोगों को राशन कार्ड तक नहीं बना है, बिजली की बहुत बड़ी समस्या है, वृद्धा पेंशन नहीं मिल रहा है, स्वास्थ्य का मुद्दा महत्वपूर्ण है वहां



के लोगों के लिए आस-पास में कोई अस्पताल नहीं है। डॉ. नजीर अंसारी ने ध्यानपूर्वक सभी की बातें सुनीं और इन समस्याओं के समाधान के लिए एक व्यापक योजना बनाने का आश्वासन दिया और कहा की जल्द से जल्द इन समस्याओं का समाधान किया जाएगा। डॉ. नजीर अंसारी ने कहा की यह देखकर अत्यंत प्रसन्नता हुई कि नरकी खुर्द के लोगों में बलवाद् का समग्र विकास, जहाँ हर नागरिक को बुनियादी सुविधाएँ मिलें और उनके जीवन स्तर में सुधार हो।

बरही के तालाब में डूबने से 60 वर्षीय महिला की मौत, शव बरामद

प्रत्युष नवबिहार संवाददाता

बरही : बरही थाना क्षेत्र के पंचमाधव पंचायत अंतर्गत बसरिया गांव में शनिवार शाम तालाब में डूबने से 60 वर्षीय दिलिया देवी की मौत हो गई। मृतिका प्रयाग महतो की पत्नी थीं। परिजनों ने बताया कि शनिवार शाम करीब 4 बजे दिलिया देवी कपड़े धोने के लिए गांव के तालाब पर गई थीं, लेकिन वापस नहीं लौटीं। परिवार ने उनकी काफी खोजबीन की, लेकिन कोई सुराग नहीं मिला, जिसके बाद गुमशुदगी की सूचना बरही थाना में दी गई। परिवार की सुबह खोजबीन के दौरान मृतिका की चप्पल और डब्बा तालाब के मेढ़ पर मिले। इसके बाद पुलिस और ग्रामीणों ने मिलकर तलाश शुरू की। सोमवार सुबह करीब 7:30 बजे ग्रामीणों के अथक प्रयासों से दिलिया देवी का शव गांव के डैम से बरामद किया गया। घटना की सूचना मिलते ही



अंचलाधिकारी रामनारायण खलको और बरही पुलिस मौके पर पहुंचे और शव को पोस्टमार्टम के लिए बरही अनुसंडलीय अस्पताल भेज दिया। मौके पर मौजूद मुखिया प्रतिनिधि हरेन्द्र गोप और पंचस प्रतिनिधि कामेश्वर दास ने घटना पर गहरा दुख व्यक्त करते हुए आपदा राहत के तहत परिजनों को मुआवजा देने की मांग की। घटनास्थल पर प्रकाश ठाकुर, बिरेंद्र यादव, धीरेंद्र यादव, बिरेंद्र सिंह, राजेश यादव, विशेषकर यादव, महेश यादव, कैलाश यादव, उदेश्वर यादव, नरेश यादव, सिकेन्द्र प्रजापति, विकास यादव समेत सैकड़ों लोग उपस्थित थे।

भाजपा नेत्री शेफाली गुप्ता के नेतृत्व में करमा महोत्सव का हुआ भव्य समापन

प्रत्युष नवबिहार संवाददाता

हजारीबाग : सदर विधानसभा के कर्जन ग्राउंड में भाजपा की प्रमुख नेत्री शेफाली गुप्ता के नेतृत्व में आज भव्य करमा महोत्सव का आयोजन सफलतापूर्वक संपन्न हुआ। महोत्सव का उद्देश्य झारखंड की समृद्ध सांस्कृतिक धरोहर को जीवंत रखना और इसे बढ़ावा देना था। इस आयोजन में विभिन्न सांस्कृतिक और रचनात्मक प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया, जिसने हजारीबाग के स्थानीय लोगों और कलाकारों को अपनी कला और संस्कृति प्रदर्शित करने का मंच प्रदान किया। महोत्सव को मुख्य आकर्षणों में साहित्यिक नृत्य प्रतियोगिता रही, जिसमें 89 से अधिक टीमों ने हिस्सा लिया। इस



प्रतियोगिता में पारंपरिक झारखंडी नृत्य की अद्भुत प्रदर्शियां देखने को मिलीं, जो राज्य की सांस्कृतिक धरोहर को उजागर करती हैं। प्रतियोगिता में प्रथम स्थान पर आने वाली टीम आदिवासी छात्रावास को मुख्य आकर्षणों में साहित्यिक नृत्य प्रतियोगिता रही, जिसमें 89 से अधिक टीमों ने हिस्सा लिया। इस

प्रतियोगिता का आयोजन भी किया गया, जिसमें युवा प्रतिभाओं ने अपनी रचनात्मकता और तकनीकी कौशल का प्रदर्शन किया। इस प्रतियोगिता में प्रथम, द्वितीय, और तृतीय स्थान पर आने वाले युवाओं की क्रमशः 3,100, 2,100, और 1,100 के पुरस्कार दिए गए। संगीत प्रेमियों के लिए महोत्सव में वादन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसमें भाग लेने वाले कलाकारों ने अपने वादन कौशल से दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया। इस प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार 3,100 और द्वितीय पुरस्कार 2,100 रखा गया था। इस भव्य आयोजन को मुख्य अतिथि हजारीबाग सांसद मनीष जायसवाल ने शेफाली गुप्ता के

प्रयासों की सराहना करते हुए कहा, झारखंड की समृद्ध सांस्कृतिक धरोहर को संजोने और प्रचारित करने के लिए इस प्रकार के आयोजनों की अत्यंत आवश्यकता है। मैं शेफाली गुप्ता जी को इस भव्य आयोजन के लिए धन्यवाद देता हूँ और उनके इस प्रयास की प्रशंसा करता हूँ। इस अवसर पर कार्यक्रम में स्थानीय गणमान्य व्यक्तियों की भी उपस्थिति रही, जिनमें संतोष कुमार गुप्ता (रोनियार वैश्य समाज संरक्षक), पंकज यादव, दिलीप कुमार गुप्ता, और बसंत राणा (पूर्व मंडल अध्यक्ष) सहित अन्य प्रमुख व्यक्तियों शामिल थे। सभी गणमान्य व्यक्तियों का शेफाली गुप्ता द्वारा अंगवस्त्र देकर स्वागत किया गया।

संक्षिप्त खबरें

प्रदेश कांग्रेस महासचिव विनोद कुशवाहा का लगातार चल रहा जनसंपर्क अभियान



हजारीबाग : झारखंड प्रदेश कांग्रेस कमेटी के प्रदेश महासचिव विनोद कुमार कुशवाहा का संगठन के विस्तारिकरण और सुदृढीकरण को लेकर जनसंपर्क लगातार जारी है। सोमवार को कटकमसांडी प्रखंड अंतर्गत गदोखर, बलियंद और कटकम दाग प्रखंड अंतर्गत सुल्ताना, बेन्दी और पकरा का तृफानी दौरा कर जनसंपर्क अभियान चलाया और कांग्रेस पार्टी की नीति एवं सिद्धांतों से सभ्य को अवगत कराया इस दौरान श्री कुशवाहा लोगों की जन समस्याओं से रूबरू भी हुए और हर संभव इन जन समस्याओं का निराकरण का भरोसा भी जताया। ऐसे में बताना अहम यह होगा कि झारखंड प्रदेश कांग्रेस कमेटी के महासचिव विनोद कुमार कुशवाहा का हजारीबाग सदर विधानसभा क्षेत्र में तृफानी जनसंपर्क अभियान जारी है। जनसंपर्क के दौरान कांग्रेस पार्टी की नीति एवं सिद्धांतों को जन जन तक पहुंचाने का काम कर रहे हैं साथ ही झारखंड सरकार की जनकल्याणकारी योजनाओं का लाभ सुदुरवर्ती क्षेत्र के लोगों तक पहुंचाने को लेकर संकल्पित विनोद कुशवाहा लगातार तृफानी दौरा कर जनकल्याणकारी योजनाओं की जानकारी से सुदुरवर्ती क्षेत्र के लोगों को अवगत करा रहे हैं ताकि अंतिम पायदान तक के लोगों को झारखंड सरकार की जनकल्याणकारी योजनाओं का लाभ पहुंचाया जा सके। जनसंपर्क के दौरान कुशवाहा ने कहा कि नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी के द्वारा संसद में लगातार देश के लोगों की आवाज बुलंद करने का काम किया जा रहा है।

शिवाडीह खेल मैदान में नमो फुटबॉल प्रतियोगिता का हुआ शुभारंभ



बड़कागांव : हजारीबाग लोकसभा क्षेत्र के विभिन्न इलाके में झारखंड के सबसे बड़े और ख्यातिपूर्ण टूर्नामेंट नमो : फुटबॉल टूर्नामेंट कराई जा रही है, जिसमें हजारीबाग लोकसभा क्षेत्र के सांसद मनीष जायसवाल के सौजन्य से सांसद खेल महोत्सव- 2024 के तहत आयोजित नमो : फुटबॉल टूर्नामेंट का भव्य आगाज बड़कागांव प्रखंड के ग्राम शिवाडीह स्थित खेल मैदान में हुआ। जिसका उद्घाटन मुख्य अतिथि बड़कागांव विधानसभा क्षेत्र के पूर्व विधायक लोकनाथ महतो व विशिष्ट अतिथि प्रदेश कार्य समिति सदस्य अनिल मिश्रा ने फुटबॉल को किक मारकर दिया गया। उद्घाटन मैच कोशलंग लमकी टांड एवं पसेरीया फुटबॉल टीम के बीच खेती गई। दोनों टीमों के बीच रोमांचक खेल खेला गया। टूर्नामेंट में बड़कागांव प्रखंड क्षेत्र के कुल 44 टीमों ने भाग लिया है। मैच में कॉमेंट्री पंचायत समिति सदस्य कुशा राम ने किया, रेफरी की भूमिका में रेफरी बालेश खान, श्रीकांत जगपाला और धनंजय प्रसाद धीरज वीरेंद्र राम ने निभाया। मौके पर लोकनाथ महतो ने कहा कि खेल से एक दूसरे गांव के लोगों को जोड़ने का काम करता है। जान पहचान बढ़ती है। बड़का गांव के खिलाड़ियों में प्रतिभा की कमी नहीं है इन्हें बेहतर प्रशिक्षण मिले तो यह भी राष्ट्रीय स्तर पर नाम रोशन कर सकते हैं। नमो फुटबॉल प्रतियोगिता के अध्यक्ष रंजीत कुमार ने कहा कि बड़का गांव में दूसरी बार नमो फुटबॉल प्रतियोगिता का आयोजन किया जा रहा है। विजेता टीम को ट्रॉफी के साथ नगद 25000 एवं उपविजेता को ट्रॉफी के साथ 15000 नगद राशि दिया जाएगा। मौके पर मुख्य रूप से पूर्व विधायक लोकनाथ महतो, फुटबॉल टूर्नामेंट के अध्यक्ष सह बड़कागांव मुखिया संघ अध्यक्ष रंजीत कुमार मेहता, अनिल मिश्रा, सत्येंद्र सिंह, उप प्रमुख बचनदेव कुमार, मंडल अध्यक्ष खेमलाल महतो, आदित्य साहू सोनी, टुकेश्वर प्रसाद, जुगनू सिंह, भीखन महतो, जय नारायण प्रसाद, भवानी प्रसाद दांगी, शिवू मेहता, उदय मेहता, मनीष पांडे, विजय यादव, मेवालाल नाग, लालदेव महतो, महेंद्र महतो, इंद्रभूषण, बलेश साव, अशोक साव, किशोर राणा, नरसिंह प्रसाद, विजय यादव, के अलावा भारी संख्या में खेल प्रेमी उपस्थित थे।

अज्ञात चोरों ने बादीखरना में मनोज यादव के घर की चोरी

विष्णुगढ़ : प्रखंड के बेड़ा हरियारा पंचायत बादीखरना के मनोज यादव पिता अर्जुन यादव के घर में बीते रात अज्ञात चोरों ने लगभग 50 हजार नगद और 85 हजार के जेवरत सहित अन्य सामान चोरी होने की बात कही है। परिजनों ने बताया कि हमलोग रात में सो रहे थे जब सुबह उठकर देखा तो घर का दरवाजा खुला हुआ था और घर में सारे सामान घर के बाहर इधर-उधर बिखरे पड़े थे। तो हमें चोरी होने की आशंका लगी। तब हमलोगों ने हो लाहल करेने लगे और अपने घर में रखे सामान को खोजने लगे। तब पता चला कि घर में बीते रात अज्ञात चोरों ने चोरी करके कई सामान ले गया है। उन्होंने बताया कि मेरे घर के पीछे बारी है और बारी में मकई लगा हुआ है। चोर इसका फायदा उठाते हुए मेरे घर के पीछे से छत चढ़ गया और घर के अन्दर चला गया और कमरे में रखा 50 हजार नगद और 85 हजार के जेवर जो लड़की की शादी के लिए बनाकर जेवर रखा था। जिसमें लड़की की शादी नवंबर में होनी है। इसी बीच अज्ञात चोरों ने मेरे घर में रखे सामान और जेवर और नगद लेकर फरार हो गए। उन्होंने यह भी बताया कि पिछले कुछ महीने पहले मेरे घर से सात भैंसों की भी चोरी हो गई है। जो अभी तक नहीं मिला है। इसकी जानकारी स्थानीय पुलिस प्रशासन को मिलते ही विष्णुगढ़ पुलिस घटना स्थल पर पहुंची और खोजबीन में जुट गई।

भाजपा प्रदेश कार्यकारिणी सदस्य गणेश यादव ने केंद्रीय मंत्री अन्नपूर्णा देवी से की मुलाकात

बरही : भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश कार्यकारिणी सदस्य सह जीप प्रतिनिधि गणेश यादव ने केंद्रीय मंत्री अन्नपूर्णा देवी से मुलाकात की। इस मुलाकात के दौरान गणेश यादव ने मंत्री अन्नपूर्णा देवी का बूके देकर स्वागत किया और उनका सम्मान किया। इस अवसर पर दोनों नेताओं के बीच आगामी विधानसभा चुनाव



को लेकर महत्वपूर्ण चर्चा हुई। गणेश यादव, जो खुद बरही क्षेत्र में भाजपा के मजबूत नेता माने जाते हैं, उन्होंने मंत्री के साथ आगामी चुनावों की रणनीति और स्थानीय राजनीतिक परिदृश्य पर बातचीत की। बैठक के दौरान केंद्रीय मंत्री, जनता की समस्याओं और विकास कार्यों पर भी विचार-विमर्श हुआ। केंद्रीय मंत्री अन्नपूर्णा देवी ने भी चुनावी तैयारियों को लेकर अपने सुझाव दिए और पार्टी की मजबूती के लिए संगठनात्मक ढांचे को और मजबूत करने पर जोर दिया।



# प्रत्युष नवबिहार

रांची संस्करण

www.tezrafterlive.com  
Email-navbiharjh@gmail.com

रांची, पटना और दिल्ली से प्रकाशित

रांची • मंगलवार • 10.09.2024 • वर्ष : 15 • अंक : 52 • पृष्ठ : 12 • आमंत्रण मूल्य : 2 रुपये

## आरएसएस के विपरीत विचारों की बहुलता को मानती है कांग्रेस : राहुल गांधी

एजेन्सी  
डलास : कांग्रेस नेता और लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी ने सोमवार को राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) पर निशाना साधा और कहा कि जहां उनका मानना है कि भारत एक विचार है, वहीं दूसरी ओर कांग्रेस का मानना है कि भारत विचारों की बहुलता वाला देश है। डलास में भारतीय प्रवासियों को संबोधित करते हुए श्री गांधी ने कहा, हमारा मानना है कि हर किसी को सपने देखने की अनुमति दी जानी चाहिए और उनकी जाति, भाषा, धर्म, परंपरा या इतिहास की परवाह किए बिना उन्हें भाग लेने की अनुमति एवं स्थान दिया जाना चाहिए। उन्होंने इस बात का जिक्र किया कि

2024 का आम चुनाव भाजपा के लिए एक बड़ा झटका था साथ ही कहा, हमने देखा कि चुनाव परिणाम के कुछ ही मिनटों के भीतर, भारत में कोई भी भाजपा या भारत के प्रधान मंत्री से नहीं डरता था। इसलिए ये बहुत बड़ी उपलब्धियां हैं, राहुल गांधी या कांग्रेस पार्टी की नहीं। उन्होंने आगे कहा, ये भारत के लोगों की बहुत बड़ी उपलब्धियां हैं जिन्होंने लोकतंत्र को महसूस किया, भारत के लोगों की जिन्होंने महसूस किया कि हम अपने संविधान पर हमले को स्वीकार नहीं करेंगे। हम अपने धर्म, अपने राज्य पर हमले को स्वीकार नहीं करते जा रहे हैं। श्री गांधी ने कहा कि चुनाव में लड़ाई उसी समय साफ हो गयी थी, जब भारत के लाखों लोगों ने स्पष्ट रूप

से समझ लिया कि प्रधानमंत्री मोदी संविधान पर हमला कर रहे हैं। रायबरेली के सांसद ने कहा, मैंने जो एक-एक शब्द आपसे कहा है, वह संविधान में है। आधुनिक भारत की नींव संविधान है। चुनाव में लोगों ने जो स्पष्ट रूप से समझा और मैंने देखा कि जब मैं संविधान उठाता था, तब लोगों ने समझा कि मैं क्या कह रहा था। वे कह रहे थे कि भाजपा हमारी परंपरा पर हमला कर रही है, हमारी भाषा पर हमला कर रही है, हमारे राज्यों पर हमला कर रही है, हमारे इतिहास पर हमला कर रही है। श्री गांधी ने कहा संसद में मेरे पहले भाषण में, जब मैंने 'अभय मुद्रा' का वर्णन किया तो आपने देखा होगा कि यह निर्भयता का प्रतीक है और यह



हर एक भारतीय धर्म में मौजूद है। जब मैं यह कह रहा था, तो भाजपा इसे स्वीकार नहीं कर सकी। वे नहीं समझते हैं, और हम उन्हें समझाने जा रहे हैं। भारतीय प्रवासियों की सराहना करते हुए श्री गांधी ने कहा, आप वे लोग हैं जो भारत से आए हैं, और जिन

मूल्यों का मैं वर्णन कर रहा हूँ - संविधान के मूल्य, सम्मान के मूल्य, विनम्रता के मूल्य - आप अपने दिलों में रखते हैं, वे आपके अंदर रक्त में हैं। जब आप इस देश में आए, तो आप अहंकार के साथ नहीं, बल्कि विनम्रता के साथ आए। आप घृणा के साथ नहीं, बल्कि प्यार और स्नेह

के साथ आए, यह सोचकर कि 'हम अमेरिका आए हैं 'कौन हैं ये लोग? नहीं, आप सम्मान के साथ आए हैं। आपके दिलों में सम्मान, प्यार और विनम्रता है। उन्होंने उन्हें ऐसे राजदूत करार दिया जो इन दो संघों - संयुक्त राज्य अमेरिका और राज्यों के संघ के बीच एक सेतु है, जैसा कि भारत के संविधान में लिखा है। श्री गांधी अमेरिका की तीन दिवसीय यात्रा पर हैं। कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने टेक्सास के डलास में कहा कि भारत में विपक्ष जनता की आवाज है। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि इसका मुख्य ध्यान जनता के हितों को सावधानीपूर्वक और संवेदनशीलता से समझने के बाद उनसे संबंधित मुद्दों को उठाना है।

राहुल गांधी ने कहा कि सुबह सुबह संसद जाना युद्ध जैसा होता है। बता दें कि लोकसभा में विपक्ष के नेता गांधी चार दिन की अनौपचारिक यात्रा पर अमेरिका गए हैं। राहुल गांधी ने कहा, विपक्ष मूलतः लोगों की आवाज है, घटनाओं का एक पूरा क्रम चलता रहता है, लेकिन आप आमतौर पर यह सोचते हैं कि मैं भारत के लोगों के मुद्दे कहां और कैसे उठा सकता हूँ। उन्होंने कहा, आप व्यक्तिगत नजरिए से सोच रहे हैं, और समूह, उद्योग, किसान के नजरिए से भी सोच रहे हैं, महत्वपूर्ण बात यह है कि आप इसे संवेदनशीलता के साथ और ध्यानपूर्वक सुनने और समझने के बाद करें। संसदीय कार्यवाही के बारे में बात करते हुए गांधी ने इसे विचारों

और शब्दों का सुखद युद्ध बताया। उन्होंने कहा, आप सुबह संसद जाते हैं, तो यह युद्ध जैसा होता है, आप अंदर जाते हैं और फिर लड़ते हैं, यह एक सुखद युद्ध है, कभी-कभी यह काफी मजेदार भी होता है, यह बुरा भी हो सकता है, लेकिन यह विचारों और शब्दों का युद्ध है। उन्होंने कहा, जब आप राजनीति में नए होते हैं, तो आप किसी मुद्दे को देखते हैं, आपको लगता है कि यह एक मुद्दा है, लेकिन जब आप विस्तार से देखते हैं, तो आपको पता चलता है कि इसमें बारीकियां और जटिलताएं हैं, इसलिए उस बारीकियों को समझना और उसके अनुसार अपने दिन की योजना बनाना, आमतौर पर इसी तरह काम करता है।

### एक नजर टीएसपीसी एरिया कमांडर मुनेश्वर गंडू ने किया सरेंडर

रांची : प्रतिबंधित नक्सली संगठन तृतीय सम्मेलन प्रस्तुती कमेटी (टीएसपीसी) के एरिया कमांडर मुनेश्वर गंडू उर्फ विक्रम ने रांची पुलिस के समक्ष सोमवार को आत्मसमर्पण किया है। रांची एसएफपी चंदन सिन्हा और सीआरपीएफ के अधिकारियों के समक्ष मुनेश्वर गंडू ने एसएफपी कार्यालय में आत्मसमर्पण किया। मुनेश्वर गंडू मूल रूप से हजारीबाग जिले के केरेडारी थाना क्षेत्र के डमरू गांव का रहने वाला है। इसके खिलाफ रांची, हजारीबाग और चतरा जिले के अलग-अलग थाना में कुल 26 मामले दर्ज हैं। मुनेश्वर झारखंड सरकार की आत्मसमर्पण नीति से प्रभावित होकर पुलिस के समक्ष आत्मसमर्पण किया। वह कई आपराधिक घटनाओं में शामिल रहा है। मुनेश्वर ने बताया कि वह संगठन से 2015 में जुड़ा था। वह तीसरा कक्षा तक पढ़ा है। गांव के आसपास जंगली क्षेत्र होने के कारण टीएसपीसी संगठन के नक्सलियों का आना-जाना लगा रहता था। उसी समय इनकी जान पहचान नक्सली सागर गंडू तथा जगु उर्फ जागेश्वर गंडू, किशुन गंडू, रामेश्वर महतो उर्फ पहाड़ी जी एवं उनके दस्ता सदस्यों से हुई। किशुन गंडू के कहने पर टीएसपीसी संगठन में शामिल हुआ। वर्ष 2019 में जौनल कमाण्डर जगु उर्फ जागेश्वर गंडू पुलिस मुठभेड़ में मारा गया। उसके बाद सबजोनल कमाण्डर रामेश्वर महतो उर्फ पहाड़ी को कमाण्डर बनाया गया।

## 25 दिनों में 50 लाख महिलाओं के खाते में भेजी गईं मईयां सम्मान की राशि : हेमन्त सोरेन

प्रत्युष नवबिहार संवाददाता  
रांची : मुख्यमंत्री हेमन्त सोरेन ने कहा कि पूर्व की सरकार ने यहाँ के अधिकतर पात्र लोगों को पेंशन योजना से वंचित रखा। पहले गांव के कुछ चुनिंदा बुजुर्गों, दिव्यांगों एवं विधवा माता-बहनों को ही पेंशन की राशि मिल पाती थी, लेकिन अब आपकी सरकार ने ऐसा कानून बना दिया कि अब गांव में जितने भी वृद्धजन हैं सभी को पेंशन प्राप्त हो रहा है। आज हर एक दिव्यांगजन एवं विधवा माता-बहनों सहित पात्र सभी लोगों को सर्वजन पेंशन योजना के तहत पेंशन की राशि निर्धारित समय पर मिल रही है। परिणाम यह है कि अब सभी पात्र लोगों को सामाजिक सुरक्षा के अंतर्गत पेंशन योजना से आच्छादित किया जा चुका है। मुख्यमंत्री ने कहा कि आज राज्य में उनकी सरकार किसानों के कृषि ऋण को माफ करने का काम किया है, गरीबों का बकाया बिजली बिल माफ हो रहा है, बिजली उपभोक्ताओं को 200 यूनिट बिजली मुफ्त मिल रही है। बच्चों के पढ़ने के लिए निजी स्कूल के तर्ज पर स्कूलों का निर्माण किया गया। राज्य में बच्चों के उज्ज्वल भविष्य को ध्यान में रखते हुए मुख्यमंत्री उल्कृष्ट विद्यालय स्थापित किए जा रहे हैं। आज उनकी सरकार गरीब, आदिवासी, मूलवासी, दलित, शोषित, पिछड़े, अल्पसंख्यक के बच्चों-बच्चियों को



मुख्यमंत्री मईयां सम्मान योजना कार्यक्रम में भाग लेने पहुंचे हेमन्त व कल्पना, मंच पर मंत्रियों के साथ सीएम

गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने हेतु प्रतिबद्धता के साथ कार्य कर रही है। गरीब के होनहार बच्चे विदेश में शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। महिलाओं का सशक्तिकरण सुनिश्चित हुआ है। आज राज्य सरकार गांव-देहात से चल रही है। उक्त बातें मुख्यमंत्री हेमन्त सोरेन ने आज गिरिडीह जिला के गाण्डेय प्रखंड अंतर्गत कैलुडीह मैदान में आयोजित 'आपकी योजना-आपकी सरकार-आपके द्वार' कार्यक्रम में अपने सम्बोधन में कही।

आंगनवाड़ी सहायिका, सेविका, रसोईया, पुलिसकर्मी, सहायक पुलिसकर्मी, पारा शिक्षक, जलसहिधा सहित कई विभिन्न सरकारी विभागों के कर्मचारियों के समस्याओं को सुलझाते हुए कुछ न कुछ लाभ देने का प्रयास किया है। मुख्यमंत्री ने कहा कि राज्य सरकार द्वारा कई ऐसे निर्णय और राज्याहित के कार्य किए गए हैं जो देश में पहली बार हुआ है। आज झारखण्ड में किए गए कार्यों का अनुकरण दूसरे राज्य कर रहे हैं। मुख्यमंत्री ने कहा कि राज्य के महिलाओं को उनकी सरकार सम्मान दे रही है। पूर्व की सरकारों ने राज्य की महिलाओं के साथ न्याय करने का काम नहीं किया था। हमारी सरकार ने यहाँ की



मुख्यमंत्री मईयां सम्मान योजना कार्यक्रम में भाग लेने पहुंचे हेमन्त व कल्पना, मंच पर मंत्रियों के साथ सीएम

महिलाओं के चेहरे पर मुस्कान लाने का काम कर दिखाया है। मुख्यमंत्री ने कहा कि उनकी सरकार राज्य की नारी शक्ति को उन्का हक-अधिकार दे रही है। मुख्यमंत्री ने कहा कि बढ़ती महंगाई के बावजूद उनकी सरकार ने राज्य के गरीब परिवारों को राहत देने का काम किया है। सरकार की भावी योजनाओं को गांव-गांव, घर-घर तक पहुंचाया गया है ताकि खुशहाल झारखंड की परिकल्पना को पूरा किया जा सके।

बेटियां बोझ नहीं, बेटियों को शिक्षित कर बनाएं मजबूत  
मुख्यमंत्री हेमन्त सोरेन ने कहा कि राज्य की आने वाली पीढ़ी के लिए अच्छी शिक्षा व्यवस्था पर फोकस करते हुए सावित्रीबाई फुले समृद्धि योजना एवं गुरुजी क्रेडिट कार्ड जैसी योजनाओं को संचालित किया जा रहा है। मुख्यमंत्री ने कहा कि अब बेटियां बोझ नहीं हैं बल्कि आप सभी से निवेदन है कि आप अपनी बेटियों को उच्च शिक्षा जरूर दिलाएं। अब राज्य की बेटियों की पढ़ाई-लिखाई, शादी-विवाह सहित सभी चीजों में राज्य सरकार आपको मदद करेगी। गुरुजी स्टूटेंट क्रेडिट कार्ड के जरिए 15 लाख रुपए तक का शिक्षा ऋण बैंक द्वारा दिया जाएगा। आपको इसके बदले बैंक के पास कोई गारंटी रखने की जरूरत नहीं है राज्य सरकार आपको गारंटी बन रही है। मुख्यमंत्री हेमन्त सोरेन ने कहा कि राज्य के सभी आदिवासी एवं

अल्पसंख्यक वर्ग के बच्चों के छात्रावासों में मुफ्त भोजन की व्यवस्था राज्य सरकार कर रही है ताकि बच्चे अपनी पढ़ाई पर ज्यादा ध्यान दे सकें। मुख्यमंत्री ने कहा कि पहले ग्रामीणों के बीच कृषि कार्य के लिए सिर्फ ट्रैक्टर और हल प्रदान की जाती थी लेकिन हमारी सरकार ने ट्रैक्टर के साथ-साथ स्कार्पियो, बोलरो, बस ऑटो सहित कई गाड़ियां ग्रामीण बेरोजगार लोगों को उपलब्ध करा रही है ताकि अधिक से अधिक लोग लोग अपना स्वरोजगार से जुड़ सकें। पहले राज्य के किसान सिर्फ धान, मकई, और गेहूँ की खेती पर निर्भर रहते थे लेकिन राज्य सरकार द्वारा खेती-कृषि की वैकल्पिक व्यवस्था पर भी फोकस किया गया है। मुख्यमंत्री ने कहा कि उनकी सरकार ने बिरसा हरित ग्राम योजना, दीदी बाड़ी योजना, दीदी बगिया योजना सहित कई योजनाओं का लाभ किसान एवं गरीब वर्ग के लोगों को देने का काम किया है। मुख्यमंत्री ने कहा कि अब राज्य में वनपट्टा का वितरण डिसमिल में नहीं बल्कि एकड़ में किया जा रहा है ताकि आप सरकारी जमीन का मालिक बन सकें।

50 लाख से अधिक महिलाओं को मिल रहा झारखण्ड मुख्यमंत्री मईयां सम्मान योजना का लाभ  
मुख्यमंत्री ने कहा कि गिरिडीह की चार लाख महिलाओं को झारखण्ड मुख्यमंत्री मईयां सम्मान योजना का लाभ मिला है। अब 18 से 20 वर्ष की बेटियों को भी इस योजना का लाभ मिलेगा। यह योजना लगातार चलने वाली योजना है। मुख्यमंत्री ने कहा कि राज्य की आधी आबादी को हर क्षेत्र में मजबूती के साथ आगे बढ़ाना राज्य सरकार की प्राथमिकता रही है। राज्य के विकास में यहाँ की महिलाओं की भूमिका महत्वपूर्ण है। हमारी सरकार हर हाल में यह सुनिश्चित करने पर जोर लगा रही है कि राज्य की महिलाएं हर एक क्षेत्र में कदम से कदम मिलाकर राज्य सरकार के साथ चलते हुए झारखंड को नई दिशा देने में सहायक बनेंगी। मुख्यमंत्री ने कहा कि राज्य में 50 लाख से अधिक महिलाओं को झारखण्ड मुख्यमंत्री मईयां सम्मान योजना का लाभ पहुंचाया जा रहा है। इस अवसर पर मंत्री सत्यानन्द भोक्ता, मंत्री बेबी देवी, मंत्री इरफान अंसारी, राज्यसभा सांसद डॉ. सरफराज अहमद, विधायक मथुरा प्रसाद महतो, विधायक सुदिव्य कुमार सोनु, विधायक कल्पना सोरेन, पूर्व विधायक निजामुद्दीन अंसारी तथा गिरिडीह एवं धनबाद जिले के उपायुक्त तथा वरीय पुलिस अधीक्षक, पुलिस अधीक्षक समेत अन्य पदाधिकारी मौजूद थे।

## कोलकाता दुष्कर्म-हत्या : सुप्रीम कोर्ट ने सीबीआई से मांगी ताजा रिपोर्ट, डॉक्टरों को काम पर लौटने को कहा

एजेन्सी  
नयी दिल्ली : कोलकाता महिला ट्रेनी डॉक्टर के दुष्कर्म और हत्या मामले में सोमवार को देश की सर्वोच्च अदालत ने सुनवाई की। एक रिपोर्ट के मुताबिक, सुप्रीम कोर्ट ने इस मामले में अब सीबीआई से ताजा स्टेटस रिपोर्ट मांगी है और मामले की अगली सुनवाई 17 सितंबर को निर्धारित की है। मालूम हो कि सुप्रीम कोर्ट ने इस मामले में स्वतः सज्ञान लिया था और इसकी सुनवाई चीफ जस्टिस ऑफ इंडिया डीवाइ चंद्रचूड़ की अध्यक्षता वाली पीठ कर रही है। इसमें सीजेआई के अलावा जस्टिस जेबी पारदीवाला और जस्टिस मनोज मिश्रा भी शामिल हैं। सोमवार को सुनवाई के दौरान बेंच के सामने पश्चिम बंगाल सरकार के वकील कपिल सिब्बल और



सीबीआई की ओर से सॉलिसिटर जनरल तुषार मेहता ने स्टेटस रिपोर्ट पेश की, जिसके बाद अदालत ने उनसे कई सवाल पूछे। इस दौरान बंगाल सरकार ने कोर्ट को बताया कि घटना के खिलाफ चिकित्सकों की हड़ताल के कारण राज्य में 23 लोगों की मौत हो चुकी है। स्वास्थ्य प्रणाली को पंगु बन गई है। इस पर अदालत ने डॉक्टरों को

### ममता ने आरजी कर के डॉक्टरों से की काम पर लौटने की अपील

कोलकाता : पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने आरजी कर कांड को लेकर आंदोलनरत डॉक्टरों से अपील की है कि वे काम पर लौट आएँ और अपनी मांगों को लेकर बातचीत के लिए आगे आएँ। उन्होंने कहा कि जो भी आंदोलन हुआ है, वह बिना अनुमति के हुआ है। सुप्रीम कोर्ट ने भी डॉक्टरों से काम पर लौटने का अनुरोध किया है। मैं भी डॉक्टरों से अपील करूंगी कि कृपया काम पर लौटें। अगर आपको कुछ कहना है, तो आप पांच-10 लोगों का प्रतिनिधिमंडल लेकर आएँ, हम बात कर सकते हैं। मुख्यमंत्री ने बताया कि कोलकाता के पुलिस आयुक्त विनीत गोयल कई बार उनके पास इस्तीफा देने आए थे, आखिरी बार सात दिन पहले आए थे।

ड्यूटी पर लौटने का निर्देश दिया था। रेंजिडेंट डॉक्टरों के संगठन की ओर से सीनियर एडवोकेट गीता लूथरा ने कहा कि डॉक्टरों को धमकाया जा रहा है। डॉक्टर अस्पतालों के बाहर स्वैच्छिक सेवाएँ दे रहे हैं। इस पर सुप्रीम कोर्ट

ने याद दिलाया कि उसने काम शुरू करने के बाद डॉक्टरों के खिलाफ प्रतिकूल कार्रवाई नहीं करने का निर्देश दिया है और कहा है कि अगर वे (डॉक्टर) काम फिर से शुरू नहीं करते हैं तो हम राज्य सरकार को कार्रवाई करने से नहीं रोक सकते।

## दुष्कर्म कर बीटेक की छात्रा को जिंदा जलाने के दोषी को फांसी की सजा बरकरार

प्रत्युष नवबिहार संवाददाता  
रांची : झारखंड हाई कोर्ट ने बीटेक की छात्रा के साथ दुष्कर्म और हत्या करने के जुर्म में जेल में बंद राहुल राज को बेल देने से इनकार करते हुए उसकी फांसी की सजा को बरकरार रखा है। हाईकोर्ट ने सोमवार को उसकी अपील याचिका खारिज कर दी है। राहुल राज को रांची सीबीआई की स्पेशल कोर्ट ने फांसी की सजा सुनाई थी, जिसके खिलाफ उसने हाई कोर्ट में याचिका दाखिल की थी। हाई कोर्ट के जस्टिस आनंद सेन और जस्टिस गौतम कुमार चौधरी की खंडपीठ ने इस मामले की सुनवाई की। रांची सीबीआई की विशेष कोर्ट ने 20 दिसंबर, 2019 को राहुल राज को दोषी करार देते हुए 21 दिसंबर उसे फांसी की सजा सुनाई थी। उल्लेखनीय है कि छात्रा 15



दिसंबर 2016 को शाम छह बजे कॉलेज से घर लौटी थी। राहुल ने उसका दिनभर पीछा किया था। 16 दिसंबर की सुबह करीब चार बजे राहुल छात्रा के घर में घुसा। प्रिय का ताला खोला। छात्रा ने अपने कमरे को अंदर से बंद नहीं किया था। राहुल अंदर गया और उसका गला दबाने लगा। फिर उसका साथ दुष्कर्म किया। जब छात्रा अचेत हो गई तो आयरन के तार से गला चोट दिया था। उसके कपड़े उतारे और बगल वाले

कमरे में फेंक कर आग लगा दी थी। हत्या करने के बाद बगल के कमरे से मोटर में डालने के लिए रखा मोबिल उसके शरीर पर डाल दिया और आग लगा दी। फिर दरवाजा सटाकर वहां से निकल गया था। पुलिस ने मामले में बूटी बस्ती में मोबाइल कॉल डंप के आधार पर राहुल का पता लगाया था। राहुल 300 लोगों से पूछताछ की गई थी। इस दौरान पता चला कि राहुल नालंदा का रहने वाला था। उसपर पटना में भी नाबालिग से दुष्कर्म का केस दर्ज है। वह लखनऊ जेल में बंद था। इसके बाद राहुल के माता-पिता और पीड़िता के स्वाब और नाखून से मिले अंश का डीएनए टेस्ट कराया था। इसमें राहुल की मां का डीएनए मैच कर गया। इसी सबूत के आधार पर उसे फांसी की सजा हुई थी।

एक नजर

जिले में अब तक सात वाहनों को बीएच सीरीज नंबर आवंटित

बोकारो : बोकारो सहित पूरे राज्य में भारत सीरीज नंबर के रजिस्ट्रेशन की प्रक्रिया अगस्त माह से शुरू हो गई है, जिससे लंबे वक्त से इसका इंतजार कर रहे वाहन मालिकों के लिए यह बड़ी खुशखबरी है। बोकारो जिले में अब तक सात वाहनों को इल्ट सीरीज नंबर आवंटित किया जा चुका है। जिला परिवहन अधिकारी वंदना शेजलवालकर ने जानकारी देते हुए बताया कि इसके सॉफ्टवेयर पर कई दिनों से काम चल रहा था, जो अब पूरा हो चुका है। इसके साथ ही पूरे राज्य में इल्ट सीरीज नंबर के लिए रजिस्ट्रेशन की सुविधा शुरू कर दी गई है।

क्या है बीएच सीरीज नंबर के फायदे इल्ट सीरीज नंबर एक विशेष प्रकार का वाहन रजिस्ट्रेशन नंबर है, जो पूरे भारत में बिना किसी रजिस्ट्रेशन ट्रांसफर की आवश्यकता के वाहन चलाने की अनुमति देता है। इसके तहत वाहन मालिक को किसी अन्य राज्य में स्थानांतरित होने पर दोबारा रजिस्ट्रेशन सर्टिफिकेट बदलवाने की जरूरत नहीं पड़ेगी।

हर दो साल में भरना होगा टैक्स बीएच सीरीज नंबर वाले वाहन मालिकों को हर दो साल में टैक्स भरना होगा। 10 लाख रुपए तक के वाहनों पर 8 प्रतिशत रोड टैक्स, 10 से 20 लाख रुपए तक के वाहनों पर 10 प्रतिशत रोड टैक्स, और 20 लाख रुपए से अधिक कीमत वाले वाहनों पर 12 प्रतिशत रोड टैक्स देना होगा। डीजल वाहनों पर 2 प्रतिशत अतिरिक्त शुल्क देना होगा, जबकि इलेक्ट्रिक वाहनों पर 2 प्रतिशत कम टैक्स लगेगा।

डीपीएस के प्राचार्य डॉ गंगवार को राष्ट्रीय शिक्षक गौरव रत्न अवार्ड

बोकारो : डीपीएस बोकारो के प्राचार्य डॉ एस गंगवार को अंतरराष्ट्रीय मंच पर एक और ख्याति मिली है। नई दिल्ली के द इंडियन सोसायटी ऑफ इंटरनेशनल लॉ के सम्भाग में अंतरराष्ट्रीय साक्षरता दिवस के अवसर पर आयोजित सम्मेलन में नेपाल के प्रथम उपराष्ट्रपति रहे न्यायमूर्ति परमानंद झा ने उन्हें राष्ट्रीय शिक्षक गौरव रत्न अवार्ड से सम्मानित किया। अंतरराष्ट्रीय समरसता मंच व राष्ट्रीय समता सत्रस मंच के तत्वाधान में आयोजित राष्ट्रीय शिक्षक सम्मेलन में डॉ गंगवार को यह सम्मान मिला। नेपाल सरकार की उपसभा प्रमुख (प्रतिनिधि सभा) इंदिरा राणा मगर की अध्यक्षता में आयोजित समारोह में नेपाल के पूर्व उप प्रधानमंत्री उपेंद्र यादव, उत्तराखंड के पूर्व मुख्यमंत्री तारि सिंह रावत, पूर्व केन्द्रीय मंत्री मणिशंकर अक्षर, मध्य प्रदेश सरकार के दूर प्रशासक कैबिनेट मंत्री रविकरण साह, राजस्थान के विधायक गोपाल शर्मा समेत 22 देशों के प्रतिनिधि उपस्थित थे। इनमें भारत, नेपाल, भूटान, अफगानिस्तान, अल्बानिया, क्रोएशिया, फिनलैंड, इराक, इंडोनेशिया, द्यूनीशिया, श्रीलंका, मालदीव, ऑस्ट्रेलिया आदि देशों के प्रतिनिधि शामिल रहे।

जनरल अस्पताल में 15 वर्षों से काम कर रहे टेका मजदूर की मौत, हुआ प्रदर्शन

इलाज में लापरवाही का आरोप लगाते हुए नियोजन और मुआवजा की मांग पर अड़े परिजन व गामीण

प्रत्युष नवबिहार संवाददाता बोकारो : ये दुनिया बड़ी जालिम है। संस्थानों का सिस्टम अपने लिए काम करने वालों को भी तड़पते छोड़ देती है। जिस अस्पताल में एक कर्मचारी बिगत 15 वर्षों से काम कर रहा है, उसकी तबीयत बिगड़ने पर वो संस्था उसका समुचित इलाज तक नहीं कर पाती। इलाज के अभाव में बोकारो जनरल अस्पताल के एक ठेकाकर्मी की मौत हो जाती है। इस मौत के लिए बीजीएच को जिम्मेदार ठहराते हुए, परिजन और सहकर्मी सोमवार को बोकारो जनरल अस्पताल परिसर में धरना



प्रदर्शन पर बैठने को विवश हो गये। मामला बोकारो जनरल हॉस्पिटल में काम के दौरान ए ग्रेड मजदूर 50 वर्षीय दिलीप लकड़ा की मौत का है। जिसको लेकर मृतक के परिजन व साथी कर्मियों को आंदोलन का राह रूख अख्तियार करना पड़ा। मृतक के पुत्र को नियोजन तथा परिजनों को उचित मुआवजे की मांग को लेकर धरना पर बैठ गए। परिजनों का आरोप है कि बीजीएच

सभी विभागों के ठेकाकर्मी हड़ताल कर आंदोलन में कूद पड़ेगे। क्या है मामला- परिजनों तथा सह कर्मियों ने बताया कि दिलीप लकड़ा बोकारो जनरल हॉस्पिटल में एक ग्रेड (टेका) मजदूर के तौर पर लगभग 15 वर्षों से काम करता था। बोकारो जनरल हॉस्पिटल के नेफ्रो वार्ड में कार्यरत था। शुक्रवार सुबह ए शिफ्ट ड्यूटी में पहुंचा। ड्यूटी करने के दौरान करीब 7 बजे अचानक उनकी तबीयत बिगड़ी। तबीयत खराब होता देख, सहकर्मियों ने उसे वार्ड में एडमिट कराया। तत्पश्चात उनके परिजनों को सूचना दी। कहा कि बीजीएच द्वारा इलाज के लिए दिलीप का आयुष्मान कार्ड लाने को कहा गया। आयुष्मान कार्ड लाने व कागजी कार्रवाई पूरी करने में करीब 3 गई घंटे का वक्त गुजर गया। इस बीच सिर्फ उन्हें स्लाइन

वाटर चढ़ा कर रखा गया। कहा कि इस 3 घंटे में उनकी तबीयत बिगड़ती चली गई। दिलीप की हालत बिगड़ता देख अस्पताल प्रबंधन ने आनन-फानन में, उसे आईसीयू में भर्ती किया। तब-तक दिलीप का ब्रेन हेमरेज हो चुका था। इलाज के दौरान उनकी मृत्यु हो गई। मांग पूरी होगी तब उठेगा शव-मृतक सेक्टर 8 बी स्ट्रीट 9 में झोपड़ी में रहने वाले था. मृतक अपने पीछे एक लड़का एवं दो लड़की छोड़ गया। मृत्यु की सूचना जब उनके परिजन को मिली, तो वह अस्पताल परिसर में लापरवाही बरतने एवं बेहतर इलाज ना होने का आरोप लगाते हुए, प्रबंधन के खिलाफ आंदोलन में उतर गये। मृतक दिलीप लकड़ा के सहकर्मी भी मुआवजे और नियोजन की मांग को लेकर परिसर में धरना प्रदर्शन पर बैठ गए।

जन शिकायत समाधान कार्यक्रम को लेकर हुआ नुक्कड़ नाटक

प्रत्युष नवबिहार संवाददाता बोकारो : पुलिस का कल जन शिकायत समाधान कार्यक्रम है। जिसको लेकर आज बोकारो के कई जगह सहयोगिनी संस्था द्वारा नुक्कड़ नाटक का मंचन कर जनजागरूकता का कार्य किया गया। बोकारो के दूंदीबाद बाजार में आयोजित जागरूकता कार्यक्रम को संबोधित करते हुए बोकारो के डीएसपी आलोक रंजन ने कहा कि जन शिकायत समाधान हेतु आयोजित कार्यक्रम में महिला सुरक्षा एवं गुमशुदा बच्चों से संबंधित मामले सहित जैरो एफआईआर, ऑनलाइन एफआईआर, डाक्यू 112, डाक्यू 1930, मानव तस्करी एवं डायन प्रताड़ना, नशीला पदार्थ का सेवन और सामाजिक तत्वों का जमावडा, सुरक्षा मूलक उपाय, संपत्ति मूलक अपराध, साबर अपराध, चिटफंड के मामलों की



शिकायत की जा सकती है। बोकारो जिले के आईटीआई कैम्पस चास,पिंडराजोड़ा, डीवीसी प्लस टू हाई स्कूल चंद्रपुरा, सेक्टर 2 डी कला केंद्र बोकारो तथा मध्य विद्यालय सोवनडीह मारागरी में कल जन शिकायत समाधान कार्यक्रम का आयोजन किया जाएगा। जिसमें सभी आम लोग आमंत्रित हैं। उनकी शिकायत दर्ज की जाएगी। इसको लेकर के व्हाट्सएप नंबर ईमेल आईडी भी जारी की गई है जिसके माध्यम से भी शिकायत की जा सकती है।

पति से विवाद के बाद पति चार बच्चों समेत कुएं में कूदी, तीन बच्चों की हुई मौत

प्रत्युष नवबिहार संवाददाता बोकारो : पति के साथ हुए विवाद के बाद पत्नी ने अपने चार बच्चों के साथ कुएं में छलांग लगा दी। घटना गोमिया चतरोचट्टी थाना क्षेत्र के बड़की सिधावारा पंचायत अंतर्गत मुरपा गांव की है। हादसा में तीनों बच्चों की मौत हो गई, जबकि मां और एक बड़ी बेटी को ग्रामीणों ने बचा लिया गया। मृतक बच्चों में बेटा सचिन कुमार 2वर्ष, अंकिता कुमारी 3 वर्ष और पीहु कुमारी 8 वर्ष शामिल है। पुलिस ने तीनों बच्चों के शव का पोस्टमार्टम करवाकर परिजनों को सौंप दिया है। इस संबंध में चतरोचट्टी थाना प्रभारी दीपक कुमार राणा ने बताया कि रंजीत गंडू की पत्नी कलावती देवी उम्र लगभग 34 वर्ष ने अपने बच्चों के साथ कुएं में कूद गई, घटना की जांच की जा रही है और



उचित कार्रवाई की जाएगी। सिधावारा पंचायत के मुखिया रीतलाल महतो ने बताया कि शनिवार की रात को पति पत्नी के बीच किसी बात को लेकर विवाद हुआ। विवाद के बाद कलावती अपने बच्चों के साथ कुएं में कूद गई। जानकारी मिलते ही गांव वाले मौके पर पहुंचे और सभी को कुआं

से बाहर निकालने का प्रयास किया, लेकिन तीन बच्चों को बचाया नहीं जा सका। बड़ी बेटी और उसकी मां को बचा लिया गया। इस घटना से पूरे गांव और लोगों में शोक की लहर है। ग्रामीणों ने घटना की निंदा की है। खबर लिखे जाने तक पुलिस घटना की जांच में जुटी हुई है।

जन शिकायत समाधान कार्यक्रम को लेकर डीएसपी ने जागरूकता रथ को किया रवाना



प्रत्युष नवबिहार संवाददाता धनबाद : पुलिस महानिदेशक एवं पुलिस महानिरीक्षक के आदेश पर जिले में जन शिकायत समाधान कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है। जन शिकायत समाधान कार्यक्रम को सफल बनाना और लोगों जागरूक करने के उद्देश्य से झरिया थाना परिसर से सिंदरी डीएसपी भूपेंद्र प्रसाद राऊत ने हरी झंडी दिखाकर प्रचार वाहन रवाना किया। सिंदरी डीएसपी ने बताया कि

जागरूकता रथ पूरे अनुमंडल क्षेत्र में घूमेगा, जिसका मुख्य उद्देश्य है कि आम लोग अपनी समस्याओं को लेकर उक्त शिविर में पहुंचेंगे। जागरूकता अभियान चलाते हुए लोगों को कहा कि 10 सितंबर को जन शिकायत समाधान को लेकर जोरापोखर थाना क्षेत्र के टाटा ओटोडोरियल थाना क्षेत्र के टाटा ओटोडोरियल में कैम्प लगाया जाएगा। कैम्प के माध्यम से लोग अपनी-अपनी शिकायत दर्ज कर सकते हैं। शिकायत के बाद प्रशासन की

ओर से समस्या का समाधान किया जाएगा। डीएसपी ने बताया कि लोगों को जागरूकता रथ के माध्यम से 10 सितंबर को टाटा ओटोडोरियल जोरापोखर में आयोजित होने वाले जन शिकायत समाधान कार्यक्रम को लेकर जागरूक किया जा रहा है। जिसमें बताया गया कि वे भी इस कार्यक्रम में बह-चढ़ कर हिस्सा लें। यह कार्यक्रम उन्हीं लोगों के लिए आयोजित किया गया है, जिनके बीच आए दिन किसी न किसी बात को लेकर लेकर लड़ाई झगड़ा होता रहता है। जन समाधान कार्यक्रम के माध्यम से इसका निबटारा किया जाएगा। कार्यक्रम का उद्देश्य नागरिकों की समस्याओं का तुरंत समाधान करना और पुलिस के प्रति जनता के विश्वास को बढ़ाना है।

नशे में धुत युवा ने एक युवक को किया घायल, दो गिरफ्तार



प्रत्युष नवबिहार संवाददाता बोकारो : बालीडीह थाना क्षेत्र के बियाडा निवासी दुर्गेश चौधरी नामक युवक पर रविवार रात करीब साढ़े 8 बजे धर्मवीर नामक युवक व अन्य ने जानलेवा हमला कर दिया। घटना वसुधा उद्योग के समीप कोड़ाडीह मैदान पर अंजाम दिया गया। दुर्गेश का पर भुजाली से हमला किया गया। वह गंभीर रूप से घायल है। फिलहाल उसका इलाज बीजीएच अस्पताल में चल रहा है। बताया जाता है कि हमला करने वाले सभी युवक नशे में चूर थे। मिली जानकारी अनुसार कोड़ाडीह फुटबॉल मैदान में शाम ढलते ही

नशेड़ियों का जमावड़ा होने लगता है। इधर, पुलिस ने त्वरित कार्रवाई करते हुए धर्मवीर शर्मा तथा रामरंजन उर्फ पातर को गिरफ्तार कर लिया है। गिरफ्तार युवकों के निशांनदेही पर घटना में प्रयुक्त चाकू, एक स्विफ्ट डिजायर कार जेएफ 09 बीएफ 4779 तथा एक मोबाइल भी जब्त किया है। वहीं, बालीडीह इंपेक्टर अन्य आरोपियों की गिरफ्तारी को लेकर प्रयासरत है। कहा कि गिरफ्तार आरोपी ने बताया कि जन्माष्टमी पूजा के शिविजन के दौरान डांस करने को लेकर आपस में विवाद हुआ था। इससे खार खार धर्मवीर ने जानलेवा हमला किया।

संक्षिप्त खबरें

एथलेटिक्स प्रतियोगिता में सरस्वती शिशु मंदिर श्यामडीह के बच्चों का रहा शानदार प्रदर्शन



कतरास : 38वीं धनबाद जिला स्तरीय एथलेटिक्स प्रतियोगिता 7 एवं 8 सितंबर को कोयला नगर ग्राउंड में संपन्न हुई। इस प्रतियोगिता में धनबाद जिले के 40 टीमों के लगभग 800 प्रतिभागी बच्चों ने हिस्सा लिया। उक्त प्रतियोगिता में अपने विद्यालय के 40 प्रतिभागी भैया एवं बहनों ने हिस्सा लिया जिसमें विजेता खिलाड़ी है अंडर 12 आयु वर्ग में 60 मीटर दौड़ में अभिषेक रवानी प्रथम तथा रौनक सिंह द्वितीय स्थान प्राप्त किया, अंडर 14 आयु वर्ग में दायथलॉन बी में सुधांशु चौधरी ने प्रथम तथा कुंदन रजक ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया, अंडर 16 आयु वर्ग में अंशु कुमारी भाला फेंक में द्वितीय स्थान प्राप्त किया, अंडर 18 आयु वर्ग में आलेख पासवान हैमर थ्रो में प्रथम राहुल राणा भाला फेंक में द्वितीय शानतु पट्टा पांच किलोमीटर पैदल चाल में द्वितीय हैमर थ्रो में शिवानी कुमारी ने प्रथम अदिति कुमारी ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया, एवं अंडर 20 आयु वर्ग में विकास राय ने ऊंची कूद में प्रथम स्थान प्राप्त किया। विजेता प्रतिभागी भैया बहनों की तैयारी करने में संलग्न आचार्य विवेक सिंह और अंजली कुमारी ने अथक प्रयास किया। इस अवसर पर विद्यालय के अध्यक्ष प्रदीप खेमका सचिव विक्रम राजगढ़िया प्रधानाचार्य अभिमन्यु कुमार उप प्राचार्य श्रीमती श्रेया सरकार ने विजेता भैया बहनों की उपलब्धि की प्रशंसा करते हुए उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की तथा विद्यालय की गौरवशाली उपलब्धि के लिए सभी विद्यालय परिवार को बधाई दी।

कामगार संघ ने 21 सूत्री मांग को लेकर नुडीडीह कोलियरी प्रबंधन से की वार्ता



धनबाद : डिस्पेंसरी में दवा उपलब्ध कराने व सफाई कर्मी को संडे देने,लिपिक की कमी को पूरा करने सहित मजदूरों से जुड़े 21 सूत्री मांग को लेकर नुडीडीह कोलियरी कार्यालय में राष्ट्रीय जनता कामगार संघ की प्रतिनिधियों के साथ सकारात्मक वार्ता हुई। वार्ता में प्रबंधन की ओर से परियोजना पदाधिकारी बी बी सिंह, मैनेजर दशरथ सिंह, कार्मिक प्रबंधक तारा सिंह व यूनियन की ओर से आशीष सिंह, आशीष भानू, संजय चौहान, अनिल कुमार सिंह, यूनियन की ओर से आशीष भानू, संजय चौहान, अनिल कुमार सिंह, क्षेत्रीय सचिव लक्ष्मण पासवान, सुधीर चौहान, सुरेंद्र चौहान,असंगठित संघ के सचिव कन्हैया निषाद,नार्गंद सिंह, सियाराम सिंह, सुनील निषाद, सिक्की निषाद, संजय हाड़ी,संजय निषाद, रामा आशीष चौहान, संजय बाउरी, रोशन ठाकुर,सुखदेव प्रमाणिक, महेंद्र सिंह, सुदामा गिरी, मुन्ना राम, श्रवण बेलदार,सीवानंद उराव, अर्जुन भुईया सहित अन्य कार्यकर्ता उपस्थित थे।

तेतुलमारी में तीन दिवसीय गणेश उत्सव विसर्जन के साथ संपन्न

धनबाद : तेतुलमारी थाना के समीप कोल फील्ड स्पोर्टिंग क्लब के तत्वाधान में आयोजित 3 दिवसीय श्री गणेश पूजा महोत्सव वीते रात्रि डांस प्रतियोगिता व सोमवार को धूमधाम के साथ विसर्जन के साथ संपन्न हो गया। रविवार की रात्रि आयोजित डांस प्रतियोगिता में सैकड़ों प्रतिभागियों ने भाग लिया जिसमें सफल प्रतिभागियों अतिथियों ने पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया। नरारीकला दक्षिण पंचायत के मुखिया अशोक ठाकुर ने कहा कि मेरा जन्मभूमि है, मैं यहां पर आज मुखिया बन कर नहीं आया हूँ। डांस प्रतियोगिता विजेता व उपविजेता प्रतिभागियों को ट्रॉफी प्रदान कर सम्मानित करते हुये मुझे गर्व महसूस हो रहा है। मौके पर कार्यक्रम को सफल बनाने में कोल फील्ड स्पोर्टिंग क्लब के विक्की सिंह,पप्पू चौहान,संतोष ठाकुर,संतानु वर्णवाल, देवेन्द्र चौहान,रंजित कुमार रंजन उर्फ तुषार,शिवम पासवान, अभिषेक कुमार, दिनेश चौहान,गौतम सिंह, अनूप चौहान, इशु सिंह, आशीष कुमार सहित क्लब के अन्य सदस्यों का सहकारी योगदान रहा।

हॉट स्ट्रिप मिल में हुआ रिकॉर्ड उत्पादन



बोकारो : हॉट स्ट्रिप मिल ने सोमवार को 15101 टन / 671 कॉइल का उच्चतम दैनिक उत्पादन हासिल किया है, जो मिल के फिनिशिंग और कॉइलर अपग्रेडेशन के बाद पिछले सर्वश्रेष्ठ आंकड़े 14486 टन / 661 कॉइल को पार कर गया है। निदेशक प्रभारी बीरेंद्र कुमार तिवारी तथा अधिशासी निदेशक (मानव संसाधन एवं अतिरिक्त प्रभार संकार्य) श्री राजन प्रसाद ने 9 सितम्बर को हॉट स्ट्रिप मिल के अधिकारियों व कर्मियों से मुलाकात कर उन्हें इस उपलब्धि पर बधाई दी। बोकारो स्टील के शीर्ष प्रबंधन ने इस उपलब्धि पर सभी सहयोगी विभागों तथा सविदा कर्मियों को भी बधाई दी और हॉट स्ट्रिप मिल की पूरी टीम का उत्साहवर्धन किया। इस अवसर पर मुख्य महाप्रबंधक वी के सिंह सहित अन्य वरीय अधिकारी भी उपस्थित थे।

अधिवक्ताओं को झारखंड सरकार द्वारा दिए गए सौगात का किया स्वागत

बोकारो : बोकारो जिला के अधिवक्ताओं ने एक दूसरे को मिठाई बांट कर आज अपने खुशी बनाया। झारखंड के मुख्यमंत्री श्री हेमंत सोरेन, माले विधायक श्री विनोद कुमार सिंह एवम राज्य के महाधिवक्ता श्री राजीव रंजन का अधिवक्ताओं ने आभार व्यक्त किया। आज बोकारो कोर्ट परिसर में आयोजित समारोह में इंडियन एसोसिएशन ऑफ लॉयर्स के नेशनल कांसिल मेंबर अधिवक्ता रणजीत गिरि ने कहा की झारखंड सरकार द्वारा अधिवक्ताओं के हित में को कदम उठाया गया है। उसका झारखंड के सभी अधिवक्ता स्वागत करते है। श्री गिरि ने कहा की झारखंड में एडवोकेट प्रोटेक्शन एक्ट लागू करने के लिए मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन एवम महाधिवक्ता राजीव रंजन से बोकारो के अधिवक्ता मिलकर अपनी मांग रखेंगे ताकि आए दिन अधिवक्ताओं पर हो रहे हमले को रोका जा सके। इस अवसर पर विनोद कुमार सिंह, सोमनाथ शेखर, लालदू वरण महतो एवम अतुल कुमार ने संबोधित किया।

चिकित्सक एवं स्वास्थ्य कर्मियों का मनोबल ऊंचा रखें : डीडीसी

प्रत्युष नवबिहार संवाददाता बोकारो : जिला अंतर्गत हीमोफीलिया के नये दवा के माध्यम से हीमोफीलिया के मरीजों के इलाज की नई तकनीक से अवगत कराने हेतु सीएमई पर कार्यशाला का आयोजन बोकारो सदर अस्पताल के सभागार में उप विकास आयुक्त श्री गिरिजा शंकर प्रसाद की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। कार्यशाला की शुरुआत मुख्य अतिथि के द्वारा दीप प्रज्वलित कर किया गया। मौके पर सिविल सर्जन डॉ अभय भूषण प्रसाद, उपाधीक्षक सदर अस्पताल डॉ अरविंद कुमार, रिम्स रांची के प्रोफेसर डॉक्टर मिनी रानी अखोरी, सहायक प्राध्यापक डॉ सकेत वर्मा एवं श्री संतोष जायसवाल, जिला के आईएएम/आईएच के



चिकित्सकगण, जिला स्तरीय चिकित्सा पदाधिकारी, स्वास्थ्य कर्मी, सहित अन्य डॉक्टर उपस्थित थे। कार्याशाला में

हीमोफीलिया के लिए नये उपचारों में जीन थेरेपी शामिल है, जो एक बार का उपचार है जो कई वर्षों तक कारक स्तर को

बढ़ा सकता है और क्लॉटिंग कारक सांद्रता (सीएफसी) प्रतिस्थापन चिकित्सा की आवश्यकता को कम या समाप्त

किया जा सकता है। चिकित्सक एवं स्वास्थ्य कर्मी का मनोबल ऊंचा रखे उप विकास आयुक्त गिरिजा शंकर

एक नजर

उपायुक्त ने पोषण जागरूकता रथ को किया रवाना

रांची : रांची के उपायुक्त राहुल कुमार सिन्हा ने सोमवार को समाहरणालय परिसर से पोषण रथ रवाना किया। इस दौरान अपर जिला दंडाधिकारी विधि-व्यवस्था राजेश्वरनाथ आलोक, जिला समाज कल्याण पदाधिकारी सुरभि सिंह, विशिष्ट अनुभाजन पदाधिकारी मीना कुमारी एवं जिला जनसंपर्क पदाधिकारी उर्वशी पांडेय के जरिये भी संयुक्त रूप से हरी झंडी दिखाकर जागरूकता रथ रवाना किया गया। मौके पर उपायुक्त ने बताया कि एक से 30 सितंबर तक पोषण माह का आयोजन किया गया है। पोषण रथ के माध्यम से शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों में लोगों को उचित पोषण के संबंध में जागरूक किया जायेगा। जहां भी गर्भवती, धात्री महिलाएं एवं नवजात शिशु हैं, सभी को उचित मात्रा में पोषण मिले यही हमारा उद्देश्य है। उन्होंने कहा कि समय-समय पर उचित पोषक तत्व वाले आहार एवं दवाइयां महिलाओं, किशोरियों एवं बच्चों को उपलब्ध हो, इसे लेकर लोगों को जागरूक किया जायेगा। उपायुक्त ने कहा कि पोषण अभियान के माध्यम से स्वास्थ्य विभाग एवं जिला समाज कल्याण द्वारा प्रयास किया जा रहा है कि संतुलित आहार की जानकारी के साथ-साथ पोषाहार समय पर महिलाओं एवं शिशु को उपलब्ध हो।

बेटे की हत्या के मामले में दोषी पिता को आजीवन कारावास की सजा और जुर्माना

रांची : बेटे को गुस्से में आकर लाइसेंस रायफल से गोली मारकर हत्या करने के मामले में दोषी पिता राकेश राउत को अपर न्यायायुक्त योगेश कुमार सिंह ने सोमवार को आजीवन कारावास की सजा सुनाई है। साथ ही उसपर 30 हजार रुपये का जुर्माना भी लगाया है। जुर्माना राशि नहीं देने पर अभियुक्त को छह माह की अतिरिक्त सजा काटनी होगी। अदालत ने तीन सितम्बर को राकेश राउत को दोषी करार दिया था। घटना को अंजाम 8 अक्टूबर, 2018 को गोदा थाना क्षेत्र के टिकली टोला में दिया गया था। मामले में एपीपी सिद्धार्थ सिंह ने अदालत के समक्ष टोस गवाही प्रस्तुत की है। उन्होंने बताया कि राकेश राउत सीआरपीएफ में हवलदार के पद से 2005 में सेवानिवृत्त हुआ था। वह अपने बेटे के साथ रहता था। बेटा सुबह जल्दी उठकर पढ़ाई नहीं की और पिता से बहस कर ली। गुस्से में पिता ने आपा खो दिया और पास में रखा रायफल से गोली चला दी। गोली चलाने के बाद राहुल कुमार राउत घायल होकर मार गया। इसके बाद ने अपर अफसर हुआ और उसने 108 नंबर में डायल कर एंबुलेंस बुलाया। एंबुलेंस आया लेकिन तब तब बेटे की मौत हो चुकी थी। उसने गोदा थाना में जाकर सरेंडर कर दिया था। हत्या के आरोप में पुलिस ने 9 अक्टूबर, 2018 को उसे जेल भेज दिया था। उसकी निशानदेही पर बेटे का शव और रायफल बरामद किया गया था।

रांची रेलवे स्टेशन दुर्गा पूजा समिति झाकियों में केदारनाथ और उज्जैन का कराएगी दर्शन

रांची : राजधानी रांची में दुर्गा पूजा को लेकर एक से बढ़कर एक पंडाल का निर्माण किया जा रहा है। इसी क्रम में रांची रेलवे स्टेशन दुर्गा पूजा समिति की ओर से इस वर्ष केदारनाथ मंदिर और उज्जैन के महाकाल का दर्शन कराएगी। साथ ही कोयंबटूर के आदियोगी शिव का दर्शन भी कराया जाएगा। इसकी तैयारी शुरू कर दी गयी है। यहां 50 फीट ऊंची आदि योगी की मूर्ति विराजमान होगी, जो भक्तों में आकर्षण का केंद्र होगी। पंडाल की दोनों ओर दीवारों पर शिवलिंग, नंदी, डमरू और सांप की कलाकृति भक्तों को आकर्षित करेगी।

सशक्त सेना, समर्थ भारत के तीन दिवसीय शौर्य प्रदर्शनी कार्यक्रम का हुआ समापन

सैनिकों के शौर्य, पराक्रम और साहस की वजह से ही देश का हर व्यक्ति रहता है सुरक्षित : सुनील कुमार सिंह

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

रांची : 'सशक्त सेना, समर्थ भारत' के तीन दिवसीय कार्यक्रम रांची के मोरानाबादी मैदान में संपन्न हुआ। इस तीन दिवसीय कार्यक्रम का उद्घाटनकर्ता मुख्य अतिथि माननीय राज्यपाल (झारखंड) श्री संतोष गंगवार जी के द्वारा माननीय केंद्रीय रक्षा राज्य मंत्री श्री संजय सेठ जी को उपस्थिति में शुभारंभ की गई। उक्त कार्यक्रम में राष्ट्र सेवा फाउंडेशन के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष सुनील कुमार सिंह भी शामिल हुए। इस अवसर पर सुनील कुमार सिंह ने प्रेस विज्ञप्ति जारी कर कहा कि भारत की सशस्त्र सेनाएं दुनिया में अपने शौर्य, पराक्रम और साहस के लिए जानी जाती है। इन सैनिकों की वीरगाथा इनका पराक्रम हम सुनते रहे हैं। यह पहला अवसर है जब रांची में सेना के कौशल, शौर्य और पराक्रम देखने का अवसर



मिला। पूर्वी कमान की ओर 'नो योर आर्डर फोर्सज' की थीम पर आयोजित देश की सबसे बड़ी रक्षा प्रदर्शनी (डिफेंस एक्सपो 2024) रांची के मोरानाबादी मैदान में किया गया। यह प्रदर्शनी हमारे सेना के शौर्य, पराक्रम, साहस, शहादत और सेवा का प्रतीक है। युवाओं को प्रेरणा देती यह प्रदर्शनी देश सेवा का जज्बा पैदा करने वाली होगी।

हथियार के मामले में देश आत्मनिर्भर हो रहा है। अत्याधुनिक हथियार जवानों को मिल रहे हैं। जो दुश्मनों पर भारी पड़ रहे हैं। श्री सिंह ने कहा कि हमारे यशस्वी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी देश की सुरक्षा को लेकर काफी गंभीर हैं। और सेना को हर अत्याधुनिक हथियार जैसे सुविधा से लैस करवा रहे हैं। प्रदर्शनी में नई पीढ़ी के उन्नत हथियार मौजूद रहे। कहा कि तीन

मुलाकात हुई। जब मैं उनसे मिला तो उन्होंने बड़े ही गर्मजोशी से हाथ मिलाया और कंधे पर हाथ रखा। जिससे हम कह सकते हैं कि वह कमांडर ही नहीं, एक नेक दिल इंसान भी हैं। इसके लिए मैं अपनी ओर से रक्षा राज्य मंत्री संजय सेठ, कमांडर जेके सिंह साहब, सैन्य अधिकारियों तथा जवानों के प्रति आभार प्रकट करता हूँ, सैल्यूट करता हूँ, अभिनंदन करता हूँ। विशेष कर रक्षा राज्य मंत्री संजय सेठ को जिनके प्रयास से रांची में की गई सैन्य प्रदर्शनी के कारण रांची की युवा को सेना के बारे में नजदीक से जानने व समझने का अवसर मिला। यह रांची के लिए ऐतिहासिक व अविस्मरणीय आयोजन रहा। हमारी सेना हमारे राष्ट्र की ताकत है। हमारे इस ताकत को रांची की जनता देख रही है। इससे बड़ी हमारे लिए सौभाग्य की

मोक्ता समाज के तर्ज पर घासी समाज को अविलंब आदिवासी का दर्जा दें : विजय शंकर

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

रांची : आदिवासी मूलवासी जनाधिकार मंच के केन्द्रीय उपाध्यक्ष एवं पूर्व विधायक प्रत्याशी विजय शंकर नायक ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, मुख्यमंत्री झारखण्ड, केंद्रीय जनजाति मंत्री को ईमेल भेजकर यह बताया कि झारखंड राज्य के घासी समाज वर्तमान में अनुसूचित जाति झारखंड के पुराने वासिदों में से एक है। घासी समाज पूर्व से ही जनजातीय समाज रहा है इसकी भी रूढ़ीगत अपनी परंपरा संस्कार एवं संस्कृति रही है। आज झारखंड में आर्थिक राजनीतिक सामाजिक शैक्षणिक रूप से सबसे कमजोर एवं अतिम पायदान पर बैठा इस समाज की गिनती आज हो रही है। महोदय इस संदर्भ में आप सभी माननीय का स्मरण करना चाहूंगा की The Superintendent of census Operations, Bengal (Apperndex VIII) जब हो रहा था तब H.C Streetfield, Esq., Deputy Commissioner, Ranchi ने पत्र संख्या 265 C dated, Ranchi the 1st October 1901 को The Superintendent of

Census Operations Bengal के पत्र संख्या-184 T dated- 25 th may last 1902 के जवाब में जनजातिय समाज की एक सूची बना कर भेजा था जिसमें 43 जनजातिय लोगों को चिन्हित किया गया था जिसमें क्रमांक- 16 नंबर पर मे (घासी) को जनजातिय की सूची में चिन्हित किया गया था जिसकी प्रति छाया प्रति सलमन किया जा रहा है। उसके बाद भारत सरकार के गजट अधिसूचना गृह विभाग नंबर 18 शिबला दिनांक 2 में 1913 प्राधिकार द्वारा उस मॉरिस भारत सरकार के सचिव (गृह) के हस्ताक्षर से प्रकाशित किया जो अपने पत्र संख्या 550 में या अधिसूचित किया गया की जबकि सामान्य से भिन्न वे जनजाति जो मुंडा उरांव संथाल हो भूमि खड़िया घासी के नाम से जाने जाते हैं उनके अपने प्राथमिक उत्तराधिकार एवं विरासत के रूढ़ीगत प्रथा कायम है जो कि भारतीय उत्तराधिकार अधिनियम 1865 के प्रावधानों से सर्वथा असंगत है और इन जनजातियों के लोगों पर उक्त अधिनियम के प्रावधानों को लागू करना व्यर्थ है।

पांच सीटों पर चुनाव लड़ने वाली आजसू आगामी राज्य सरकार का तैयार कर रही खाका : झामुमो



प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

रांची : झारखंड मुक्ति मोर्चा (झामुमो) के महासचिव सह प्रवक्ता सुप्रियो भट्टाचार्य ने आजसू पार्टी पर जमकर निशाना साधा है। उन्होंने कहा कि इस सभा में जो बातें हुई, उसे हमने ध्यान से सुना और देखा। इसमें राज्य और देश की विकास दर की बात की गयी। कहा गया कि विकास दर रोजगार से जुड़ा है। इसी तरह की बातें की गयीं, जिनका आज की स्थिति से इनके साथ गठबंधन करने से इनकार कर दिया था। सुप्रियो भट्टाचार्य सोमवार को हरमू स्थित पार्टी कार्यालय में संवाददाता सम्मेलन में बोल रहे थे। उन्होंने

कहा कि इस पार्टी ने गत 8 सितंबर को युवा वर्ग को मूल मुद्दे से हटाने के लिए युवाओं का जुटान किया। उन्होंने कहा कि इस सभा में जो बातें हुई, उसे हमने ध्यान से सुना और देखा। इसमें राज्य और देश की विकास दर की बात की गयी। कहा गया कि विकास दर रोजगार से जुड़ा है। इसी तरह की बातें की गयीं, जिनका आज की स्थिति से इनके साथ गठबंधन करने से इनकार कर दिया था। सुप्रियो ने कहा कि गांव की पार्टी कही जाने वाली ये पार्टी आजसू भाजपा से सीटें मांग रही हैं। उन्होंने कहा कि ये बातें उनको भाजपा के

ही एक नेता ने बताई। उन्होंने कहा कि भाजपा के चुनाव प्रभारी और असम के मुख्यमंत्री आजकल असम में कम और झारखंड में अधिक रहते हैं। वे आजसू के साथ चुनाव लड़ेंगे, तो जो चार या पांच सीट पर चुनाव लड़ेंगे, वो पार्टी आगामी राज्य सरकार का खाका तैयार कर रही है। उन्होंने कहा इस पार्टी की हकीकत भी लोग जान चुके हैं। इसलिए 15 सितंबर को पोपम मोदी आ रहे हैं। इनको खुद पर भरोसा नहीं है। इसके बाद भाजपा के और भी नेताओं को झारखंड बुलाया जायेगा। उन्होंने कहा कि आश्चर्य इस बात होता है कि जो पार्टी आगामी सरकार का खाका खींच रही है, वो चार या पांच सीट पर चुनाव लड़ेंगी। सुप्रियो ने भाजपा और आजसू से सवाल किया कि आप हेमंत सरकार से इतना डरते क्यों हैं। उन्होंने कहा उनकी मूल समस्या ये है कि इनके पास यहां चुनाव लड़ने के लिए मुद्दा नहीं है।

यौन उत्पीड़न मामले में हाई कोर्ट में सुनवाई 30 सितंबर को

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

रांची : भाजपा प्रदेश अध्यक्ष बाबूलाल मरांडी के सलाहकार सुनील कुमार तिवारी के खिलाफ यौन उत्पीड़न से संबंधित एवं गवाहों को धमकाने को लेकर दो अलग-अलग मामलों में दायर क्वेश्चियन याचिका की सुनवाई भी हुई। हाई कोर्ट ने गवाहों को धमकाने के मामले में सुनील तिवारी के खिलाफ पीड़क कार्रवाई पर रोक जारी रखा है। सुनील तिवारी के खिलाफ अगस्त 2021 में रेप एवं जाति सूचक शब्दों का इस्तेमाल को लेकर खूटी की एक लड़की ने अरगोड़ा थाना में प्राथमिकी दर्ज कराई गई थी। प्रार्थी की ओर से कोर्ट को बताया गया था कि इस मामले में शिकायतकर्ता ने रांची की अदालत में केस वापसी के लिए

याचिका दाखिल की है। इसमें शिकायतकर्ता ने कहा है कि उसने आरोप की सत्यता को समझे बिना कुछ बलवत्कहमी के कारण प्राथमिकी दर्ज कराई है, वह इस मामले में आगे नहीं बढ़ाना चाहती है। उल्लेखनीय है कि पूरा मामला खूटी जिले की एक लड़की से जुड़ा है, जिसने साल 2021 में सुनील तिवारी के खिलाफ शारीरिक शोषण का मामला दर्ज कराया था। खूटी की पीड़िता ने अपनी एफआईआर में लिखा है कि सुनील तिवारी द्वारा उसका शारीरिक, मानसिक और आर्थिक शोषण किया गया, जिसके बाद उसने रांची के अरगोड़ा थाने में सुनील तिवारी के खिलाफ प्राथमिकी दर्ज करायी थी।

जदयू गठबंधन में लड़ेगा विस चुनाव, चल रही बात : संजय झा

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

रांची : जदयू प्रदेश कार्यसमिति की बैठक पुराना विधानसभा स्थित विधायक क्लब परिसर में हुई। बैठक में शामिल होने जदयू के राष्ट्रीय कार्यकारी अध्यक्ष संजय झा सोमवार को रांची पहुंचे। एयरपोर्ट पर प्रदेश अध्यक्ष खीरू महतो, प्रदेश प्रभारी डॉ अशोक चौधरी, सह प्रभारी मनोज यादव, जदयू नेता मधुकर सिंह, सागर कुमार एवं सुशील सिंह सहित हजारों कार्यकर्ताओं ने उनका जोरदार स्वागत किया। संजय झा वतौर मुख्य अतिथि कार्यसमिति की बैठक में शामिल हुए। बैठक की अध्यक्षता प्रदेश अध्यक्ष सह सांसद खीरू महतो ने की। संचालन महासचिव श्रवण कुमार ने किया। मौके पर कार्यकारी

अध्यक्ष संजय झा ने कहा कि जदयू गठबंधन में विधानसभा चुनाव लड़ेंगे। इस निमित्त बातचीत जारी है। नीतीश कुमार चाहते हैं पार्टी झारखंड में पुनः खड़ी हो। बिहार के बाद पार्टी की सबसे अधिक संभावना झारखंड में है। जदयू का झारखंड में बड़ा आधार था। उन्होंने कहा कि केंद्र सरकार में नीतीश कुमार की महत्वपूर्ण भूमिका है। उन्होंने प्रदेश अध्यक्ष को निर्देश दिया कि एक महीना के अंदर विभिन्न विधानसभा में कार्यकर्ता सम्मेलन करें। जनता से जो रिपोर्ट मिल रहा है उसके अनुसार राज्य में एनडीए की सरकार बननेगी। सरयू राय पुराने नेता है उनके पार्टी में आने से राष्ट्र स्तर पर एक अच्छा संदेश गया है।

अध्यक्ष संजय झा ने कहा कि जदयू गठबंधन में विधानसभा चुनाव लड़ेंगे। इस निमित्त बातचीत जारी है। नीतीश कुमार चाहते हैं पार्टी झारखंड में पुनः खड़ी हो। बिहार के बाद पार्टी की सबसे अधिक संभावना झारखंड में है। जदयू का झारखंड में बड़ा आधार था। उन्होंने कहा कि केंद्र सरकार में नीतीश कुमार की महत्वपूर्ण भूमिका है। उन्होंने प्रदेश अध्यक्ष को निर्देश दिया कि एक महीना के अंदर विभिन्न विधानसभा में कार्यकर्ता सम्मेलन करें। जनता से जो रिपोर्ट मिल रहा है उसके अनुसार राज्य में एनडीए की सरकार बननेगी। सरयू राय पुराने नेता है उनके पार्टी में आने से राष्ट्र स्तर पर एक अच्छा संदेश गया है।

मुख्यमंत्री हिमंता पहुंचे रांची, भाजपा नेताओं ने किया स्वागत

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

रांची : असम के मुख्यमंत्री और झारखंड भाजपा के चुनाव सह प्रभारी हिमंता बिस्वा सरमा सोमवार को रांची पहुंचे। नेता प्रतिपक्ष अमर कुमार बाउरी, राज्यसभा सदस्य दीपक प्रकाश सहित कई भाजपा के नेताओं ने एयरपोर्ट पर उनका स्वागत किया। एयरपोर्ट से बाहर आते ही हिमंता बिस्वा सरमा से संवाददाताओं ने पूछा कि मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन कह रहे हैं कि विपक्ष उन्हें फांसी पर लटकाना चाहता है। इसपर जवाब देते हुए हिमंता ने कहा कि हेमंत सोरेन दीप्यावृं हैं क्योंकि देश को उनकी जरूरत है। भाजपा क्यों उन्हें फांसी पर लटकाना चाहेगी। भाजपा



तो सिर्फ हेमंत सोरेन से घुसपैट रोकने के लिए कह रही है। साथ ही उत्पाद सिपाही में दौड़ने के दौरान जिन युवाओं की मौत हुई है, उनके परिजनों को एक नौकरी और

हिमंता ने कहा कि बांग्लादेशी का मुद्दा इसलिए वे हमेशा उठा रहे हैं। क्योंकि, जब वह पाकड़ गए तब उन्हें पता चला कि पहले वहां हिन्दू विधायक होते थे लेकिन अब मुस्लिम विधायक बनते हैं। उन्होंने पाकड़ के डीसी से पूछा है कि वह बताए कि कैसे डेमोग्राफी बदल देते हुए कहा कि मेरे संपर्क में झारखंड कांग्रेस के हमेशा 12 से 14 विधायक रहते हैं। साथ ही झारखंड मुक्ति मोर्चा के भी 2-3 विधायक संपर्क में हैं। सरमा ने कहा कि विधायक तो कई संपर्क में हैं लेकिन बाहर से सभी को ले लेंगे तो मेरी पार्टी के लोग ही नाराज हो जायेंगे और मुझे मारने

लगेगे। उन्होंने कहा कि पार्टी के कार्यकर्ताओं को भी सम्मान देना जरूरी है। पत्रकारों ने जब पूछा कि पूर्व मंत्री और कांग्रेस नेता बंधु तिवारी ने कहा है कि आपने उन्हें भाजपा में शामिल होने का न्योता वीडियो कॉल के जरिये दिया था। उन्होंने इसपर कहा कि उन्होंने बंधु तिवारी से कभी बात नहीं की। उनकी बेटी मांडर की विधायक शिल्पी नेहा तिवारी एयरपोर्ट पर मिली थी तब हाय-हेलो हुआ था। उन्होंने कहा कि वीडियो कॉल में बात करने के लिए उधर से भी किसी को जुड़ना पड़ता है। इसलिए पहले बंधु तिवारी को बताना चाहिए कि वो आखिर क्यों वीडियो कॉल से जुड़े थे।

संक्षिप्त खबरें

झामुमो महासचिव से मिला होमगार्ड वेलफेयर एसोसिएशन का प्रतिनिधिमंडल

रांची : झारखंड होमगार्ड वेलफेयर एसोसिएशन का एक प्रतिनिधिमंडल झारखंड मुक्ति मोर्चा (झामुमो) के केंद्रीय महासचिव विनोद पांडे से सोमवार को मुख्यमंत्री आवास में मिला। इस दौरान झारखंड होमगार्ड वेलफेयर एसोसिएशन के जरिये 22 सितंबर को धनबाद में होने वाले महासम्मेलन के लिए मुख्यमंत्री को आमंत्रण पत्र दिया गया। इस प्रतिनिधि मंडल में प्रदेश महासचिव राजीव कुमार तिवारी, प्रदेश अध्यक्ष रवि मुखर्जी, धनबाद जिला संघ प्रतिनिधि अनिल कुमार और राजू कुमार शामिल थे। केंद्रीय महासचिव ने मुख्यमंत्री से इस संबंध में वार्ता करने की बात कही।



झारखंड हाई कोर्ट ने पूछा, कब तक मरा जाएगा जेपीएससी अध्यक्ष का पद

रांची : सिविल जज जूनियर डिवीजन से संबंधित एक मामले की सुनवाई के दौरान झारखंड हाई कोर्ट के एक्टिंग चीफ जस्टिस एसएन प्रसाद और जस्टिस एके राय की खंडपीठ ने जेपीएससी के अध्यक्ष नहीं होने पर नाराजगी जताई है। हाई कोर्ट की खंडपीठ ने सोमवार को राज्य सरकार से पूछा है कि जेपीएससी में कब तक अध्यक्ष या प्रभारी अध्यक्ष की नियुक्ति कर दी जाएगी? कोर्ट ने मामले की सुनवाई मंगलवार निर्धारित की है। दरअसल, प्रार्थी श्वेता त्रिपाठी की ओर से सिविल जज जूनियर डिवीजन के मंस के एरजाग को जल्द कराने को लेकर याचिका दाखिल की गई थी। इस पर कोर्ट ने राज्य सरकार से जानना चाहा कि मंस का एरजाग अबतक तक क्यों नहीं हुआ है। इस पर जेपीएससी की ओर से कोर्ट को बताया गया कि अध्यक्ष का पद रिक्त है। इसलिए सिविल जज जूनियर डिवीजन के मंस की परीक्षा की प्रक्रिया आगे नहीं बढ़ पाई है। कोर्ट को यह बताया गया कि जेपीएससी के नये अध्यक्ष के रूप में फिलहाल किसी की नियुक्ति नहीं हुई है। ना ही किसी को अतिरिक्त प्रभार दिया गया है। 21 अगस्त को जेपीएससी अध्यक्ष डॉ मेरी नीलिमा केरकेट्टा पद से रिटायर हो गईं। नीलिमा केरकेट्टा को 2022 में जेपीएससी की कमान सौंपी गई थी। 22 अगस्त से जेपीएससी अध्यक्ष का पद खाली है।

श्याम मंदिर में खादूनरेश का किया गया केशर तिलक श्रृंगार

रांची : हरमू रोड के श्री श्याम मंदिर में आज खादूनरेश का केशर तिलक श्रृंगार किया गया। वर्ष में एक बार श्रीकृष्ण जन्माष्टमी से टाकुर जी निरन्तर 15 दिन तक अपने मूल श्यामल रूप में दरबार से दर्शन दे रहे थे। श्री खादुंशाम के श्री श्याम मंदिर की परम्परा के अनुसार खादू एवं हरमू रोड श्री श्याम मंदिर में एक साथ खादू नरेश का केशर चंदन तिलक श्रृंगार किया गया। श्री श्याम मित्र मण्डल के प्रथम महामंत्री विश्वनाथ नारसरिया ने बताया कि कि खादू को नवीन पोशाक बागा पहनाया गया। मण्डल के मंत्री श्यामसुंदर शर्मा की देख रेख में सभी गर्भगृहो का दिव्य अनोखा श्रृंगार किया गया। श्री नारसरिया ने बताया कि इसके पूर्व प्रातःकालीन श्रृंगार अलग से मुरगन फूल व तुलसी दल से टाकुर जी का विशेष श्रृंगार करके प्रातः 8:30 बजे श्रृंगार आरती की गयी। सायंकालीन समर्पण रूप से श्रृंगारित गर्भगृहो का पर्दा दर्शन हेतु खोला गया तो उपस्थित सैकड़ों भक्तों ने खादू नरेश की जय-जयकार करके दर्शन किया। भक्तजन खादू नरेश को निहार रहे थे। अपनी मनोकामना प्रस्तुत कर रहे थे। खादू नरेश भक्तों को आशीर्ष प्रदान कर रहे थे। इस अवसर पर श्री श्याम मित्र मण्डल के अध्यक्ष सुरेश सावगी, महामंत्री विश्वनाथ नारसरिया, मंत्री श्यामसुंदर शर्मा, श्रवण ढाढ़िनिया, रनेह पौदार, रतन शर्मा, संजय सराफ, अनिल नारनोली सहित बड़ी संख्या भक्तजन उपस्थित थे।



पशु चिकित्सा महाविद्यालय में पशुओं की हैडलिंग एवं शोध पर कार्यशाला का हुआ आयोजन



रांची : बिरसा कृषि विश्वविद्यालय के पशुचिकित्सा एवं पशुपालन महाविद्यालय में सोमवार को 'प्रयोगशाला पशुओं की हैडलिंग एवं अनुसंधान की बुनियादी तकनीक' विषय पर एक पांच दिवसीय कार्यशाला प्रारंभ हुई। इसमें रांची विश्वविद्यालय, बीआईटी मेसरा, एम्स देवघर, बिरसा कृषि विश्वविद्यालय और जलपुर वेटनरी कॉलेज के 26 शिक्षक, वैज्ञानिक एवं शोधार्थी भाग ले रहे हैं। कार्यशाला के समन्वयक तथा वेटनरी कॉलेज के पशु भेषज एवं विष विज्ञान विभाग के अध्यक्ष डॉ राजू प्रसाद ने बताया कि प्रतिभागियों को पशुओं पर एक्सपेरिमेंट के नियंत्रण एवं पर्यवेक्षण सम्बन्धी राष्ट्रीय समिति के दिशा निर्देशों के अनुरूप शोध में पशुओं के प्रयोग से संबंधित आचारशास्त्र एवं रेगुलेशन की जानकारी दी जाएगी। पशु सभाल एवं प्रबंधन, सेक्सिंग, ड्रग एडमिनिस्ट्रेशन, ब्लड कलेक्शन, एनेस्थीसिया और विभिन्न रोग मॉडलों के बारे में हैंडर आन ट्रेनिंग दी जाएगी। इससे प्रतिभागी ज्यादा एक्वैरीरी के साथ परीक्षण करने में समर्थ हो सकेगे। आयोजन की समन्वयक डॉ विशाखा सिंह ने स्वागत भाषण तथा डॉ दीक्षा मलेथा ने धन्यवाद ज्ञापन किया। इस अवसर पर पशुचिकित्सा संकाय के डीन डॉ सुशील प्रसाद, डीन पीजी डॉ एमके गुप्त, कुलसचिव डॉ नरेंद्र कुंदादा, निदेशक अनुसंधान डॉ पीके सिंह, प्रसार शिक्षा निदेशक डॉ जगन्नाथ उरांव ने भी अपने विचार रखे और पशुओं से जुड़े एक्सपेरिमेंट में बरती जानेवाली सावधानियां और सुरक्षा मानकों को रेखांकित किया। कार्यशाला 13 सितंबर तक चलेगी।

सेवा भारती के स्वावलंबन प्रकल्प का हुआ उद्घाटन



रांची : सेवा भारती, रांची के तत्वावधान में बाबू वीर कुंवर सिंह विचार मंच के सहयोग से कम्प्यूटर एवं सिलाई प्रशिक्षण केन्द्र का उद्घाटन वीर कुंवर सिंह पार्क, वार्ड -26, हरमू में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, झारखंड के सह प्रांत संघचालक अशोक श्रीवास्तव ने श्रीफल फोंड कर किया। मौके पर राष्ट्रीय सेवा भारती के न्यासी गुरुशरण प्रसाद ने कहा कि सेवा भारती अपने स्वावलंबन प्रकल्प के माध्यम से समाज के वंचित, अभावग्रस्त लोगों को कौशल प्रशिक्षण देकर आत्मनिर्भर बनाने का कार्य कर रही है। संस्था द्वारा संचालित सिलाई प्रशिक्षण, कम्प्यूटर प्रशिक्षण केंद्रों से प्रशिक्षित सैकड़ों महिलाओं व युवाओं ने स्वरोजगार कर अर्थिक रूप से स्वावलंबी हुए हैं। आज युवा पीढ़ी को नौकरी की होड़ लगी हुई है, किन्तु हमारा उद्देश्य युवाओं को हुनरमंद बनाकर स्वरोजगार से जोड़ना है। सेवा भारती के स्वावलंबन प्रकल्प उद्घाटन कार्यक्रम को अशोक श्रीवास्तव, बाबू वीर कुंवर सिंह विचार मंच के सचिव ललन सिंह, चंद्रकांतनारायण ने भी संबोधित किया। मौके पर वीरेंद्र सिंह, उमाकांत मिश्र, प्रदीप वर्मन, डॉ समर सिंह सहित बस्ती की महिलाएं उपस्थित रहीं।

# हरियाणा विधान सभा चुनावी दंगल में राजनीतिक दलों की नई मुसीबतें



विनोद कुमार सिंह

आज आप का ध्यान हरियाणा के राज्य विधानसभा चुनावी दंगल से सम्बंधित दाव पेंच पर करने वाले है जैसा कि आप सभी को मालुम है कि दो राज्यों अर्थात जम्मू कश्मीर व हरियाणा में विधान सभा के होने वाली है जम्मू- कश्मीर में धारा370के हटने के बाद10 वर्षों के बाद चुनाव हो रही है। वही हरियाणा में 5 वर्ष बाद जहाँ कुछ महीनों राज्य के मुख्य मनोहर लाल कट्टर को हटाकर सैनी को सता की कमान सौंपी गई थी। जैसा कि हमने आपसे वादा किया था आज हम हरियाणा के विधान सभा चुनाव पर चर्चा करेंगे।

हरियाणा में विधानसभा चुनाव के लिए आम आदमी पार्टी व कांग्रेस के बीच बातचीत का लम्बे दौर के बाद दोनों दलों में सहमति हो गई आप अपने 5 सीटों पर चुनाव लड़ेगीं । कांग्रेस पार्टी व आम आदमी पार्टी का इण्डिया ब्लाग के तर्ज पर गठबन्धन करने बैठको का दौर के बाद दोनों दलों में एक तरफ सहमति बन गई है। वही दुसरी तरफ हरियाणा में विधानसभा चुनाव के पास आते ही राजनीतिक पारा तेजी से ऊपर चढ़ने लगा है। विनोद कुमार सिंह, स्वतंत्र पत्रकार देश की राजधानी दिल्ली से सटे हुए पड़ोसी राज्य हरियाणा की चर्चा चहुं दिशाओं में हो रही है। हालांकि हरियाणा व हरियाणवी लोक संस्कृति, चोपाल व अखाड़े व किसानों पहलवानों ' खिलाड़ियों को लेकर होती रहती है। प्वाहे वह किसान आन्दोलन हो कुश्ती व अन्य खेलों पदकों के जीत का जशन हो आदि। आज आप का ध्यान हरियाणा के राज्य विधानसभा चुनावी दंगल से सम्बंधित दाव पेंच पर करने वाले है। जैसा कि आप सभी को मालुम है कि दो राज्यों अर्थात जम्मू कश्मीर व हरियाणा में विधान सभा के होने वाली है जम्मू- कश्मीर में धारा370के हटने के बाद10 वर्षों के बाद चुनाव हो रही है। वही हरियाणा में 5 वर्ष बाद जहाँ कुछ महीनों राज्य के मुख्य मनोहर लाल कट्टर को हटाकर सैनी को सता की कमान सौंपी गई थी। जैसा कि हमने आपसे वादा किया था आज हम हरियाणा के विधान सभा चुनाव पर चर्चा करेंगे। आप को बता दे कि \* हरियाणा में विधानसभा चुनाव के लिए आम आदमी पार्टी व कांग्रेस के बीच बातचीत का लम्बे दौर के बाद दोनों दलों में सहमति हो गई आप अपने 5 सीटों पर चुनाव लड़ेगीं । \*कांग्रेस पार्टी व आम आदमी पार्टी का इण्डिया ब्लाग के तर्ज पर गठबन्धन करने बैठको का दौर के बाद दोनों दलों में एक तरफ सहमति बन गई है। वही दुसरी तरफ हरियाणा में विधानसभा चुनाव के पास आते ही राजनीतिक पारा तेजी से ऊपर चढ़ने लगा है। तमाम राजनीतिक पार्टियाँ अपने अपने उम्मीदवारों के नामों की घोषणा करने के साथ ही अब चुनाव प्रचार पर अपना ध्यान कर रही है। राज्य के दोनो राजनीतिक दलों भारतीय जनता पार्टी (बीजेपी) और कांग्रेस ने अपने उम्मीदवारों की पहली सूची तक जारी कर दी है। बीजेपी ने अपनी पहली सूची में जहाँ हरियाणा की 90 में से 67 सीटों पर अपने उम्मीदवारों के नाम की घोषणा की है तो वहीं कांग्रेस ने अपनी पहली लिस्ट में कुल 32 उम्मीद वारों के नामों का ऐलान किया है। हरियाणा में विधानसभा चुनाव के लिए आम आदमी पार्टी और कांग्रेस के बीच बातचीत लम्बे दौर बाद दोनों पार्टी में सहमति बन गई है। गौरतलब रहे कि हरियाणा विधानसभा चुनाव के लिए आम आदमी पार्टी (आप) के साथ भी सीट बंटवारे पर दोनों पार्टियों के बीच सीट-बंटवारे पर सहमति बन गई है। हरियाणा राजनीति पर पैनी नजर रखने वाले राजनीतिक पांडितों का मानना है कि कांग्रेस के कुछ नेताओं ने अरविंद केजरीवाल के नेतृत्व वाली पार्टी के साथ गठबन्धन पर आपत्ति जताई है। जानकारी के मुताबिक हनु गुट और कुछ अन्य नेता आप के साथ सीट बंटवारे के



खिलाफ हैं इन नेताओं का मानना है कि केजरीवाल की पार्टी का हरियाणा में कोई खास आधार नहीं है। वही, कांग्रेस ने हरियाणा विधानसभा चुनाव के लिए शुक्रवार को 32 उम्मीदवारों की पहली सूची जारी की इसमें राज्य के पूर्व मुख्यमंत्री भूपेंद्र सिंह हुड्डा को गैर सांपला-किलोई, पहलवान विनेश फोगाट को जुलाना और राज्य इकाई के प्रमुख उदयभानु को होडल सीट से उम्मीदवार बनाया गया है। कांग्रेस की केंद्रीय चुनाव समिति (सीईसी) की नयी दिल्ली में हुई बैठक के बाद उम्मीदवारों की पहली सूची जारी की गई। इस बैठक में कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरेगे, पार्टी की पूर्व अध्यक्ष सोनिया गांधी, पार्टी महासचिव एवं संगठन प्रभारी के.सी. वेणुगोपाल, अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी (एआईसीसी) के हरियाणा प्रभारी दीपक बाबरिया और हनु गुट समेत अन्य लोग शामिल हुए। एक तरफ कांग्रेस पार्टी व आम आदमी पार्टी का इण्डिया ब्लाग के तर्ज पर गठबन्धन करने बैठको का दौर जारी है। वही दुसरी तरफ हरियाणा में विधानसभा चुनाव के पास आते ही राजनीतिक पारा तेजी से ऊपर चढ़ने लगा है। तमाम राजनीतिक पार्टियाँ अपने अपने उम्मीदवारों के नामों की घोषणा करने के साथ ही अब चुनाव प्रचार पर अपना ध्यान कर रही है। राज्य के दोनो राजनीतिक दलों भारतीय जनता पार्टी (बीजेपी) और कांग्रेस ने अपने उम्मीदवारों की पहली सूची तक जारी कर दी है। बीजेपी ने अपनी पहली सूची में जहाँ हरियाणा की 90 में से 67 सीटों पर अपने उम्मीदवारों के नाम की घोषणा की है तो वहीं कांग्रेस ने अपनी पहली लिस्ट में कुल 32 उम्मीद वारों के नामों का ऐलान किया है। वही हरियाणा में कांग्रेस और आम आदमी पार्टी के बीच गठबन्धन को लेकर बातचीत दौर चल रही है, लेकिन इन सबके बीच बीजेपी और कांग्रेस के लिए अपने ही नेता मुसीबत खड़ी करते नजर आ रहे हैं। वे जो नेता हैं जिन्हें पार्टी ने उनकी सीट से इस बार टिकट नहीं दिया है। अब ये नेता अपनी पार्टी के खिलाफ ही विद्रोह की मिंगल बजाते हुए नजर आ रहे हैं। राज्य विधानसभा चुनाव के दिन जैसे-जैसे नजदीक आ

रहे है राजनीतिक दलों के लिए मुसीबत बढ़ती नजर आ रही है। राज्यों के विधान सभा चुनाव के लिए सभी राजनीतिक दलों में अपने दलों की उम्मीदवारों के लिस्ट जारी करने के लिए माथा पच्ची व मैराथन बैठकों के दौर के बाद कुछ उम्मीदवारों की सूची जारी हो के बाद कई राजनेताओं ने अपना विरोध जताया है। कुछ न तो पार्टी के आला कमान के फैसले के विरोध अपनी पार्टी से इस्तीफा दे कर विरोधी दलों के खेमें में शामिल तक हो गया ऐसा दृश्य पहले भाजपा के बाद अब कांग्रेस के नेताओं ने पार्टी के खिलाफ ही चुनाव लड़ने का क्रिया ऐलान तक कर दिया है। पार्टी के द्वारा सूची के सामने आने के बाद कांग्रेस पार्टी के अंदर कई नेता आलाकमान से नाराज चल रहे हैं। इस सूची में सबसे पहला नाम बहादुरगढ़ के राजेश जून का है। इन्होंने विधान सभा निर्दलीय चुनाव लड़ने की घोषणा कर दिया है। कांग्रेस की पहली सूची जारी होने के बाद पार्टी के बड़े नेता राजेश जून ने अपने सभी पदों से इस्तीफा दे दिया है। इन्होंने ऐलान किया है कि पार्टी ने उन्हें भले उम्मीदवार नहीं बनाया है लेकिन वो बहादुरगढ़ से बतौर निर्दलीय चुनाव लड़ेंगे। राजेश जून ने चुनाव लड़ने का ऐलान करने के बाद अपने समर्थकों के साथ एक बैठक भी की है। इन्होंने कहा भरे साथ कांग्रेस नेतृत्व ने घोषा किया है, लेकिन मैं हार नहीं मानने वाला हूँ मैं इस चुनाव में कांग्रेस उम्मीदवार की तुलना देगुने वोट लेकर विधायक चुना जाऊंगा। पार्टी के वरिष्ठ नेताओं मुझे वादा किया था कि मैं मुझे टिकट दूँगे, लेकिन ऐसा हुआ नहीं। आपको बता दें कि कुछ दिन पहले ही भारतीय जनता पार्टी (बीजेपी) ने भी अपने 67 उम्मीद वारों की पहली सूची जारी की थी। पहली लिस्ट को आप अभी 24 घंटे भी नहीं हुए थे कि बीजेपी में इसे लेकर विरोध के स्वर बुलंद होने लगे थे। बीजेपी के खिलाफ बगावत करने वालों में खास तौर पर तीन बड़े नेता शामिल थे। इन नेताओं ने पार्टी के पदों से इस्तीफा भी दे दिया था, इस लिस्ट में पहले नंबर पर थे कर्णिव कंबोज आप को बता दे कि कंबोज वर्तमान में हरियाणा में भाजपा के ओबीसी मोर्चा के प्रदेशध्यक्ष

थे। इन्होंने इंदी से टिकट ना मिलने के बाद भाजपा के सभी पदों से इस्तीफा दे दिया था। पार्टी पद से इस्तीफा देने वालों में रणजीत सिंह चौटला और कविता जैन जैसे नेताओं नाम भी शामिल है। हरियाणा के कैबिनेट मंत्री चौधरी रणजीत सिंह चौटला का भी नाम लिस्ट से गायब था। बीजेपी की पहली लिस्ट से अपना नाम गायब देखने के बाद रणजीत सिंह चौटला ने अपने समर्थकों की एक बैठक बुलाई थी। वही कांग्रेस पार्टी के लिए एक बुरी खबर आ रही है कि हरियाणा विधान सभा चुनावी दंगल में पार्टी ने दो अनतराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त पहलवान विनेश व बजरंग को उत्तरा था। इनोने पहलवानों ने आनन फानन में कांग्रेस पार्टी की सदस्यता ग्रहण कर लिया। बजरंग पहलवान को पार्टी में नई जिम्मेदारी सौंपी वही विनेश को विधान सभा चुनावी मैदान दंगल में टिकट दे कर उतार दिया। राजनीतिक शतरंज के सह मात में चाल में दोनों पहलवान फंसते नजर आ रहे है। इसविदित रहे कि दोनों पहलवान रेलवे में अपनी सेवा दे रहे है। प्वािन न रेलवे में दोनों नौकरी करते है। बजरंग की राजनीतिक गतिविधियों को देखते हुए रेलवे ने 4 सितंबर को उन्हें कारण बताओ नोटिस जारी किया था। इसके बाद 6 सितंबर को दोनों पहल वारों ने रेलवे में अपने पद से इस्तीफा दे दिया और उसके बाद कांग्रेस पार्टी की सदस्यता ग्रहण कर ली। विनेश उत्तर रेलवे में खेल विभाग में विशेष कर्तव्यस्थ अधिकारी (ओएसडी) के पद पर कार्यरत थी। इन्होंने रेलवे को तत्काल प्रभाव वाला इस्तीफा दिया। विनेश रेलवे के खेल विभाग में डरऊ पद पर थे। विनेश के बाद इन्होंने भी रेलवे को तत्काल प्रभाव वाला इस्तीफा भेजा था। इनोने के इस्तीफों को रेलवे ने अभी तक स्वीकार नहीं किया है। रेलवे के अनुसार कोई कर्मचारी नौकरी में रहते हुए इस्तीफा देता है तो उसे 3 महीने का नोटिस देना पड़ता है। इसके अनुसार 3 महीने तक नोटिस में कभी कर्मचारी का मन फिर से नौकरी में आने का होता है तो वह अपना इस्तीफा वापस भी ले सकता है। अब कोई कर्मचारी तत्काल प्रभाव से इस्तीफा देता है तो उसमें वापसी की गुंजाइश खत्म हो जाती है। राजनीतिक हल्कों में चर्चा बनी हुई है कि विना इस्तीफा स्वीकार हुए विनेश चुनाव लड़ पाएंगे? चुनाव आयोग के अनुसार सरकारी पद पर आखीर किसी भी व्यक्ति को चुनाव लड़ने के लिए पहले अपने पद से इस्तीफा देना होता है। संबन्धित विभाग से अनापत्ति प्रमाणपत्र (एनओ) लेनी होती है। इसके बिना रिटर्निंग अधिकारी किसी भी उम्मीदवार रेलवे में घोषा नहीं करते हैं। कुछ लोगों के दिलचस्प चर्चा छिड़ी सी गई थी अब होगा कि विनेश चुनाव लड़ पाएंगे या नहीं। मैं आप को स्पष्ट कर दूँ कि सुजो का हवाले खबर आ रही है कि दोनों पहलवानों का इस्तीफा रेलवे में मंजूर कर लिया है। इनोने राज्य के विधान सभा के चुनाव भाजपा व कांग्रेस के लिए चुनाव में जीत हासिल एक प्रतिष्ठ बन गया है। दोनो पार्टी अपने अपने सहयोगियों के साथ मिलकर चुनावी शतरंज सिखाया चाल में सह-मात का खेल शुरू कर दिया है। लेकिन इसका असली चल जनता जनार्दन के पास है, क्योंकि उन्हे ही अपना प्रतिनिधि चुनना है। चुनावी दंगल में किसकी जीत होगी, किसकी हार होगी यह तो 8 अक्टूबर को मतपना के बाद ही पता चलेगा। तब तक आप को इंतजार करना होगा। लेखक स्वतंत्र पत्रकार व स्वतंत्र है।

## संपादकीय

### स्थायी शांति पहली शर्त

जम्मू-कश्मीर विधानसभा चुनाव के लिए भाजपा ने अपना एजेंडा तय कर लिया है। केंद्रीय गृह मंत्री और भाजपा के वरिष्ठ नेता अमित शाह के बयान में इसकी झलक दिखती है। शनिवार को जम्मू में एक सभा में उन्होंने साफ शब्दों कहा कि, जब तक शांति स्थायी नहीं हो जाती, तब तक पाकिस्तान से बातचीत नहीं हो सकती। यह भी कहा कि जम्मू-कश्मीर में विधानसभा चुनाव के बाद उचित समय पर राज्य का दर्जा बहाल किया जाएगा। जम्मू-कश्मीर में विधानसभा के चुनाव हो रहे हैं, और शनिवार को भाजपा के प्रचार अभियान की शुरुआत करते हुए शाह ने उन सभाग मुद्दों को छुआ जिन्हें प्रमुख विपक्षी पार्टियाँ-नेशनल कॉंग्रेस (एनसी) और पीडीपी-ने अपने चुनाव घोषणापत्र में शामिल किया है। गृह मंत्री ने कहा कि यह जम्मू-कश्मीर में पहला चुनाव है जब एक ही झंडा, एक ही संविधान और एक ही प्रधानमंत्री होगा। एनसी ने अपने घोषणापत्र में पाकिस्तान से बातचीत की वकालत की है। पीडीपी प्रमुख महबूबा मुफ्ती भी ऐसा कह चुकी हैं। गुज्जर-बकरवाल के लिए आरक्षण व्यवस्था पर भी विपक्षी दलों ने सवाल उठाए हैं। गुज्जर-बकरवाल समुदाय को अद्विष्ट है कि पहलाइयों को आरक्षण दिए जाने से उनकी हकमारी हो सकती है। एसीटी आरक्षण में उनका हिस्सा कम हो सकता है। इस कारण उनमें आक्रोश है, जिसे विपक्षी दल हवा देते रहे हैं। गृह मंत्री ने स्पष्ट किया कि कोई भी ताकत इस आरक्षण को रू नहीं सकती। राज्य की दर्जा बहाली पर उन्होंने कहा कि किसी को कोई भ्रम न रहे और न ही कोई अनभिज्ञ बना रहे। पांच अगस्त, 2019 के अपने भाषण में ही उन्होंने स्पष्ट कहा था कि चुनाव के बाद उचित समय पर जम्मू-कश्मीर को राज्य का दर्जा बहाल किया जाएगा। राज्य में जल्द से जल्द चुनाव के लिए सुप्रीम कोर्ट ने अपने एक फैसले में कहा था कि राज्य में निर्वाचित सरकार होना जरूरी है। उसके बाद से जम्मू-कश्मीर में जनता को लोकप्रिय सरकार की प्रतिक्षा है। अब उनकी मुराद पूरी होने जा रही है। शाह जानते हैं कि विपक्षी पार्टी कांग्रेस, नेका और पीडीपी राज्य की दर्जा बहाली को मुद्दा बना रहे हैं। पाकिस्तान से बातचीत की पैरोकारी करने वाले नेशनल कॉंग्रेस और पीडीपी पर भी शाह हमलावर रहे। राज्य में चुनाव अभियान जो प्रतीक्षा है और आने वाले दिनों में यह और प्रभावी तरीके से दिखेगा। स्वाभाविक रूप से स्वायत्तता, अनुच्छेद 370 की वापसी, पाकिस्तान से बातचीत जैसे मुद्दों पर राज्य के मतदाता अपना फैसला देने वाले हैं।



कृष्णानंद झा /

देश के पूर्वोत्तर राज्य मणिपुर में पिछले एक साल से जारी हिंसात्मक उदरघों के कारण असुरक्षा का जो माहौल बना हुआ है उस पर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक मोहन भागवत कई बार गंभीर चिंता व्यक्त कर चुके हैं। संघ प्रमुख ने मणिपुर की समस्या के समाधान हेतु त्वरित कदम उठाने की आवश्यकता पर

जोर दिया है। हाल में ही संघ के समर्पित कार्यकर्ता शंकर दिनकर काणे के जन्म शताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य में आयोजित समारोह में संघ प्रमुख ने कहा कि मणिपुर में असुरक्षा के माहौल में रहकर भी संघ के कार्यकर्ता दोनों समूहों के बीच शांति, सौहार्द और परस्पर विश्वास कायम करने के लिए रात दिन काम कर रहे हैं। और उन्हें अपने प्रयासों में अब सफलता मिलने लगी है। संघ प्रमुख ने मणिपुर में शिक्षा के प्रचार-प्रसार और राज्य के बच्चों को शिक्षित करने के लिए शंकर दिनकर काणे के सराहनीय योगदान का उल्लेख करते हुए कहा कि वे चालीस साल पहले मणिपुर में शिक्षा की जड़ें मजबूत करने के लिए वहां काफी समय तक रहे और इसी पुनीत भावना से वहां के बच्चों को महाराष्ट्र लेकर आए तथा यहां उनके



आवास और शिक्षा के पर्याप्त प्रबंध किए। मणिपुर में संघ के कार्यों के अच्छे परिणाम सामने आने लगे हैं। संघ प्रमुख ने कहा कि मणिपुर में चालीस पहले लगे बदतर होती हालात थे उसमें सकारात्मक बदलाव लाने में काणे जैसे समर्पित कार्यकर्ताओं का बहुत बड़ा योगदान है जो वहां

जाकर वहां का हिस्सा बन गये और बदलाव लाने के लिए समर्पित भाव से जुटे रहे। संघ प्रमुख ने कहा कि पूर्वांचल को पंद्रह साल पहले समस्याओं वाला क्षेत्र कहा जाता था परन्तु अब स्थिति बिल्कुल बदल चुकी है। मणिपुर में बहुत बदलाव आया है परन्तु कुछ लोग मणिपुर में अशांति का वातावरण निर्मित

कर वहां की प्रगति के मार्ग में बाधा खड़ी करना चाहते हैं लेकिन उनके प्रयास सफल नहीं होंगे। राज्य की जनता समझ चुकी है कि अशांति का माहौल रहते प्रगति नहीं हो सकती। मोहन भागवत ने कहा कि संघ के कार्यकर्ता असुरक्षित माहौल में भी संघ के कार्यकर्ता अपने काम में लगे हुए हैं। विदोनों पक्षों को समझा बुझाकर उनके बीच क्रोध और द्वेष को कम करने तथा उनके बीच अविश्वास को खारिज को पाटने की कोशिश कर रहे हैं। संघ के कार्यकर्ताओं को अपनी कोशिशों में लगातार सफलता मिल रही है। संघ के कार्यकर्ताओं को अपने कार्यों से दोनों पक्षों का विश्वास अर्जित करने में कामयाबी मिली है। मणिपुर में सामाजिक समन्वय स्थापित करने और राष्ट्रीय एकता की भावना

विकसित करने में शंकर दिनकर काणे जैसे समर्पित कार्यकर्ताओं के प्रयास फलीभूत हुये हैं। गौरतलब है कि संघ प्रमुख ने लोकसभा चुनावों के परिणाम घोषित होने के बाद भी बाद अपने एक भाषण में कहा था कि मणिपुर एक साल से जल रहा है। वहां स्थितियां सामान्य करने के लिए प्राथमिकता से प्रयास करने होंगे। संघ के कार्यकर्ता कठिन चुनौतियों का सामना करते हुए वहां जिस मुस्ती से डटे हुए हैं उसको रेखांकित करते हुए मोहन भागवत ने कहा कि संघ के कार्यकर्ता वहां दोनों पक्षों के लोगों की सेवा कर रहे हैं। केवल एकजोते यह काम नहीं कर सकते। संघ के कार्यकर्ता इसमें महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। (लेखक राजनैतिक विश्लेषक है)

# आत्महत्या के विचार आते हों तो क्या करें?

जीवन जीने वाली गृहणियों सहित समाज के अन्य सभी वर्गों के लिए है। इसके अलावा, भले ही दूसरे लोग अपनी समस्याओं के विषय में बात न करें, फिर भी हम इस विषय में सतर्क रहकर बदलाव ला सकते हैं। जब आप किसी को उदास देखें, तो बस यू ही उनके बगल से न गुजर जाएं। रुकें और उनसे पूछें, हउरे, क्या बात है? क्या मैं आपकी मदद कर सकता हूँ? लोगों से जुड़ना और उनकी सहायता करना बहुत जरूरी है। ऐसा करके हम कई लोगों के दिल और दिमाग को हल्का कर सकते हैं। कुछ साल पहले 2014 में, हमने एक हहैपीनेस सर्वे शुरू किया था। हमारे स्वयंसेवक घर-घर गए और उन्होंने लोगों से उनकी खुशी और उनकी समस्याओं के बारे में कुछ सवाल पूछे। जब हमारे स्वयंसेवक, दूसरे लोगों से यह प्रश्न पूछते थे, तो लोगों को

बहुत राहत महसूस होती थी। एक महिला ने हैपीनेस सर्वे की प्रतिक्रिया में बताया कि पहली बार किसी ने उससे पूछा कि हूँ क्या वह खुश है और क्या उसे किसी चीज की जरूरत है। वह दरअसल बातचीत करने के पहले वह बहुत भावुक और दुखी महसूस कर रही थी। तो यह कुछ ऐसा है जिसके लिए पूरे समाज को तत्पर रहना चाहिए और एक दूसरे का सहयोग करना चाहिए। हमने यह देखा है कि जब लोग इस तरह के अवसाद या आत्महत्या जैसे मनोभाव से गुजर रहे होते हैं, उस समय हमारे प्राणशक्ति के स्तर में वृद्धि बहुत सहायता करती है। जब लोग उदास महसूस करते हैं, तो उनकी प्राण ऊर्जा अक्सर समाप्त हो जाती है, जिससे उनमें अवसाद और आत्महत्या के विचार आ सकते हैं। ऐसी परिस्थितियों में व्यायाम का

अभ्यास कुछ हद तक मदद कर सकता है लेकिन यह थकान भी पैदा कर सकता है। इसलिए जिन लोगों को व्यायाम करना कठिन या उबाऊ लगता है, उनका लिए योग और ध्यान, बिना थकाए प्राण स्तर को बढ़ाने में कारगर हैं। प्राणस्तर को बढ़ाने में संगीत भी अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। जब हमारे भीतर प्राणशक्ति अधिक होती है, तब नकारात्मक विचार आने की संभावना कम हो जाती है। खुशी अक्सर विस्तार की भावना से जुड़ी होती है। जब हमारी प्रशंसा होती है, तो हमारे भीतर विस्तार की भावना होती है। इसके विपरीत, अपमान हमें संकुचित महसूस कराता है। योग विज्ञान के अनुसार, चेतना में विस्तार और संकुचन की इस अनुभूति को समझना महत्वपूर्ण है। संगीत, खुशमिजाज लोगों या बच्चों के साथ समय बिताना, नृत्य और ध्यान जैसी

गतिविधियों में शामिल होना, ऊर्जा के स्तर को बढ़ाने में मदद कर सकता है। इसके अतिरिक्त, योग और ध्यान जैसी क्रियाएँ व्यक्ति को मानसिक स्थिति, ऊर्जा के स्तर और जीवन की समग्र गुणवत्ता में उल्लेखनीय सुधार कर सकती हैं। ये अभ्यास कम ऊर्जा और अरुचि की भावनाओं को दूर करने में मदद करते हैं, जो हमें एक बेहतर और जीवंत जीवन की ओर अग्रसर करता है। जब भी किसी के मन में कोई नकारात्मक विचार आये या मन भारी लगे तो उन्हें चाहिए कि बाहर निकलें और जरूरतमंद लोगों से बात करें और उनसे पूछें कि हूवे उन जरूरतमंद लोगों के लिए क्या कर सकते हैं। हूवेकेवल इस बात की सजगता कि वे यहाँ कई दूसरे लोगों की मदद करने के लिए आए हैं, उन्हें तुरंत सकारात्मक विचारों से भर देगी। इसीलिए ऐसे लोगों को किसी

न किसी सेवा परियोजना में भाग लेना चाहिए। फिर वे देखेंगे कि उनके पास ऐसे नकारात्मक विचारों के लिए समय ही नहीं है। तो सुबह उठें और दिन भर जरूरतमंद लोगों की सेवा में व्यस्त रहें। इस तरह से वे रात तक थक जाएंगे और जब वे फिर बिस्तर पर जायेंगे और अच्छी गहरी नींद ले सकेंगे। जब आप खाली हों, तो ध्यान करें। यदि आपको बार-बार ऐसे विचार आ रहे हैं, तो इसका अर्थ है कि आप पर्याप्त व्यायाम नहीं कर रहे हैं; आपको जॉर्जिंग करनी चाहिए। इससे आपके शरीर में बेहतर रक्त संचार होगा। इसके अलावा, जानवर्धक किताबें पढ़ें। भगवद गीता, उपनिषद या कोई प्रेरणादायी नोटबुक हर दिन पढ़ें, चाहे सिर्फ एक पेज ही क्यों न हो। अगर आप खुद को ज्ञान, संगीत और सेवा में व्यस्त रखेंगे, तो ये विचार बार-बार नहीं आएंगे।

**एक नजर**  
**हाथियों ने उमवि**  
**गरमुंडो कला को दूसरी**  
**बार बनाया निथाना**

सरिया (गिरिडीह) : सरिया प्रखंड क्षेत्र के उत्कृष्ट मध्य विद्यालय गरमुंडो कला में बीते रात हाथियों ने दूसरी बार धावा बोला। इस दौरान विद्यालय के कमरों में लगे पांच दरवाजों को क्षतिग्रस्त कर दिया। फर्नीचर को तोड़ा। इस संबंध में विद्यालय के प्रधान सहायक अध्यापक नारायण महतो ने बताया कि गरमुंडो कला के आसपास के जंगलों में इन दिनों चार विवरण कर रहा है। जो प्रतिदिन किसी न किसी गांव में घुसकर उत्पात मचा रहा है। इसी के दौरान उक्त हाथियों द्वारा बीते शनिवार की रात विद्यालय भवन को क्षतिग्रस्त किया गया है। इन्होंने बताया कि इसकी जानकारी उन्हें रविवार को किसी ग्रामीण के द्वारा बताया पर हुई। विद्यालय जाकर देखा तो सभी कमरे के दरवाजे क्षतिग्रस्त थे। आवश्यक कामजातों को सुरक्षित रखा गया। कहा कि कुछ माह पूर्व हाथियों का समूह उसी विद्यालय के दरवाजे को तोड़कर विद्यालय में रखा एमडीएम का चावल चट कर गया था। जिसके भय से एमडीएम का चावल-दाल वगैरह गांव में किसी दूसरे के घर रखते हैं।

**ट्रेक्टर की चपेट में**  
**आने से युवक की मौत**

गोड्डा : गोड्डा में ट्रेक्टर की चपेट में आने से गंभीर रूप से जख्मी युवक की मौत हो गई। घटना रविवार देर शाम की है। कनभरा गांव निवासी छोटू साह सखी लाने गरबना हाट गया हुआ था। सखी लेकर लौटने के क्रम में पीछे से एक ट्रेक्टर ने उसे धक्का मार दिया। युवक छोटू साह धक्का लगने के बाद आँधे मुह सड़क पर गिर पड़ा। घटना के बाद ट्रेक्टर चालक गाड़ी लेकर फरार हो गया। सड़क से गुजरने वाले लोगों ने भी घायल को अस्पताल नहीं पहुंचाया। काफी देर बाद सूचना मिलने पर कनभरा गांव के ग्रामीण घटनास्थल पर पहुंचे और युवक को सदर अस्पताल ले गए। तब तक काफी देर हो चुकी थी। डॉक्टरों ने युवक को मृत घोषित कर दिया। सोमवार की सुबह पोस्टमार्टम के बाद शव परिजनों को सौंप दिया गया।

**जन शिकायत समाधान कार्यक्रम आज, प्रचार वाहन रवाना**

जिले के सुदूरवर्ती क्षेत्रों में जाकर आमजनों को कार्यक्रम की जानकारी देगा



प्रत्युष नवबिहार संवाददाता  
खूंटी : खूंटी जिले के नागरिकों की शिकायतों का त्वरित एवं प्रभावी निवारण तथा पुलिस और नागरिकों के बीच अविश्वास तथा दूरी को समाप्त करने के उद्देश्य से दस सितंबर मंगलवार को जिले में जन शिकायत समाधान कार्यक्रम का आयोजन किया जाएगा। कार्यक्रम में आमजनों की सहभागिता सुनिश्चित करने एवं उन्हें कार्यक्रम की पूर्ण जानकारी उपलब्ध कराने के उद्देश्य से सोमवार को पुलिस अधीक्षक अमन कुमार ने नगर भवन खूंटी से हरी झंडी दिखाकर कार्यक्रम के प्रचार वाहन को रवाना किया। यह वाहन जिले के सुदूरवर्ती क्षेत्रों में

जाकर आमजनों को कार्यक्रम की जानकारी देगा। जन शिकायत समाधान कार्यक्रम का आयोजन खूंटी पुलिस अनुमण्डल के पांच थाना खूंटी, मुहू, सायको, अड़की एवं मारंगहादा थाना के लिए नगर भवन, खूंटी में तथा तोरपा पुलिस अनुमण्डल के तीन थाना तोरपा, तपकरा एवं रनिया थाना क्षेत्र के लिए तोरपा स्थित सभागार ( तोरपा थाना परिसर) में किया जाएगा। निर्धारित तिथि एवं समय पर खूंटी पुलिस अनुमण्डल अन्तर्गत खूंटी, मुहू, अड़की, सायको एवं मारंगहादा थाना क्षेत्र के निवासी

अपनी शिकायतों के निष्पादन के लिए नगर भवन, खूंटी में तथा तोरपा पुलिस अनुमण्डल अन्तर्गत तोरपा, तपकरा एवं रनिया थाना क्षेत्र के लिए अनुमण्डल पुलिस पदाधिकारी कार्यालय, तोरपा स्थित सभागार ( तोरपा थाना परिसर) में जन शिकायत समाधान कार्यक्रम में भाग ले सकते हैं। इन मामलों की दी जायेगी जानकारी जन शिकायत समाधान कार्यक्रम में गुमशुदा बच्चों एवं महिला सुरक्षा संबंधी कानून, पीड़ितों को मुआवजा, नये आपराधिक कानून के अंतर्गत जीरो एफआइआर और ऑनलाइन एफआइआर प्रणाली, डाल 112 तथा 1930 (साइबर फ्रॉड) एससी-एसटी अत्याचार निवारण अधिनियम, संपत्ति मूलक अपराध, साइबर अपराधों द्वारा ठगी के तरीके, मानव तस्करी, नशीले पदार्थों का सेवन-बिक्री की रोकथाम आदि के बारे में जानकारी दी जाएगी।

**रूडसेट संस्थान में ब्यूटी पार्लर प्रबंधन प्रशिक्षण कार्यक्रम का हुआ समापन**



प्रत्युष नवबिहार संवाददाता  
सिल्ली : सिल्ली श्री धर्मस्थला मंजूनाथेश्वर शिक्षण ट्रस्ट एवं केनरा बैंक द्वारा संचालित रूडसेट संस्थान सिल्ली में 30 दिवसीय ब्यूटी पार्लर प्रबंधन प्रशिक्षण कार्यक्रम का समापन समारोह किया गया। समारोह में मुख्य अतिथि झारखंड सरकार के पूर्व उपमुख्यमंत्री सह सिल्ली विधायक सुदेश कुमार महतो, विशिष्ट अतिथि डिजिटल मैनेजर केनरा बैंक अंचल कार्यालय रांची के अनुराग श्याम अंबास्ता, रूडसेट संस्थान के निदेशक संजीत कुमार उपस्थित हुए। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में राज्य के विभिन्न प्रखंड से आए महिलाओं ने भाग लिया। मुख्य अतिथि सुदेश कुमार महतो ने प्रशिक्षार्थियों को संदेश दिया की आप सभी लोग प्रशिक्षण के बाद अपना स्वयं का ब्यूटी पार्लर खोलें क्योंकि आज के दौर में ब्यूटी पार्लर की मांग जोर शोर से है। हर कोई सुंदर दिखना चाहती है मेहनत और इमानदारी से अपना कार्य करें और लोगों को स्वरोजगार से जोड़ें और आगे बढ़ने में सहायता करें। डिजिटल मैनेजर अनुराग श्याम अंबास्ता ने बैंक से जुड़ी सारी योजनाओं की जानकारी विस्तार से दिए और लोन लेकर स्वरोजगार को आगे बढ़ाने में सहायता देना। रूडसेट संस्थान के निदेशक संजीत कुमार ने संस्थान के क्रियाकलाप की जानकारी दी और बेहतर करने की बातें कहीं। मंच का संचालन मौके पर वरिष्ठ संकाय अनिल कुमार ने किया और धन्यवाद ज्ञापन वरिष्ठ संकाय जगदीश चंद्र महतो ने किया। मौके पर सविता पोद्दार, अष्टमी सिंह, मेधा राय, दशरथ महतो, महेश रुहिदास, सुनील मुंडा उपस्थित रहे।

**बैंड प्रतियोगिता में कस्तूरबा गांधी बालिका आवासीय विद्यालय बना चैम्पियन**



प्रत्युष नवबिहार संवाददाता  
रामगढ़ : झारखंड शिक्षा परिषद रांची के तत्वावधान में खेले झारखंड अंतर्गत गांधी मैमोरियल +2 उच्च विद्यालय रामगढ़ परिसर में बैंड प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इसमें कुल चार विद्यालय कस्तूरबा गांधी बालिका आवासीय विद्यालय कैथा, गांधी मैमोरियल + 2 उच्च विद्यालय रामगढ़, कस्तूरबा गांधी बालिका आवासीय मांडू और पतरातु ने भाग लिया। सभी विद्यालयों के बालिकाओं की टीम ने अलग-अलग धुन पर अपनी कलाओं का प्रदर्शन किया। कस्तूरबा गांधी बालिका आवासीय विद्यालय कैथा की टीम ने शानदार बैंड का प्रदर्शन करते हुए प्रथम स्थान प्राप्त कर विजेता रही। दूसरे स्थान पर के.जी.बी.पी. मांडू और तीसरे स्थान पर के.जी.बी.पी. पतरातु की टीम रही। सिख रॉजिमेंट सेंटर से आए निर्णायकों ने बच्चों का उत्साह बढ़ाते हुए कहा कि सरकारी विद्यालयों के बच्चों का बैंड प्रतियोगिता देखकर बहुत ही खुशी हो रही है। इस तरह के प्रतियोगिता आयोजित होते रहनी चाहिए। विजेता टीमों को शौल्ड व मेडल देकर सम्मानित किया गया। विजेता टीम राज्य में आयोजित बैंड प्रतियोगिता में रामगढ़ जिला का प्रतिनिधित्व करेगी। इस मौके पर जिला कार्यक्रम पदाधिकारी प्रभात आनंद कुल्लू, शारीरिक शिक्षक बलविंदर सिंह, कमरुद्दीन अंसारी, शेखर कुमार, दीपक सिंह, मिथलेश कुमार रविदास, आशीष कुमार दास, कमल कुमार, निरंजन कुमार महतो, कुलदीप कुमार, रविंद्र दुबे, रोशन करमाली, सानू करमाली, इमरान खान, सरफराज खान, अरुण कुमार, आदित्य कुमार महतो, मनीष, अबीर, मनोज तिकी, पुरण चंद्र महली, प्रियंका कुमारी, रविन्द्र कुमार, रविंद्र कुमार महतो, तेजू मुंडा सहित कई शिक्षक इस प्रतियोगिता में मौजूद रहे।

**सरकार को जनता के प्रति जवाबदेह होना चाहिए : राज्यपाल संतोष गंगवार**



देवघर (हि.स.) : राज्यपाल संतोष कुमार गंगवार ने कहा कि देवघर भूमि तपोभूमि है और उन्हें यहाँ शांति की अनुभूति हो रही है। निश्चित रूप से यह प्रदेश देश में ही नहीं वरन् विदेश में भी अपनी पहचान बनाएगा लेकिन यह तभी संभव है जब सभी लोग प्रगति करें और सरकार को योजनाओं का लाभ सभी को मिले। उन्होंने कहा कि सरकार को जनता के प्रति जवाबदेह होनी चाहिए। राज्यपाल सोमवार को देवघर जिला के मोहनपुर प्रखंड में नया चितकाट पंचायत भवन प्रांगण में उपस्थित जनसमूह को संबोधित करते थे। उन्होंने कहा कि कुछ दिनों पूर्व उन्हें उत्तर प्रदेश में अपने गृह जिला स्थित एक पंचायत भवन में जाने का अवसर मिला। उस सर्व सुविधा युक्त पंचायत भवन में वातानुकूलन की भी व्यवस्था थी। यह दशाता है कि पंचायत स्तर तक विकास की एक नई गाथा लिखी जा रही है और सरकार को योजना से

नीचे के पायदान पर अवस्थित लोग भी लाभान्वित हो रहे हैं। पूर्व में सरकार के द्वारा भेजी जाने वाली राशि कुछ प्रतिशत ही लाभान्वित तक पहुंचता था लेकिन अब लाभान्वितों के खाते में सीधे राशि उपलब्ध कराकर उन तक योजनाओं का लाभ पहुंचाया जा रहा है और विकास की इस अवधारणा को देखकर दुनिया भी चकित है। उन्होंने कहा कि सरकार आपके कल्याण के लिए सतत प्रयत्नशील है। मां-बहनों के जीवन को सुगम करने के लिए सरकार द्वारा उज्वला योजना के तहत गैस कनेक्शन दिया गया और जल जीवन मिशन के तहत लोगों को शुद्ध पेयजल उपलब्ध कराने की दिशा में सरकार द्वारा क्रमशः लगातार प्रयास किया जा रहा है।

**संगठित अपराध पर लगे लगाम लंबित कांडों का हो निष्पादन : एसपी**



प्रत्युष नवबिहार संवाददाता  
रामगढ़ : जिले में संगठित अपराध पर पूरी तरीके से लगाम लगाना है। अपराधी चाहे नशे का व्यापार कर रहे हो या फिर कारोबारी से लेवी वसूल रहे हो। हर हालत में उन्हें गिरफ्तार किया जाना है। यह बातें सोमवार को एसपी कार्यालय में अपराध समीक्षा बैठक के दौरान एसपी अजय कुमार ने कही। एसपी ने कहा कि सभी थाना प्रभारी लंबित कांडों पर विशेष तौर पर ध्यान दें। कोई भी वारंटी और आपराधिक प्रवृत्ति का व्यक्ति बख्शा नहीं जाएगा। उन्होंने नशे के व्यापार पर अंकुश लगाने के लिए लगातार छापेमारी करने का निर्देश दिया। इसके अलावा चोरी और लूट की घटनाओं के उद्देश पर भी उन्होंने जोर दिया। उन्होंने कहा कि ऐसे कई गिरोह हैं जो लोगों के चेन छीन रहे हैं। साथ ही सार्वजनिक स्थानों से गाड़ियों की चोरी कर रहे हैं। वैसे अपराधियों पर न सिर्फ अंकुश लगाना है बल्कि उनके गिरोह को गिरफ्तार करना बेहद जरूरी है। इसके अलावा 10 सितंबर को आयोजित होने वाले जन समस्या समाधान कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए आम लोगों के बीच जागरूकता फैलाने का निर्देश एसपी ने दिया है। इस बैठक में रामगढ़ एसडीपीओ परमेश्वर प्रसाद, पतरातु एसडीपीओ वीरेंद्र कुमार राम सहित सभी थानों के प्रभारी और सर्किल इंस्पेक्टर मौजूद थे।

**सोन एवं मलय में डूबने से मासूम समेत दो की मौत**

पलामू : सोन एवं मलय नदी में डूबने से चार वर्षीय बच्चे समेत दो की मौत हो गयी जबकि दो बाल-बाल बच गए। दूसरा मृतक 60 वर्षीय बुजुर्ग बताया गया है। परिजनों ने बुजुर्ग के शव को पोस्टमार्टम कराने से किया इनकार कर दिया है। बताया गया है कि हुसैनाबाद के देवरी ओपी क्षेत्र अंतर्गत ग्राम सोनपुरवा निवासी सरयू पासवान (60) की सोमवार सुबह सोन नदी में डूबने से मौत हो गई घटना के बाद स्थानीय प्रशासन ने शव को पोस्टमार्टम के लिए भेजने की प्रक्रिया शुरू की लेकिन मृतक के परिजनों ने पोस्टमार्टम कराने से साफ इनकार कर दिया।

**OFFICE OF THE EXECUTIVE ENGINEER, MINOR IRRIGATION DIVISION, HAZARIBAG.**  
**Short e-Procurement Tender Notice**  
Tender Reference No. :- DMFT/MID/HAZARIBAG/F2-16/2024-25  
Letter no - 994  
Date: 09.09.2024

1.	Name of the work	Construction of Bridge on Golodhab Nala Between Sudan and Salaiyadh Road in Panchayat-Salaiyadh Block- Chalkusha, District- Hazaribag
2.	Estimated Cost (Rs.)	Rs.- 1,49,41,388.89
3.	Time of Completion	11 Months
4.	Date of Publication of e-Tender on website	18.09.2024 at 3:00 P.M (e-Procurement Portal- <a href="http://jarkhandtenders.gov.in">http://jarkhandtenders.gov.in</a> )
5.	Last date/Time for Submission of e-Tender bids Online	26.09.2024 up to 5:00 P.M
6.	Last Date for Online Submission of Tender Fee and EMD	26.09.2024 up to 5:00 P.M
7.	Date of opening of e-Tender	28.09.2024 at 03:00 P.M
8.	Name & address of office Inviting tender	Executive Engineer, Minor Irrigation Division, Hazaribag
9.	Contact no. of e-Procurement officer	06546-270485
10.	E-mail of e-Procurement officer	ecmidhbg-ecmr-jhr@nic.in

Note:- 1). Published Estimated Cost May be Increased or Decreased.  
2). Mode of Submission of Online Tender/Tender Fee/EMD Through <http://jarkhandtenders.gov.in>  
Executive Engineer, Minor Irrigation Division, Hazaribag.  
PR 335172 (Minor Irrigation) 24-25 (D)

**कार्यपालक अभियंता का कार्यालय पथ निर्माण विभाग, पथ प्रमण्डल, रामगढ़ रामगढ़ थाना के सामने, गांधी चौक, रामगढ़ केन्द्र, जिला- रामगढ़, झारखण्ड- 829122, ई-मेल- eercdrangarh-jhr@nic.in**

**एसबीबीडी आधारित अति-अल्पकालीन ई-निविदा आमंत्रण सूचना**  
**ई-निविदा प्रसंग संख्या :- RCD/RAMGARH/ 672/2024-25 (4<sup>th</sup> Call) दिनांक :- 06-09-2024**

1.	कार्य का नाम	IRQP Work of Patratu to Saunda 'D' Road from KM 0.00 to 11.35 Under Road Division, Ramgarh for the of Year 2023-24
2.	प्राक्कलित राशि (रुपये में)	रुपये 6,17,06,862.00 (छः करोड़ सत्रह लाख छः हजार आठ सौ धरात) मात्र
3.	कार्य समाप्ति की अवधि	03(तीन) माह
4.	वेबसाइट पर निविदा प्रकाशित होने की तिथि एवं समय	12/09/2024 10:30 बजे पूर्वाह्न
5.	निविदा प्राप्ति की अंतिम तिथि एवं समय	21/09/2024 12:00 बजे दिन तक
6.	निविदा आमंत्रित करने वाले पदाधिकारी का नाम एवं पता	कार्यपालक अभियंता, पथ निर्माण विभाग, पथ प्रमण्डल, रामगढ़
7.	प्रोक्वोरमेंट पदाधिकारी का सम्पर्क नंबर	98351-25637
8.	ई-प्रोक्वोरमेंट सेल का हेल्प लाईन नंबर	0851-2401010

निविदा की अन्य शर्तें वेबसाइट <http://jarkhandtenders.gov.in> पर देखी जा सकती है।  
पथ निर्माण विभाग, झारखण्ड में निविदा निविदाकारों को UCAN से संबंधित प्रमाण पत्र की छायाप्रति संलग्न करना अनिवार्य है।  
निविदा की राशि घट-बढ़ नहीं करनी।  
Cost of bidding document (Non-refundable fee) & Bid Security as indicated shall be payable online through <http://jarkhandtenders.gov.in>

कार्यपालक अभियंता पं०नि०: पथ प्रमण्डल रामगढ़  
PR 335166 Road(24-25).D

**आदिवासी समाज का अस्तित्व बचाने की लड़ाई को लेकर सेंगेल ने किया ग्राम सभा का आयोजन**

प्रत्युष नवबिहार संवाददाता  
बोकारो : चंदनकियारी प्रखंड के शहरजोड़ी पंचायत गांव में आदिवासी सेंगेल अभियान के द्वारा सेंगेल सभा किया गया। सभा को चंदनकियारी प्रखंड सेंगेल अध्यक्ष राजेश मुर्मू की अध्यक्षता और संचालन चंदनकियारी प्रखंड सेंगेल परगना भुतेल दुदु ने किया। मुख्य अतिथि सेंगेल झारखंड प्रदेश संयोजक करमचंद हांसदा ने सेंगेल सभा को संबोधित करते हुए बताया कि आज आदिवासी समाज मौत के मुहाने पर खड़ा है। आदिवासी समाज का अस्तित्व, पहचान, हिस्सेदारी, भाषा, जल, जंगल जमीन सब कुछ लुटा जा रहा है।



किन्तु आदिवासी गांव समाज के अगुआ मांझी बाबा इन तमाम महत्वपूर्ण जानकारी से अनभिज्ञ हैं। आदिवासी समाज के अधिकार मांझी बाबा अनपढ़, पिथकड़, असंवैधानिक कृत्य, नशाखोरी को बढ़ावा देने वाले हैं। इनको समाज

स्वशोषण करते हैं। इतना ही नहीं इन अनपढ़ और वंश परंपरागत मांझी बाबा को संवैधानिक अधिकारों की जानकारी भी नहीं रखते हैं। यही कारण है कि आज की लगभग 75 सालों बाद भी आदिवासी समाज को धार्मिक पहचान जैसे बुनियादी अधिकार से वंचित रखा गया है किन्तु आदिवासी गांव समाज के आदिवासी सरना धर्म कोड के लिए कोई सहयोग नहीं करते। अतः अब वक्त का तकाजा है कि अनपढ़ और संविधान कानून की जानकारी नहीं रखने वाले मांझी बाबा को बदला जाए अन्यथा आदिवासी समाज का अस्तित्व समाप्त हो जाएगा। मौके पर मौजूद

सेंगेल मांझी परगना मंडवा के प्रदेश अध्यक्ष चंद्रमोहन मार्गी ने कहा कि आदिवासी समाज को बचाने के लिए मांझी बदलो -गांव बचाओ आंदोलन व जनजागरण कार्यक्रम को गांव-गांव तक पहुंचाने की आवश्यकता है। उन्होंने बताया कि पूर्व सांसद श्री सालखन मुर्मू के नेतृत्व में भारत के लगभग सात राज्यों में आदिवासी सेंगेल अभियान कार्यरत हैं जहां मांझी बदलो -गांव बचाओ का कार्यक्रम वृहद रूप से चलाया जा रहा है। निश्चित रूप से यह जनजागरण कार्यक्रम आदिवासी समाज में मूलभूत परिवर्तन लाकर समाज को एक बेहतर दिशा प्रदान करेगा।

**जिला दण्डाधिकारी-सह-उपायुक्त का कार्यालय लातेहार (सामान्य शाखा)**

**विज्ञापन संख्या-01/2024 आवश्यक सूचना**  
एतद द्वारा लातेहार जिला अन्तर्गत चौकीदार के रिक्त पदों पर नियुक्ति हेतु प्रकाशित विज्ञापन संख्या-01/2024 के अभ्यर्थियों को सूचित किया जाता है कि दिनांक-03.09.2024 को आहत चौकीदारी नियुक्ति जिला चयन समिति की बैठक में लिये गये निर्णयानुसार लिखित परीक्षा हेतु दिनांक-19.09.2024 को पूर्वा 10:00 बजे से 11:30 बजे तक तिथि एवं समय का निर्धारण किया गया है। साथ ही लिखित परीक्षा में 1:30 के अनुपात में सफल अभ्यर्थियों का दिनांक- 28.09.2024 को पुलिस लाईन लातेहार में शारीरिक जांच हेतु तिथि एवं स्थान का निर्धारण किया गया है। प्रवेश पत्र निर्गत किये जाने एवं वितरण किये जाने वाले स्थान की सूचना अलग से दी जायेगी।  
PR.NO.335107 District(24-25).D उपायुक्त लातेहार।

**कार्यालय नगर परिषद्, चतरा**

पत्रांक-971/च०P०, दिनांक-09.09.2024  
**आम सूचना**  
सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि नगर परिषद्, चतरा अन्तर्गत चतरा पशु मेला सैरात की बन्दोबस्ती उनको नाम के सामने अंकित अवधि तक के लिए खुली डाक बोली द्वारा दिनांक-20.09.2024 को समय 1:30 बजे अपराह्न से कार्यालय नगर परिषद्, चतरा के सभा कक्ष में की जायेगी। किसी कारणवश उक्त तिथि को डाक नही होने की स्थिति में दिनांक- 21.09.2024 को निर्धारित समय पर डाक होगा।

क्र.	सैरात का नाम	अवधि	सुरक्षित राशि	जमानत राशि
1	चतरा पशु मेला	मेला अवधि तक के लिये	14,62,900.00	1,46,290.00

नोट:- 1. डाक बोलेन का स्थान : कार्यालय नगर परिषद्, चतरा का सभाकक्ष एवं तिथि:- 20.09.2024 को पूर्वाह्न 11:00 बजे।  
2. डाक के नियम एवं शर्तें कार्यालय के सूचना पत्र पर देखा जा सकता है।  
PR 335115 Urban Development (24-25).D प्रशासक, नगर परिषद्, चतरा

**कार्यपालक अभियंता का कार्यालय ग्रामीण विकास विशेष प्रमण्डल सं०-02, गड़वा।**

13 वें वित्त आयोग योजना मद, दिनांक-09.09.2024, PR 333921 Rural Development(24-25)#D अल्पकालीन ई-निविदा सूचना संख्या- RDD/SD/GARHWA/02/2024-25/RE(4th Call)

क्र०	अंश का नाम	आगबंदी केन्द्र का नाम	प्राक्कलित राशि (लाख में)	परिमाण विपत्र राशि	आयन की राशि	कार्य पूर्ण करने की अवधि
1	खरीबी कटाव	बगवन्धपुर सुडी, सुडी बहरवा जिला इतिहासी टोना चेपारिया, टालाकुंड, बंजडी-1, चौदडीह, कुल 06 ई०	66,49,200.00	10000.00	1,33,000.00	06 माह

कार्यपालक अभियंता, ग्रामीण विकास विशेष प्रमण्डल सं०-02, गड़वा।  
PR 335199 (Rural Development) 24-25 (D)

एक नजर

**पोटका में सर्पदंश से 10 वर्षीय बच्ची की मौत**  
जमशेदपुर : पोटका थाना अंतर्गत हेसलअमदा पंचायत के अमलाटोला गांव की रहने वाली 10 वर्षीय रेणु सरदार की सोमवार की सुबह सर्पदंश से मौत हो गई। घटना के समय बच्ची अपने घर में जमीन पर सोई थी। इसी दौरान चित्ती सांप ने उसे काट लिया। बच्ची के चिल्लाने पर परिजन उठे। आनन-फानन में उसे एमजीएम अस्पताल लाया गया। जहां इलाज के दौरान उसकी मौत हो गई। इस घटना के बाद परिवार में शोक व्याप्त हो गया। परिवार के सूरज सरदार ने बताया कि पूरा परिवार जमीन पर सोया था। बच्ची भी एकओर सोयी थी। उसी दौरान रात के तीन बजे सांप ने उसे काट लिया। रेणु सरदार गांव के सरकारी स्कूल में पांचवी कक्षा में पढ़ती थी।

**दो बंडल तार के साथ दो चोर धराए पुलिस ने मेजा जेल**

चाईबासा : सेल के किरीबुरु टाउनशिप स्थित विद्युत सब स्टेशन का ताला तोड़ दो बंडल विद्युत तार की चोरी करने के दो आरोपी दीपक करुवा एवं शिबू करुवा को पुलिस ने गिरफ्तार कर जेल भेज दिया। थाना प्रभारी मुनाजीर हसन ने बताया कि सब स्टेशन से चोरी की शिकायत मिलने के बाद सीसीटीवी से चोरों की पहचान की गई। उसके बाद पुलिस ने दोनों चोरों को उनके घर पर छापेमारी कर पकड़ा। चोरों के घर से चोरी के दो बंडल तार भी बरामद किए गए। दोनों पांच वर्ष पूर्व भी चोरी के अलग-अलग मामले में जेल जा चुका है।

**वर्षा में भीग व जान जोखिम में डाल कर बच्चे जाते हैं स्कूल**

सरायकेला : सारंडा के गांवों के कुछ बच्चों में शिक्षा की ललक इतनी है कि वे हर दिन गर्मी वर्षा, ठंड अथवा भीषण गर्मी में भी स्कूल जाते हैं। 9 सितम्बर की सुबह लगभग 8.20 बजे अप्रैड उच्च विद्यालय प्रोस्पेक्टिंग, किरीबुरु में पढ़ने वाले कुछ बच्चे व बच्चियों को वर्षा में भीगते हुये कपड़ा के अंदर बैग छुपाकर समय से काफी पहले स्कूल जाते देखा गया। यह बच्चे जान जोखिम में डालकर स्कूल का बंद गेट फांदकर अंदर जाते दिखे। बच्चों का यह कदम काफी खतरनाक व जानलेवा साबित हो सकता है। हालांकि स्कूल खुलने का समय सुबह 9 बजे से दोपहर 3 बजे तक है, लेकिन यह बच्चे सुबह सवा आठ बजे से ही स्कूल पैदल आने लगते हैं। ऐसे दर्जनों गरीब बच्चे हैं जिनके पास जूता नहीं है। इसलिये ये चप्पल में ही स्कूल आते हैं। जान जोखिम में डाल गेट फांद कर स्कूल जाने वाले बच्चों को स्वयं अथवा विद्यालय प्रबंधन द्वारा रोके जाने की जरूरत है।

**पुलिस ने चलाया वाहन जांच अभियान**



साहिबगंज : जिला के तालझारी थाना क्षेत्र के कारगिल चौक के सामने सोमवार को पुलिस ने वाहन जांच अभियान चलाया। इस दौरान थाना एसआई मनोज मालवीय एवं हवलदार रामजीत यादव पुलिस जांच संयुक्त रूप से दो पहिया वाहन जांच के लिए बारी-बारी से रोका। जांच अभियान के दौरान विशेष रूप से हेलमेट की जांच की गई। थाना एसआई मनोज मालवीय ने सभी बाइक चालकों को हमेशा हेलमेट पहनकर वाहन चलाने को कहा। उन्होंने कहा कि बिना हेलमेट पहनकर वाहन चलाने के दौरान दुर्घटना में लोगों की जान चली जाती है इसीलिए सभी लोग यातायात नियमों का अनुपालन करें।

**प्री मैट्रिक, पोस्ट मैट्रिक, छात्रवृत्ति की हुई समीक्षा**

प्रत्युष नवबिहार संवाददाता  
साहिबगंज : उपायुक्त हेमंत सती की अध्यक्षता में कार्यालय प्रकोष्ठ में प्री मैट्रिक, पोस्ट मैट्रिक, छात्रवृत्ति से संबंधित समीक्षा बैठक की गई। बैठक में वित्तीय वर्ष 2023-24 में अनुसूचित जनजाति/अनुसूचित जाति एवं पिछड़ी जाति प्रवेशिकोत्तर छात्रवृत्ति योजना अंतर्गत जिला स्तरीय अनुमोदन एवं अनुश्रवण में आईएनओ द्वारा सत्यापन किए गए कुल-9803 छात्र/छात्राओं के डीएनओ लेवल पर 7199 छात्र/छात्राओं के आवेदनों को स्वीकृति किया गया है एवं त्रुटिपूर्ण पाए गए 2482 छात्र/छात्राओं के आवेदनों को लम्बित करते हुए सुधार हेतु छात्र/छात्राओं को वापस किया गया था। जिसमें से 164 छात्र/छात्राओं के द्वारा अपने आवेदनों को सुधार कर डीएनओ स्तर पर पुनः सत्यापन हेतु भेजा गया है। छात्र/छात्राओं के द्वारा त्रुटि सुधार



कर वापस किए गए आवेदनों का पुनः डीएनओ लेवल पर सत्यापन किया जा रहा है। पूर्व में कुल-5284 छात्र/छात्राओं को छात्रवृत्ति की राशि भुगतान हेतु अनुमोदन लिया गया है। वर्तमान में वित्तीय वर्ष 2023-24 में 1915 छात्र/छात्राओं को छात्रवृत्ति की राशि का भुगतान हेतु अनुमोदन लिया जाना है। इस प्रकार सर्वसम्पत्ति से जिला स्तरीय अनुमोदन एवं अनुश्रवण समिति द्वारा डीएनओ स्तर पर वित्तीय वर्ष

डीएनओ के द्वारा लम्बित किए गए आवेदनों के त्रुटि का नियमानुसार निराकरण कराते हुए शत-प्रतिशत सुयोग्य छात्र/छात्राओं को सात दिनों के अन्दर छात्रवृत्ति भुगतान करने हेतु अग्रतः कार्यवाई करेंगे। डीएनओ के द्वारा लम्बित किए गए आवेदनों को दैनिक समाचार पत्रों के माध्यम से भी प्रकाशन किया जाय ताकि संबंधित संस्थान एवं छात्र/छात्राओं को लम्बित आवेदनों की सूचना प्राप्त हो सके। जिला अग्रणी बैंक प्रबंधक, साहेबगंज को निर्देश दिया गया कि साहेबगंज जिला अंतर्गत सभी बैंकों को अपने स्तर से सूचित करें कि कोई भी छात्र/छात्रा अपने आधार को बैंक खाते से लिंक करने के लिए शाखा में आते हैं तो विशेष रूचि लेते हुए आधार लिंक करेंगे। वित्तीय वर्ष 24-25 में प्री मैट्रिक छात्रवृत्ति योजना अंतर्गत इस वित्तीय वर्ष 2024-25 में कुल-62649 छात्र-छात्राओं का

संक्षिप्त खबरें

**पंचायत में सरकार आपके द्वार शिविर में पहुंचे ग्रामीण, किया आवेदन**



पटमदा : बोडाम प्रखंड के मुकरुडीह पंचायत भवन में आपकी योजना आपकी सरकार आपके द्वार शिविर लगाकर पंचायत के जनता को सरकार की जन लाभकारी योजना से लाभान्वित किया गया इस दौरान पंचायत की मुखिया बिनती हासदा ने पंचायत की सभी जनता का शिविर में योजना का लाभ दिलाने में सहयोग किया उन्होंने बताया कि पंचायत की जनता को अधिक से अधिक संख्या में सरकार की योजनाओं का लाभ दिलाने का प्रयास किया जाएगा इस दौरान शिविर में बोडाम अंचलधिकारी रंजीत रंजन ने शिविर का शुभारंभ किया इस दौरान प्रशासन के द्वारा सभी विभागों से जुड़े स्टॉल लगाकर संबंधित योजनाओं की जानकारी दी गई। वहीं स्वास्थ्य विभाग के द्वारा शिविर में उपस्थित जनता का स्वास्थ्य जांच डॉ सोमेन के द्वारा करते हुए। दवा का वितरण किया गया।

**तालझारी स्टेशन पर कूड़ा- कचरा का लगा अम्बार**



साहिबगंज : जिला के तालझारी रेलवे स्टेशन के प्लेटफार्म नंबर 1 के सेड के पास गंदगी का लगा अम्बार। जहां रेलवे सरकार सफाई को लेकर करोड़ों-करोड़ों रुपए खर्च करने में लगे हैं, वहीं मालदा डिवीजन के अंतर्गत तालझारी रेलवे स्टेशन पर गंदगी का अम्बार लगा रहता है। जिससे सफर कर रहे यात्री जब ट्रेन पकड़ने स्टेशन के सेड पर आकर बैठते हैं तो गंदगी का लगा अम्बार से जो दुर्गंध आती है उस से यात्री बहुत ज्यादा परेशान हो जाते हैं, जिसमें स्टेशन प्रबंधक इनकी कोई सुध तक नहीं लेते हैं। इसलिए रेलवे के वरिष्ठ पदाधिकारी इस विषय को गंभीरता से सज्जान में लेकर इस पर तुरंत कार्यवाई करें।

**विभिन्न मांगों को लेकर झारखंड ड्राइवर महासंघ ने की बैठक**



सरायकेला : झारखंड ड्राइवर महासंघ के सदस्यों ने सोमवार को विभिन्न समस्याओं व मांगों को लेकर गुवा में बैठक की। बैठक में कहा गया कि अपनी 12 मांगों में से 6 मांगों का जल्द समाधान के लिए झारखंड के परिवहन मंत्री से गुहार लगायी गयी है। झारखंड महासंघ के प्रदेश अध्यक्ष गुलशन कारजी ने कहा कि मांग पत्र सौंपने के लगभग तीन महीने बाद भी उनकी मांगों पर किसी प्रकार की प्रतिक्रिया नहीं आई है। इससे ड्राइवर महासंघ में काफी रोष है। लोगों की सेवा के उद्देश्य से अक्सर वाहन चालक अपने परिवार को छोड़ घर से बाहर रहते हैं। ऐसे में किसी प्रकार की दुर्घटना का शिकार हो कर अपने किसी अंग को क्षति पहुंचने पर उनका पूरा परिवार बिखर जाता है। सरकार की विभिन्न योजनाओं में वाहन चालकों के लिए भी भविष्य निधि, बीमा, स्वास्थ्य कार्ड, आवास जैसी कई सुविधाओं पर विचार करने की जरूरत है। मौके पर पूर्वी सिंहभूम, मनोहरपुर, नोवामुंडी, हाट गम्हरिया, गुवा व विभिन्न स्थानों से आए वाहन चालकों में महेश बिरवा, जगमोहन पिंगुवा, मोहन लागुरी, राजकुमार बोसा, किशोर दास, बीरु साहु, बुधराम लागुरी एवं अन्य सदस्य मौजूद थे।

**आंगनबाड़ी केंद्र के निर्माण में घंटिया सामग्री लगाने का आरोप**



साहिबगंज : जिला के तालझारी प्रखंड क्षेत्र के अंतर्गत बांस पहाड़ पहला टोला में आंगनबाड़ी केंद्र निर्माण कार्य कराया जा रहा है। जिसमें टेकेदार द्वारा मनमानी ढंग से काम को किया जा रहा है जिसमें घंटिया किसका का मेटेरियल में डस्ट, मिट्टी दार बालू, तीन नम्बर ईंट का प्रयोग किया जा रहा है। जिसको लेकर ग्रामीण ने टेकेदार को अलग कराया कि कार्य में अनियमितता बरती जा रही है, परंतु टेकेदार द्वारा अनदेखा करते हुए अपने मुंशी को कार्य चालू रखने को कहा ग्रामीण द्वारा शिकायत करने पर भी उस पर विचार नहीं करते हुए अपने वर्चस्व से घंटिया सामग्री लगाने से बाज नहीं आए। इसकी शिकायत जई से भी की गई। जई अजीत ने बताया कि इसका जांच कर इसपर तुरंत कार्यवाई करने का अश्वासन दिया गया है। झारखंड सरकार के द्वारा विकास के कार्य के लिए करोड़ों- करोड़ों रुपए खर्च कर रहे हैं ताकि विकास का कार्य हो सके लेकिन टेकेदार द्वारा मनमानी ढंग से कार्य करा कर जैसे-तैसे करके कार्य को पूरा करने में लगे हुए हैं। जिस स्थल पर आंगनबाड़ी केंद्र का भवन निर्माण कार्य कराया जा रहा है वहां पर कार्य विभागीय इंजीनियर की देखरेख में होना था परंतु टेकेदार के मनमानी के कारण बिना विभाग इंजीनियर के द्वारा ही कार्य कराया जा रहा है। इस कार्य स्थल में योजना का बोर्ड लगाया जाना था परंतु किस मद से यह योजना कराया जा रहा है और कितने राशि की है परंतु कार्यस्थल पर किसी भी तरह का कोई बोर्ड नहीं लगाया गया है। ऐसे घंटिया सामग्री का प्रयोग किया जा रहा है।

**शक्ति केंद्रों में बूथ सशक्तिकरण को लेकर बैठक संपन्न**



पटमदा : भाजपा झारखंड प्रदेश नेतृत्व के निर्देश पर कमलपुर मंडल के नौ शक्ति केंद्रों में मंडल प्रभारी सह जिला उपाध्यक्ष प्रदीप कुमार बेसरा के उपस्थिति में बूथ सशक्तिकरण को लेकर समीक्षा बैठक संपन्न हुआ। कमलपुर मंडल के शक्ति केंद्रों मुकरुडीह, रसीकनगर, कमलपुर, बांगुडदा, कशराम, बनकुचिया, आडिया, कुमारी, बिडरा में अलग अलग प्रभारी और प्रवासी की उपस्थिति में बैठक रखा गया। इस दौरान शक्ति केंद्रों में प्रदीप कुमार बेसरा, प्रदीप कुमार मंडल, संदीप मिश्रा, मुक्तिराम बांडी, आदित्य माहली, प्रधान महतो, कुपारिचू महतो, परीक्षित महतो, सुकेन महतो, किसान महतो प्रभारी के रूप में उपस्थित थे।

**ईवीएम और वीवीपैट मशीनों की प्रथम जांच की प्रक्रिया आठवें दिन भी जारी**



प्रत्युष नवबिहार संवाददाता  
साहिबगंज : जिला निर्वाचन पदाधिकार-सह उपायुक्त हेमंत सती की निगरानी में साहेबगंज के ईवीएम स्ट्रॉन्ग रूम में यह महत्वपूर्ण कार्य किया जा रहा है। जांच प्रक्रिया के दौरान, ईवीएम और वीवीपैट मशीनों का सावधानीपूर्वक निरीक्षण किया जा रहा है ताकि चुनाव प्रक्रिया में किसी भी प्रकार की तकनीकी या भौतिक गड़बड़ी को रोका जा सके। राजनीतिक दलों के प्रतिनिधियों की उपस्थिति में मशीनों की सफाई और तकनीकी परीक्षण, मॉक पोलिंग, किया जा रहा है। आज उपायुक्त -सह -जिला निर्वाचन पदाधिकारी हेमंत सती ने ईवीएम और वीवीपैट

**पूर्व मंत्री आलमगीर आलम के निजी आवास पर पहुंचे उत्तराखंड के कांग्रेस प्रदेश प्रभारी**



प्रत्युष नवबिहार संवाददाता  
बरहरवा : पुर्व ग्रामीण विकास मंत्री आलमगीर आलम साहब जी के निजी आवास इस्लामपुर में पंच उत्तराखंड से चल कर आई यूथ कांग्रेस प्रदेश प्रभारी इशिता सेटानी दिल्ली से चल कर आए राष्ट्रीय कोऑर्डिनेटर सुशील आलम जी, राष्ट्रीय को ऑर्डिनेटर सह पाकुड़ विधानसभा प्रभारी रोहित तिवारी जी, पुर्व ग्रामीण विकास मंत्री आलमगीर आलम साहब की अहलिया निशत आलम जी, प्रखण्ड बीस सूत्री अध्यक्ष अशोक दास जी, रैसूल आलम जी ,पाकुड़ विधानसभा अध्यक्ष रबीउल आलम, बरहरवा युवा प्रखण्ड अध्यक्ष दिलदार आलम जी, स्टेट सोशल मीडिया च्याइंट को-कोडिनेटर नाबिद अंजुम जी, सैफ आलम जी, सकली जी, सब्बीर जी और तमाम युवा कांग्रेस के कार्यकर्ता एवं सोशल मीडिया बंधु सभी लोगों की उपस्थिति में युवा संवाद कार्यक्रम हुआ। जिसका मुख्य

लक्ष्य आने वाले 2024 के विधानसभा चुनाव है। झारखंड प्रदेश प्रभारी इशिता मैडम जी ने कहा कि 2024 के विधानसभा चुनाव में जाति-समुदाय से ऊपर उठें तो गेम चेंजर कहलाएंगे युवा अभी तक माना जाता था कि घर के बुजुर्ग और समाज के जो लोग कह देते थे, परिवार के सभी लोग उसी तरह मतदान करते थे। मगर अब युवा का परिदृश्य बदल रहा है। युवा अपने भविष्य को लेकर जागरूक हैं। जो उनकी बात करेगा, उसी को वह मतदान करेंगे। दो बार झारखंड का युवा गेम चेंजर साबित होगा। हमारे पाकुड़ विधानसभा क्षेत्र से पार्टी का जो भी कैडिडेट खड़ा हो उनको भारी से भारी संख्या में अपना कीमती वोट देकर जिताकर विधानसभा भेजने का काम करना है। ताकि एक मजबूत सरकार का निर्माण हो। पुर्व ग्रामीण विकास मंत्री आलमगीर आलम साहब की अहलिया निशत आलम जी ने भी युवाओं में जोश भरने का काम किया है। पाकुड़ विधानसभा प्रखंड युवा संवाद कार्यक्रम में रविवार को निशत आलम जी ने कार्यकर्ताओं को विधानसभा चुनाव के लिए तैयार रहने की सीख दी। कहा कि इस चुनौती से लड़ने के लिए तैयार रहिए।

**भाजपा कार्यकर्ता तमाम बूथों को सशक्त करें : मधु कोड़ा**



प्रत्युष नवबिहार संवाददाता  
सरायकेला : मेघाहातुबुरु स्थित भाजपा कार्यालय में पूर्व मुख्यमंत्री मधु कोड़ा बूथ सशक्तिकरण कार्यक्रम में शामिल हुये. यहां सारंडा मंडल अंतर्गत किरीबुरु पश्चिम, किरीबुरु पूर्वी, मेघाहातुबुरु उत्तरी एवं मेघाहातुबुरु दक्षिणी पंचायत के सभी बूथों को भाजपा कार्यकर्ताओं के माध्यम से सशक्त करने का कार्य किया जा रहा है. इस दौरान हर बूथ पर 60 मतदाताओं के बीच एक पन्ना प्रमुख, बूथ अध्यक्ष समेत बूथों से जुड़ी तमाम कमिटी व सदस्यों का गठन किया जा रहा है। प्रधानमंत्री के कार्यक्रम में सभी बूथों से कार्यकर्ता होंगे शामिल मधु कोड़ा ने कहा कि पूरे झारखंड में 8 एवं 9 सितंबर को भाजपा द्वारा

**सीआरपीएफ के शहीद जवान का पार्थिव शरीर तिरंगा में लिपटकर पहुंचा घर**



प्रत्युष नवबिहार संवाददाता  
साहिबगंज : एंटी नक्सल ऑपरेशन के दौरान शहीद सीआरपीएफ जवान मोहम्मद शहनवाज का पार्थिव शरीर ताबूत में बंद तिरंगा में लिपटकर साहिबगंज कुलीपाड़ा स्थित घर पहुंचा। शहिद की आखरी दीदार करने हेतु हजारों की संख्या में लोग राष्ट्रीय झंडा लेकर साक्षरता चौक से शहिद के घर तक सड़क के दोनों किनारों पर खड़े होकर अमर शहीद शहनवाज अमर रहे का नारा लगा रहे थे। तिरंगे से लिपटा ताबूत में

**सुपुर्दे खाक हुआ शहीद सीआरपीएफ जवान शहनवाज का पार्थिव शरीर**



प्रत्युष नवबिहार संवाददाता  
साहिबगंज : शहीद सीआरपीएफ जवान मो0 शहनवाज आलम का पार्थिव शरीर छत्तीसगढ़, रायपुर से हवाई जहाज से रविवार की सुबह 8:45 बजे उड़ान भरा। वहाँ कोलकाता के दमदम एयरपोर्ट पर सुबह 10:05 बजे लैंड किया। फिर वहाँ से पार्थिव शरीर सड़क मार्ग से रविवार की रात लगभग 9:40 बजे साहिबगंज शहर के कुलीपाड़ा मोहल्ला स्थित शहीद के घर पहुंचा। इसके पूर्व जगह-जगह स्थानीय थाना पुलिस ने स्कॉर्न किया। इधर शहर के साक्षरता चौक पर जवान के स्वागत के लिए लोगों की भारी भीड़ उमड़ पड़ी। वहाँ जुटी लोगों की भीड़ ने शहनवाज जिंदाबाद, शहनवाज अमर रहे, अमर रहे, भारत माता की जय के नारे लगाए। कारकेट व सीआरपीएफ वाहन के पीछे हजारों बाइक में हाथों में राष्ट्रीय झंडा लिए शहनवाज के पार्थिव शरीर को पुलिस लाइन, पूर्वी

फाटक, किवदई पथ, पुरानो साहिबगंज, नया टोला, बड़तल्ला होते हुए कुलीपाड़ा मेन रोड पहुंचा। जहां पहले से ही लोगों का हजूम उसके इन्तजार में था। शहनवाज के पहुंचते ही एकबार फिर भारत माता की जय के नारों से आसमान गूंज उठा। यहां से सीआरपीएफ के जवान कैफोन लेकर शहनवाज के घर पहुंचे। जहां घर के बाहर स्वागत स्थल पर कैफोन रखा गया। शहनवाज की एक झलक पाने के लिए हजारों लोगों की भीड़ उमड़ पड़ी थी। तिरंगे को सम्मान के साथ उसकी पत्नी को समर्पित किया गया। फिर वहाँ कैफोन खोल उसकी पत्नी, पुत्र, पिता, भाइयों व परिजनों को अंतिम दर्शन कराया गया। पत्नी रुखसना खातून के आंसू रुक नहीं रही थी। बार-बार कह रही थीं कि इतनी जल्दी चले गए अभी तो देश की रक्षा

जिन्दाबाद, भारत माता की जय, देश की आर्मी जिंदाबाद, शहनवाज अमर रहे, अमर रहे के नारों से आसमान गूंज उठा। हर घर गली से लोग यात्रा के दर्शन कर रहे थे। जगह-जगह छतों व बालकोनी से लोगों ने अंतिम दर्शन किया। अंतिम यात्रा ग्रीन होटल, स्टेशन रोड, पटेल चौक, स्वामी विवेकानंद चौक, महात्मा गांधी चौक, चौक बाजार, एलसी रोड, पश्चिमी फाटक होते हुए कब्रिस्तान पहुंचा। यहाँ इंदगह परिसर में सीआरपीएफ के 8 जवानों की टुकड़ी ने और सभी ने दो मिनिट का मौन रखा। शस्त्र झुकाया, 3 चक्र कुल 24 गोली फायर के जवान को सलामी दी। इसके पूर्व उपायुक्त हेमंत सती, पुलिस अधीक्षक अमित कुमार सिंह, सदर एसडीओ अंगार नाथ स्वयंकार सहित सीआरपीएफ के सभी, डीएसपी सहित परिजनों ने शहीद जवान के पार्थिव शरीर पर श्रद्धांजलि अर्पित की।

एक नजर

महिला पुलिस ने सेक्रेड की छात्राओं को किया जागरूक

कोडरमा : सेक्रेड हार्ट स्कूल में छात्राओं के बीच सोमवार को जागरूकता कार्यक्रम आयोजित कर उन्हें कई बातों की जानकारी दी गई। महिला थाना प्रभारी पिंकी रानी ने छात्राओं को गुड टच, बैड टच की जानकारी दी। उन्होंने टोल फ्री नंबर 112 पर महिला अपराध से सम्बंधित किसी भी प्रकार की जानकारी दिए जाने की बात कही। उन्होंने बच्चियों को सोशल मीडिया से सावधान रहने, फेसबुक, व्हाट्सएप से दूर रहने, अनजान आदमी का फ्रेंड रिक्वेस्ट को स्वीकार न करने, अनजान लिंक पर क्लिक न करने और साइबर फ्रॉड की जानकारी दी। इसके लिए टोल फ्री नंबर 1930, चाइल्डलाइन हेल्प नंबर के बारे में बच्चों को जानकारी दी गई। इसके अलावा चाइल्ड मैरिज और ट्रैफिक रुल्स की जानकारी दी। पुलिस कंट्रोल रूम का नंबर और किसी तरह की शिकायत होने पर इस नंबर पर कॉल करने की बात कही। इस मौके पर बच्चों ने भी बहुत सारे सवाल पूछे जिनका उन्होंने जवाब दिया। उन्होंने भी बच्चों से सवाल पूछे जिनका जवाब बच्चों के द्वारा बखूबी दिया गया। इस मौके पर प्रचार प्रमोद कुमार शर्मा, एकेडमिक कोऑर्डिनेटर प्रवीण कुमार, संजय तिवारी, सुभय कुमार, शशि राज और रणजीत सिंह सहित वलास 9 से 12 तक की लगभग एक सौ लड़कियां मौजूद थीं।

स्काउट गाइड का प्रशिक्षण शुरू

लोहरदगा : भारत स्काउट और गाइड जीवन में आपसी बंधुत्व की बनाए रखने का संदेश देता है। यह बात उर्लाइन बालिका उच्च विद्यालय में भारत स्काउट और गाइड के तत्वाधान में आयोजित सात दिवसीय तृतीय सोपान प्रशिक्षण समारोह का शुभारंभ झंडोलतोलन के साथ करते हुए मुख्य अतिथि डीएसई दास सुनंदा चंद्रमौलेश्वर ने कही। दास सुनंदा ने स्काउट गाइड के बच्चों से मुखातिब होते हुए कहा कि संस्था बच्चों के उज्ज्वल भविष्य के साथ, जीवन में चुनौतियों से संघर्ष करने की दिशा में कार्य करता है। भारत स्काउट गाइड बच्चों में अनुशासन के साथ साहसी बनने की सीख देता है। उर्लाइन बालिका उच्च विद्यालय की प्रिंसिपल सिरटर आश्रिता कंडूलना ने संस्था द्वारा विभिन्न अवसरों पर किए गए कार्यक्रम सराहनीय बताया और कहा कि सच्चे मन से बच्चे आगे बढ़ें। लक्ष्य की प्राप्ति करें।

संस्कृत पाठशाला की 52वीं कड़ी संपन्न



मेदिनीनगर (पलामू) : पलामू का इतिहास पुस्तक में अध्ययन के दौरान पलामू के साहित्यकारों के बारे में पढ़ने को मिला। मैं समझता हूँ कि दुनिया के साहित्य पर लिखने के बजाय पलामू के साहित्य और साहित्यकारों पर काम किया जाए तो बहुत बड़ा काम होगा। यह काम यहां के साहित्यकारों को और हिंदी विषय से जुड़े शोधार्थियों को करने की जरूरत है। पलामू में विश्वविद्यालय स्थापित है। इस विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग या साहित्य के किसी अन्य भाग के विभाग इस कार्य को कर सकती है। अभी पलामू के साहित्य पर बहुत ही कार्य करना बाकी है। उक्त बातें इटावा संचालित संस्कृतिक पाठशाला की 52वीं कड़ी में पलामू का साहित्य व विषय पर आयोजित परिचर्चा के दौरान अपने अध्यक्ष के वक्तव्य में शिक्षक अरुण लाल प्रजापति ने कही। उन दोनों भाइयों ने राधा कृष्ण प्रजापति की पांडुलिपियों को संभाल कर रखा है। उनके द्वारा किए गए इस कार्य से पलामू का साहित्य समृद्ध होगा। दोनों भाइयों ने जो इस कार्य को किया है पलामू के साहित्य के लिए महत्वपूर्ण योगदान है।

पलामू सांसद की अध्यक्षता में जिला विकास समन्वय एवं निगरानी समिति की हुई बैठक

प्रत्युष नवबिहार संवाददाता  
मेदिनीनगर (पलामू) : जिला विकास समन्वय एवं निगरानी समिति (दिशा) की बैठक सोमवार को समाहरणालय के सभागार में पलामू सांसद विष्णु दयाल राम की अध्यक्षता में संपन्न हुई। इस दौरान जिले में आम लोगों के लिए चलाई जा रही विभिन्न केंद्र एवं राज्य सरकार की योजनाओं की विस्तृत समीक्षा की गई। जलजीवन मिशन के अंतर्गत पेयजल संहित अन्य योजनाओं की धीमी प्रगति पर उन्होंने नाराजगी व्यक्त की। बैठक के दौरान पिछली बैठक में दिए गए निर्णयों एवं अनुपालन के विषय पर भी चर्चा की गई। बैठक में मनरेगा, प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना, सामाजिक सुरक्षा पेंशन, प्रधानमंत्री



ग्रामीण आवास योजना, स्वच्छ भारत मिशन योजना, राष्ट्रीय ग्रामीण पेयजल कार्यक्रम, प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना, राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन, सर्व शिक्षा अभियान, समेकित बाल विकास ग्रामीण, पीएम फसल बीमा योजना आदि की समीक्षा की गई। उन्होंने संबंधित अधिकारियों से सवाल-जवाब भी किया। भूमि संरक्षण विभाग के पदाधिकारियों को आवेदन लेकर अधिकाधिक लोगों को तालाब देने हेतु आदेशित किया। वहीं सांसद राम ने बताया कि प्रधानमंत्री आवास योजना ग्रामीण के अंतर्गत लोगों को आवास निर्माण हेतु अब 2 लाख रुपए मिलेगा। जिसके तहत विभिन्न

प्रखंडों को आवश्यकता अनुसार बजट दिया जा चुका है। संबंधित पदाधिकारियों को आवास निर्माण द्रुत गति से कराने हेतु सांसद राम ने आदेशित किया। बैठक में समीक्षा के दौरान जनप्रतिनिधियों ने जिले में विभिन्न विभागों द्वारा किए जा रहे कर्मियों को लेकर अध्यक्ष को अवगत कराया जिस पर अध्यक्ष ने लक्ष्य आधारित कार्यों को समय पर पूर्ण करने का निर्देश दिया। पलामू में प्रतिवर्ष घट रहे लिंगानुपात पर चिंता जाहिर करते किया और बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ जैसी महिलाओं के उत्थान हेतु चलाये जा रहे विभिन्न कल्याणकारी योजनाओं के संबंध में और अधिक प्रचार-प्रसार करने हेतु आदेश दिया, ताकि भ्रूण हत्या पर रोक लगाई जा सके। सदर अस्पताल की गंदगी एवं मरीजों को मिल रहे अगुणवत्ता पूर्ण भोजन पर भी सवाल उठाया जिस पर जेएसएलपीएस के महिलाओं को दीदी कैटीन योजना के तहत कैटीन चलाने हेतु प्रस्ताव रखा गया। सांसद ने सदर अस्पताल में लग रहे वाहन पार्किंग चार्ज को हटाने का मामला उठाया उन्होंने कहा कि परिक्रम आपातकाल में अपने मरीज को लेकर पहुंचते हैं परंतु पार्किंग वाले वहां तुरंत पैसा मांगने पहुंच जाते हैं तो परिक्रम पहले पार्किंग पर्वी कटवा आएं या मरीज को भर्ती करवाएं। जिस पर पार्किंग शुल्क दो घंटे बाद लेने हेतु संबंधित विभाग को आदेशित किया गया।

लोहरदगा उपायुक्त ने खनन टास्क फोर्स की बैठक में दिए निर्देश



प्रत्युष नवबिहार संवाददाता  
लोहरदगा : उपायुक्त डॉ वाघमारे प्रसाद कृष्ण की अध्यक्षता में आज खनन टास्क फोर्स की बैठक समाहरणालय सभागार में हुई। बैठक में थाना वार अवैध बालू उठाव व अवैध खनिज परिवहन को लेकर की गई कार्रवाई की समीक्षा की गई। बैठक में सभी अंचल अधिकारियों व थाना प्रभारियों को संयुक्त रूप से छापेमारी अभियान चलाये जाने, कार्रवाई का प्रतिवेदन खनन पदाधिकारी व उपायुक्त कार्यालय में समर्पित करने का निर्देश दिया गया। उपायुक्त ने कहा कि 15 अक्टूबर तक एनजीटी के आदेशानुसार नदियों से बालू का खनन व उठाव बंद है। ऐसे में इस आदेश का पालन अक्षरशः अपने-अपने क्षेत्र में सभी पदाधिकारी व थाना प्रभारी कराएं। अवैध रूप से बॉक्साइट, आयरन, कोयला आदि का परिवहन करनेवालों पर भी कार्रवाई की जाए। सभी आदेशों का अनुपालन कराएं। बैठक में पुलिस अधीक्षक हारिस बिन जर्मा, जिला परिवहन पदाधिकारी संजय कुमार, अपर समाहर्ता जीतेंद्र मुण्डा, अनुमण्डल पदाधिकारी अमित कुमार, सहायक खनन पदाधिकारी, सभी अंचल अधिकारी, सभी थाना प्रभारी समेत अन्य उपस्थित थे।

पलामू पुलिस ने छह मवेशी तस्करो को किया गिरफ्तार, भेजा जेल

प्रत्युष नवबिहार संवाददाता  
मेदिनीनगर (पलामू) : पलामू पुलिस ने 6 मवेशी तस्करो को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया है। इस संबंध में प्रशिक्षु एसपी राकेश कुमार सिंह ने बताया कि पुअनि विपिन कुमार, नावाबाजार थाना गश्ती दल के साथ दिनांक-08.09.2024 को रात्रि गश्ती में क्षेत्रान्तर्गत भ्रमणशील थे। दिनांक-09.09.24 के रात्रि के करीब 01 बजे पु०अ०नि० विपिन कुमार को गुप्त सूचना मिली कि पड़्या मोड़ से छतरपुर के तरफ 04 कंटेनर में अवैध रूप से क्रूरता पूर्वक मवेशी को लोड कर तस्करी हेतु ले जाया जा रहा है। तत्पश्चात प्राप्त सूचना से तत्काल वरीय पदाधिकारी को अवगत कराते हुए पु०अ०नि० विपिन कुमार गश्ती दल के साथ नावाबाजार थाना के सामने चेकपोस्ट पट्टीचे एवं यहाँ से गुरजन वैली वाहन की चेकिंग करने लगे। जाँच के क्रम में रात्रि करीब



0130 बजे ईटको मोड के तरफ से 04 कंटेनर तेज गति से आता हुआ दिखाई पड़ा, जिसे पुलिस बल के द्वारा रुकने के ईशारा किया गया तो चारो कंटेनर के चालक पुलिस को हीं कुचलने का प्रयास करते हुए वाहन को और तेजी से भगाने लगे। जिससे पुलिस किसी प्रकार स्वयं को संभालते हुए बाल-बाल बची तथा पुनः चारो कंटेनर का पीछ कर नावाबाजार पार ग्रीड के पास बड़ी गाड़ी के मदद से सड़क को अवरोध कर सभी कंटेनर को रोका गया। कंटेनर रुकते हीं उसमें सवार चालक एवं उनके साथ पुलिस बल को देखकर भागने का प्रयास करने लगे, जिनमें से कुल-06 लोगो को पुलिस द्वारा खदेड़ कर पकड़ा गया एवं 02 लोग धक्की मुक्की कर भाग निकले। उक्त चारो कंटेनर की जाँच पड़ताल करने पर चारो कंटेनर से कुल 149 मवेशी (भैस-भैसा) को विधिवत जप्त किया गया तथा पकड़े गये सभी 06 लोगो को गिरफ्तार कर अग्रतर कार्रवाई की जा रही है।

सफाई कर्मियों की हड़ताल की अनदेखी न करे सरकार : भाकपा



प्रत्युष नवबिहार संवाददाता  
मेदिनीनगर (पलामू) : भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी के वरिष्ठ नेता सुनंदा सिंह एवं पलामू जिला सचिव सह राष्ट्रीय परिषद सदस्य रुचिर कुमार तिवारी ने बयान प्रसारित कर कहा कि झारखंड सरकार के मुख्यमंत्री हेमंत सोरन ने झारखंड के कर्मचारी जो हड़ताल पर बैठे हुए थे उनकी लगभग मांगों को पूरा करके कुछना कुछवादा पूरा कर दिया जो एक सार्थक काम हुआ वहीं दूसरी हो नगर निगम एवं नगर परिषद के सफाई कर्मों जो आज एक महीना के करीब अपनी जायज मांगों को लेकर हड़ताल पर बैठे हुए हैं लेकिन उनकी बातों को अनसुनी करना गरीबों एवं समाज के सबसे महत्वपूर्ण व्यक्तिसफाई कर्मियों के साथ अन्याय है उनके हड़ताल के कारण शहर के अंदर चारों ओर गंदगी फैला हुआ है जिससे तरह-तरह की बीमारियां बरसात में उत्पन्न हो सकती है

एवं शहर वासियों का रोड या सड़क के किनारे चलना भी मुश्किल हो गया है चारों तरफ केवल कुड़ा-कचरा एवं दुर्गंध ही दुर्गंध नजर आ रही है और निगम और नगर निकाय के कर्मचारी एवं पदाधिकारी आंख बंद किए हुए मौज उड़ा रहे हैं राज्य के नगर विकास मंत्री मिथिलेश ठाकुर इसके प्रति आंख बंद किए हुए हैं जो मजदूर विरोधी कदम है। भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी पलामू जिला परिषद सफाई मजदूर के साथ पूर्ण रूप से सहानुभूति रखती है एवं झारखंड सरकार से यह मांग करती है कि अभिलंब सरकार सफाई कर्मियों के संगे से बात करके उनके जायज स्वीकार करते हुए उनके हड़ताल को समाप्त कारे जिससे सफाई काम सुचारु रूप से हो सके।

खूंटी और तोरपा में जन शिकायत समाधान कार्यक्रम आज, प्रचार वाहन रवाना



प्रत्युष नवबिहार संवाददाता  
खूंटी : खूंटी जिले के नागरिकों की शिकायतों का त्वरित एवं प्रभावी निवारण तथा पुलिस और नागरिकों के बीच अविश्वास तथा दूरी को समाप्त करने के उद्देश्य से दस सितंबर मंगलवार को जिले में जन शिकायत समाधान कार्यक्रम का आयोजन किया जाएगा। कार्यक्रम में आमजनों की सहभागिता सुनिश्चित करने एवं उन्हें कार्यक्रम की पूर्ण जानकारी उपलब्ध कराने के उद्देश्य से सोमवार को पुलिस अधीक्षक अमन कुमार ने नगर भवन खूंटी से हरी झंडी दिखाकर कार्यक्रम के प्रचार वाहन को रवाना किया। यह वाहन जिले के सुदूरवर्ती क्षेत्रों में जाकर आमजनों को कार्यक्रम की जानकारी देगा। जन शिकायत समाधान कार्यक्रम का आयोजन खूंटी पुलिस अनुमण्डल के पांच थाना खूंटी, गुरह, सावको, अड़की एवं मारंगहादा थाना के लिए नगर भवन, खूंटी में तथा तोरपा पुलिस अनुमण्डल के तीन थाना तोरपा, तपकरा एवं रनिया थाना क्षेत्र के लिए तोरपा स्थित सभागार (तोरपा थाना परिसर) में किया जाएगा। निर्धारित तिथि एवं समय पर खूंटी पुलिस अनुमण्डल अन्तर्गत खूंटी, गुरह, अड़की, सावको एवं मारंगहादा थाना क्षेत्र के निवासी अपनी शिकायतों के निष्पादन के लिए नगर भवन, खूंटी में तथा तोरपा पुलिस अनुमण्डल अन्तर्गत तोरपा, तपकरा एवं रनिया थाना क्षेत्र के लिए अनुमण्डल पुलिस पदाधिकारी कार्यालय, तोरपा स्थित सभागार में जन शिकायत समाधान कार्यक्रम में भाग ले सकते हैं।

संक्षिप्त खबरें

गला काटकर महिला की हत्या, जांच में जुटी पुलिस



मेदिनीनगर (पलामू) : शहर थाना क्षेत्र के कुंड मोहल्ला निवासी सहाबू अंसारी की पत्नी सायरा बानो उम्र 45 वर्ष की बीती रात अज्ञात अपराधियों ने धारदार हथियार से गला-पिता के बीच किसी विवाद को उसकी स्थिति गंभीर हो गई। इसके बाद परिजनों के द्वारा घायल को इलाज के लिए मेदिनीनगर मेडिकल कॉलेज अस्पताल लाया गया। जहां इलाज के क्रम में महिला सायरा बानो की मौत हो गई। वहीं घटना की जानकारी मिलने पर शहर थाना की पुलिस टिओपी वन प्रभारी इंद्रदेव पासवान, टाइगर मोबाइल रोहित कुमार, विनोद यादव, इसरार खान अस्पताल पहुंचकर घटना से संबंधित मामले की छानबीन में जुट गए हैं। वहीं इस घटना के बारे में मृतक सायरा बानो के बड़े पुत्र गुरू अंसारी ने बताया कि कुछ दिन पहले उसके पिता-पिता के बीच किसी विवाद को लेकर झगड़ा हुआ था। इसके बाद उसके पिता सहाबू अंसारी परिवार से अलग रहकर बाहर दिल्ली में मजदूरी का काम करता था। वहीं पत्नी सायरा बानो से मेल मिलाप होने के बाद 15 दिन पहले सहाबू अंसारी अपना घर आया था वहीं हत्या के बाद से सहाबू अंसारी अपने घर से फरार है। परिजनों का सहाबू अंसारी पर हत्या करने का शक है। वहीं बेटा गुरू अंसारी ने बताया कि रात को सहाबू अंसारी उसे डाल्टनगंज रेलवे स्टेशन पर मिला था। फूले पर सहाबू अंसारी ने अपने बेटा गुरू को कहा कि वह किसी काम से बनारस जा रहा है। उसके बाद से सहाबू अंसारी का मोबाइल भी रिचव ऑफ बता रहा है। वहीं महिला सायरा बानो के हत्या के बाद शहर थाना की पुलिस उसके घर पर पहुंच कर हर बिंदुओ पर जांच करने में जुट गई है।

पलामू गतका संघ ने किया नेशनल खिलाड़ियों को सम्मानित

मेदिनीनगर (पलामू) : मेदिनीनगर, नवाटोली स्थित नामधारी गुरुद्वारा में खिलाड़ी सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। जिसमें मुख्य अतिथि के रूप में पलामू गतका संघ के अध्यक्ष सोनू नामधारी विशिष्ट अतिथि उपाध्यक्ष गुरवीर सिंह, प्रदीप नारायण, बबलू चावला, मन्त बग्गा। कार्यक्रम का शुभारंभ सहसचिव दीपेंद्र सिंह एवं अमरेश कुमार ने पुष्प देखकर अतिथियों का स्वागत किया। वहीं खिलाड़ियों का हौसला अफजाई करते हुए जिला अध्यक्ष सोनू नामधारी ने कहा की 8 वा नेशनल गतका खिलाड़ियों में पलामू जिला से 27 खिलाड़ियों ने भाग लिया जिसमें खिलाड़ियों ने शानदार प्रदर्शन करते हुए झारखंड की झोली में 7 मेडल दिए हैं। इन तमाम खिलाड़ियों को ढेर सारी शुभकामनाएं आप इसी तरह निरंतर मेहनत करते रहे और झारखंड एवं पलामू जिले का नाम रोशन करते रहे। वहीं मौके पर जिला उपाध्यक्ष गुरवीर सिंह ने कहा की पंजाब जैसे विकसित राज्य में जाकर पंजाब का पारंपरिक खेल गतका में मेडल जीतना यह बहुत बड़ी खुशी की बात है। पलामू जिला के तमाम खेल प्रेमी आप खिलाड़ियों पर फर्क महसूस कर रही है। सदैव तमाम खिलाड़ी इसी प्रकार मेहनत करते रहे पलामू गतका का संघ सदैव आपके साथ है। वहीं मौके उपाध्यक्ष प्रदीप नारायण ने कहा कि इन खिलाड़ियों ने अपनी मेहनत से पलामू जिले का नाम रोशन किया है। मैं उम्मीद करता हूँ अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी यह खिलाड़ी भारत देश के लिए मेडल जीत कर लाए। वहीं मौके पर जिला सचिव सुमित बर्मन ने खिलाड़ियों का उत्साहवर्धन करते हुए कहा कि प्रतियोगिता में जीत या पराजित लगा रहता है जिन खिलाड़ियों ने जीता है उन्हें ढेर सारी शुभकामनाएं और जिन खिलाड़ियों ने कुछ पॉइंट की वजह से दर्नामेट में मेडल नहीं निकाल पाए हैं उन्हें निराश होने की आवश्यकता नहीं है अभी नवंबर में होने वाले एस जी एफ आई दर्नामेट बाकी है। आप अभी से ही दर्नामेट की तैयारी शुरू करें ताकि आप एस. जी.एफ.आई जैसे नेशनल दर्नामेट में मेडल जीत कर खेलो इंडिया में अपना सिलेक्शन करावा सके। सम्मानित हुए खिलाड़ियों के नाम कुछ इस प्रकार हैं आर्यन चंद्रा, अतुल सिंह, रिशु राज दाम्गी, प्रियांशु कुमार, अनामिका मेहता, वांदनी कुमारी, पीहू कुमारी।

पांकी विधानसभा क्षेत्र में कांग्रेस नेता लाल सूरज की बदलाव यात्रा शुरू



पांकी (पलामू) : लोकप्रिय नेता रहे लाल सूरज ने कांग्रेस पार्टी में शामिल होने के बाद दिनो पांकी विधानसभा क्षेत्र के विभिन्न गांव-कस्बों में बदलाव यात्रा अभियान चला रहे हैं। बदलाव यात्रा के तहत सभी धर्म समुदाय के लोगों से मिलकर उनके सुख-दुख में भाग ले रहे हैं और लोगों का हाल चाल जान रहे हैं। इस दौरान लाल सूरज बदलाव यात्रा के तहत क्षेत्र में दौरा कर लोगों से समर्थन मांग रहे हैं। इधर आपको बता दें कि कांग्रेस नेता लाल सूरज की तुफानी दौरा होने से पांकी विधानसभा क्षेत्र में राजनीति सर्रामीं तेज हो गई है। बदलाव यात्रा के तहत क्षेत्र भ्रमण के दौरान लाल सूरज को लोगों का अपार जनसमर्थन मिल रहा है। बदलाव यात्रा के तहत पांकी विधानसभा क्षेत्र के मनाउ प्रखंड के विभिन्न गांवों में जनसंपर्क कर लोगों से समर्थन मांगा। लाल सूरज को कई जगहों पर लोगों ने जोरदार तरीके से स्वागत किया। मौके पर लोगों ने लाल सूरज को भारी मतों से जीताने का सकल्य लिया। इधर आपको बता दें कि पांकी विधानसभा क्षेत्र में इस बार कांग्रेस पार्टी लाल सूरज को प्रत्याशी बनाकर चुनावी मैदान में उतारेगी। पांकी विधानसभा क्षेत्र में लाल सूरज को भरपूर समर्थन मिल रहा है। इधर लाल सूरज ने बदलाव यात्रा के दौरान पाया कि मनाउ प्रखंड के ग्रामीण सड़कों की स्थिति काफी दयनीय है रोड में गड्ढा है या गड्ढों में रोड है पता ही नहीं चलता, विकास का कोई कार्य ही नहीं दिख रही है। 20 वर्षों से क्षेत्र की जनता विकास के लिए तरस रहे हैं। मौके पर इस बदलाव यात्रा में हाजी अकमल खान साहब, अरविंद सिंह, गयासुद्दीन जी, उमेश सिंह, अभिषेक मेहता, अजित मेहता, सतोष सिंह, शम्भू सिंह, अमित कुमार, सिद्धार्थ सिंह, दीपक मंडल सहित सैकड़ों की संख्या में कार्यकर्ता शामिल थे।

पत्रकारों के लिए भी सम्मान योजना लागू करे हेमंत सरकार : अवधेश शुक्ला

मेदिनीनगर (पलामू) : झारखंड पत्रकार संगठन के केंद्रीय अध्यक्ष अवधेश शुक्ला ने प्रेस विज्ञापि जारी कर झारखंड की हेमंत सरकार से पत्रकारों के लिए भी सम्मान योजना लागू करने की मांग की है। उन्होंने कहा कि छोटे शहर एवं ग्रामीण क्षेत्र के पत्रकारों की आर्थिक स्थिति दयनीय है ऐसे में पत्रकारों को भी सरकारी लाभ देने की आवश्यकता है। कहा कि सरकार पत्रकारों के लिए आवास योजना लागू करे। श्री शुक्ल ने मांग की है कि अधिकताओं की भांति पत्रकारों की भी पेंशन व बीमा योजना का लाभ दे। कहा कि पत्रकार लोकतंत्र के चौथे स्तंभ माने जाते हैं। सरकार की योजनाओं का जानकारी आम लोगों तक पहुंचाने का काम करते हैं। इसके अलावा समाज में कमियां व भ्रष्टाचार की ओर भी सरकार का ध्यान आकृष्ट करते हैं। अपनी जान जोखिम में डालकर भी सत्य को उजागर करना पत्रकारों का काम है।

कल्याण गुरुकुल खूंटी के 26 छात्रों को मिली नौकरी, मुंबई और बेंगलुरु के लिए हुए रवाना

प्रत्युष नवबिहार संवाददाता  
खूंटी : अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, अल्पसंख्यक और पिछड़ी जाति कल्याण विभाग झारखण्ड सरकार और प्रेक्षा फाउंडेशन द्वारा संचालित कल्याण गुरुकुल खूंटी के 26 छात्रों को सोमवार संस्थान परिसर में एक सादे समारोह का आयोजन कर दिल्ली और बेंगलुरु के लिए रवाना किया गया। इन 26 छात्रों को शोभा लिमिटेड में नौकरी मिली है। 17 लोगों को बेंगलुरु और नौ छात्रों को दिल्ली में जाँब लगा है। प्रधानाचार्य किशोर चंद्र मोहंती



उन्हें शहरी झंडी दिखाकर और शुभकामना देकर विदा किया। उन्होंने बताया कि अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, अल्पसंख्यक और पिछड़ी जाति कल्याण विभाग झारखण्ड सरकार और प्रेक्षा फाउंडेशन द्वारा पूरे झारखंड में 28 कल्याण गुरुकुल एवं आठ नर्सिंग कौशल कॉलेज एवं एक आईटीआई

कॉलेज का संचालन किया जा रहा है। इसी कड़ी में सेमवार को मल्टी स्कूल कल्याण गुरुकुल खूंटी के प्रधानाचार्य किशोर चंद्र मोहंती ने कहा कि झारखंड के दूर-दराज क्षेत्र में रहने वाले लड़के-लड़कियों को गरीबी चक्र से बाहर निकालकर, आधुनिक प्रशिक्षण, बेहतर जीवन शैली एवं सुरक्षित रोजगार देने के लिए झारखंड सरकार के मार्गदर्शन में कल्याण गुरुकुल एक नया आयाम लिख रहा है। छात्रों को नियुक्ति पत्र मिलने के बाद सभी युवाओं को गुरुकुल से रवाना किया गया। इस मौके पर सीनियर प्रिंसिपल किशोर चंद्र मोहंती, प्रदीप कुमार विश्वास, पिटू कुमार प्रसाद, विनय कुमार, वेद प्रकाश, रमेश चंद्र जेना और मोहमद आलमगीर मौजूद थे।



## बच्चे को सिखाएं हाथ से लिखना

नार्वे की सल्वेगर यूनिवर्सिटी के शोधकर्ताओं ने पाया है कि टाइप करने के बजाय पेपर पर लिखने वाले बच्चे या छात्र कहीं बेहतर तरीके से अपना अभ्यास करते हैं। कम्प्यूटर पर टाइप करके लिखना छोटे बच्चों के लिए ठीक नहीं है। इससे उसकी सीखने की प्रक्रिया धीमी पड़ सकती है और वह आलसी बन सकता है। पेन से किसी पेपर पर लिखने या किताब पढ़ने की प्रक्रिया से मस्तिष्क अच्छी तरह काम करता है। लेकिन कम्प्यूटर पर काम करते रहने से बच्चे की सीखने की क्षमता पर असर पड़ता है। दरअसल पढ़ने और लिखने में कई प्रकार की ज्ञानेन्द्रियां काम करती हैं और लिखने से हमारा मस्तिष्क मांसपेशियों द्वारा उत्तेजित हो कर स्वतंत्र रूप से, और सुचारु ढंग से काम करता है। रिपोर्ट बताती है कि इस प्रकार की प्रतिक्रिया किसी की-बोर्ड को छूकर उस पर टाइप करने से मिलने वाली प्रतिक्रिया के मुकाबले अधिक मजबूत होती है और सीखने की प्रणाली को ठोस बनाती है। हाथ से लिखने की प्रक्रिया में दिमागी कसरत होती है और हाथ से लिखने में अधिक समय लगने से दिमाग पर लिखे हुए की गहरी छाप पड़ती है। इस प्रकार शोध के नतीजे दर्शाते हैं कि लिखने और पढ़ने के समय मस्तिष्क के विभिन्न हिस्से प्रोत्साहित होते हैं। इसलिए अपने बच्चों को समझाएं कि हाथ से लिखने में फायदा ही फायदा है।



## वेजिटेबल मोमोज

सामग्री - 200 ग्राम मैदा, एक चुटकी नमक, गुनगुना पानी, 50 ग्राम तेल।  
भरने के लिए - 250 ग्राम मिलीजुली सब्जियां, बारीक कटा लहसुन, दो हरे प्याज व एक इंच अदरक का टुकड़ा, एक छोटा चम्मच अजीनोमोटो, नमक स्वादानुसार, एक चम्मच सिरका, एक-दो बारीक कटी हरी मिर्च।  
विधि - नमक मिलाकर मैदे को गुनगुने पानी से नरम मल लें। आधे घंटे के लिए ढंकर रखें। दोबारा मलें व पतली-पतली पुरियां बेल लें। भरावन की सामग्री मिलाएं। प्रत्येक पूरी पर एक बड़ा चम्मच भरावन रखें व गुड़िया की तरह मोड़ लें। थोड़ा तेल चुपड़े। एक भिगोने में पानी उबालने रखें। एक चलनी को चिकना करके रखें। इसमें सभी मोमोज को जमा दें। एक प्लेट उलटी कर ढंक दें। तकरीब 20 मिनट तक भाप दें। साँस के साथ सर्व करें।



### चीज स्ट्रॉ

सामग्री  
एक कप मैदा,  
100 ग्राम ची, दो  
वयूब कटुकस  
किया हुआ चीज,  
आधा कप दूध,  
नमक और लाल  
मिर्च पाउडर  
स्वादानुसार।

### विधि

मैदे को छान लें। 50 ग्राम ची, चीज, नमक और लाल मिर्च पाउडर मिलाएं और इसे दूध से अच्छी तरह मल लें। इसे एक मोटी रोटी की तरह बेलकर लंबी स्ट्रॉप्स में काटें। हर स्ट्रॉप को टिक्ट करे और ची से चुपड़ी ट्रे में रखकर गोल्डन होने तक बेक करें। ठंडा करके सर्व करें।



## दीवारों को जब सजाना हो

आप अपने घर को मॉडर्न लुक देना चाहती हैं, तो उसे रंगवने की बजाय वॉलपेपर से डिजाइन करवा सकती हैं। इन दिनों मार्केट में स्टाइलिश व डिजाइनर वॉलपेपर छाप हुए हैं। इनसे आप अपने घर के हर कोने को मॉडर्न लुक दे सकती हैं। आइए, जानते हैं कुछ खास वॉलपेपर के बारे में। हर किसी का ख्याल होता है कि उसका घर सुंदर व सलोना हो। जो भी उसे देखे बस देखता ही रहे और बिना तारीफ किए बिना न रह पाए। ऐसे में अगर आप दीवारों को वॉलपेपर से कवर करते हैं, तो यह पेंट का काम तो करता है, साथ ही इससे घर की डेकोरेशन भी हो जाती है। प्लावर, एनिमल के अलावा मेटालिक व रेट्रो थीम वाले वॉलपेपर घर का मूड भी बदल देते हैं। आप इन वॉलपेपर से अपने घर की दीवारों पर मनचाही डिजाइन उकेर सकती हैं।  
हार्डलाइट करे: घर में पेंट की जगह वॉलपेपर लगवाना बिल्कुल नया ट्रेंड है। मेट्रो सिटीज में इसका चलन तेज है। अगर आप चाहती हैं कि आपके हर रूम में ग्रीनरी का अहसास हो या आपको एनिमल बहुत पसंद है, तो आप नेचर या एनिमल प्रिंटेड वॉलपेपर अपने घर में लगवा सकती हैं। इससे आपके घर को मॉडर्न लुक तो मिलेगा। साथ ही आपका घर दूसरों से बिल्कुल अलग दिखेगा। इससे दीवारों को खूबसूरत बनाने के साथ ही हार्डलाइट भी किया जा सकता है। आप अपने घर के कुछ हिस्से हार्डलाइट करना चाहते हैं, तो सिर्फ उतनी ही जगह में वॉलपेपर लगवा सकते हैं। इससे वह कॉर्नर या रूम डिफरेंट-सा लगने लगता है।  
हर रूम हो खास: मार्केट में वॉलपेपर में टेरों वैराइटी मौजूद है, इन्हें आप अपनी चॉइस के मुताबिक चुन सकती हैं। आप बैडरूम के लिए रेड या ब्लू-कलर के रोमांटिक वॉलपेपर चुनें। वहीं ड्राइंग रूम में प्लावर, एनिमल, पेइ-पैथ वाले वॉलपेपर लगा सकते हैं। अगर आपके घर में कोई शादी या पार्टी है, तो आप गोल्डन या सिल्वर कलर के वॉलपेपर लगावाएं। इससे आपके घर का पूरा लुक पार्टीनुमा हो जाता है। वहीं ब्राइड के रूम में भी रेड या पिंक कलर के वॉलपेपर में ग्लिटर व स्पाकल का यूज बेस्ट ऑप्शन रहेगा।



### बचने के उपाय

इससे बचने का बेस्ट तरीका यही है कि आप अपनी प्रॉब्लम को खुलकर स्वीकार करें। दूसरा स्टेप यह होना चाहिए कि आप चेक करें कि आप किस वजह से इमोशनल स्पेंडिंग कर रही हैं। इस वजह को पहचानने के बाद अपने पैरेंट्स या स्पाउस से रिलेशंस सुधारने की कोशिश करें।

## शॉपिंग से दूर भागे टेंशन

शॉपिंग से न सिर्फ आप अपनी जरूरतें पूरी करती हैं, बल्कि कई बार यह आपके टेंशन को भी दूर करता है। अब तो लोग जब टेंशन में होते हैं तो शॉपिंग करने निकल पड़ते हैं। यह अलग बात है कि इस तरह की इमोशनल शॉपिंग उनकी प्रॉब्लम का परमानेंट इलाज नहीं है।

इमोशनल स्पेंडिंग का मतलब ऐसी शॉपिंग से है, जो आपके मूड को अच्छा कर दे। साइकोथेरेपिस्ट और काउंसलर इस तरह की मार्केटिंग को रिटेल थेरेपी भी कहते हैं। वे इसे स्ट्रेस दूर करने का बढ़िया तरीका भी मानते हैं। यानी जब भी आपको अकेलापन, चिंता, तनाव या उदासी सताने लगे, इस थेरेपी को आजमा सकती हैं।

### शॉपिंग के नए मायने

शॉपिंग के दौरान एक व्यक्ति सिर्फ एक प्रॉडक्ट नहीं खरीदता, बल्कि वह अपने लिए ढेर सारी संतुष्टि भी प्राप्त करता है। इसका मतलब हुआ कि शॉपिंग के जरिए आप अपनी खोई हुई मुस्कान वापस पा सकती हैं और साथ ही यह आपको इंगो बूस्ट भी देगा। इसके साथ प्रॉब्लम यह है कि इसके तहत इंसान बिना जरूरत ही चीजें खरीदता है। यानी कि वह अपने अंदर का खालीपन इस शॉपिंग के जरिए भरने की कोशिश करता है।

### फील गुड शॉपिंग

इमोशनल स्पेंडिंग को फील गुड शॉपिंग भी कहते हैं। भले ही इसमें लोग बिना जरूरत के ही पैसा खर्च करते हैं। इसके हेपी इफेक्ट्स भी काफी हैं। ऐसी शॉपिंग के बाद न सिर्फ मूड बेहतर हो जाता है, बल्कि इंसान अपने लिए भी अच्छा सोचता है। साथ ही, यह टूटी हुई रिलेशनशिप, लो सेल्फ एस्टीम, जॉब जाने का डर और डिप्रेशन से बाहर आने का भी एक अच्छा तरीका है।

### क्या कहते हैं मनोवैज्ञानिक

मनोवैज्ञानिकों के अनुसार अगर लोगों का इमोशनल एनालिसिस किया जाए, तो कहीं न कहीं सभी के अंदर अकेलेपन का अहसास होता है। हालांकि इसे भरने के उनके पास अलग-अलग तरीके हैं। कुछ लोग इसके लिए क्रिएटिविटी दिखाते हैं और खुद को डांस, म्यूजिक, राइटिंग जैसी अच्छी चीजों में इवॉल्व कर लेते हैं। वैसे अंदर के वैय्यूम को भरना आसान नहीं होता है, लेकिन सभी को अपने तरीके पर चेक तो रखना ही चाहिए। अब शूज, बैग्स, परफ्यूम्स, ज्वेलरी, कॉस्मेटिक्स और वॉइज वगैरह को लेकर लोगों का क्रेज इतना बढ़ गया है कि इमोशनल स्पेंडिंग में कोई बुराई नहीं मानते।

### लांग टर्म बेनिफिट

इमोशनल स्पेंडिंग का सीधा कनेक्शन ओवर एक्सपेंडिचर से है। ऑफ मूड में लोग बिना सोचे-समझे शॉपिंग करते हैं और अक्सर फालतू की चीजें खरीदते हैं, लेकिन ऐसा नहीं है। यह लॉन्ग टर्म बेनिफिट पर होता है। शॉपिंग के बाद एक बार को इंसान अच्छा महसूस करता है, लेकिन थोड़े समय बाद वह वापस लो-मूड में चला जाता है। इस तरह के मार्केटिंग में कभी-कभी कुछ जरूरी चीजें खरीद ली जाती हैं, जिसका बाद में जरूरत पड़ती है।

स्टाइलिस लुक के चक्कर में यूथ तरह-तरह डिजाइनर कपड़े ट्राई करते हैं। ये सोचते हैं कि डिजाइन कपड़े पहन लेने मात्र से सुंदरता मुट्ठी में की जा सकती है। अगर आप ऐसा ही सोचती हैं तो शायद आपकी यह सोच गलत हो सकती है, क्योंकि कपड़े से ज्यादा उसकी फिटिंग आपको आकर्षक बनाती है।

## फिटिंग हो फिट

ज्यादातर लड़कियां बिना सोच-समझे कपड़ों की खरीददारी करती हैं, जो बाद में उनके लिए गलत फिटिंग के रूप में एक समस्या बन जाती है। आइए जानते हैं कैसे इन समस्याओं को दूर कर आकर्षक व्यक्तित्व पाया जा सकता है। केवल डिजाइनर ड्रेस पहनने से ही कोई खूबसूरत लगने लगे, तो भला और किसी चीज की क्या आवश्यकता। स्मार्ट दिखने के लिए बॉडी का शेप में होना जरूरी है। लड़कियां हमेशा शॉपिंग के दौरान परेशान रहती हैं, कि क्या खरीदना है, कहाँ से खरीदना है। लेकिन समस्या ट्रायल के दौरान ही देखने को मिलती है। जब पसंद किए गए कपड़े सही फिटिंग के नहीं होते हैं।

### गलत पसंद का दुष्प्रभाव

इन दिनों लड़कियां केवल शॉपिंग के तौर पर वस्तुओं की सूची बनाकर और उसे खरीदना ही अच्छा समझती हैं, लेकिन उनकी यह सोच तब गलत हो जाती है, जब उनके पसंद के डिजाइनर कपड़े फिट नहीं आते हैं। इससे लड़कियों के मन पर बुरा असर पड़ता है। एक सर्वे के अनुसार 64 प्रतिशत गर्ल्स का मानना है कि शॉपिंग के बाद, जब उनके पसंद की ड्रेस फिट नहीं होती, तो उनका मन नकारात्मक भावनाओं से भर जाता है, जिससे उनके स्वभाव पर गलत असर पड़ता है।



### दूर करें झिझक

ऐसी लड़कियां जिनकी बॉडी सही शेप में नहीं होती है, वे अपने लिए पार्टी वियर खरीदते समय शॉप पर दूसरे का उदाहरण देकर साइज बताती हैं, न कि अपना सही ब्योरा देती हैं। वो हमेशा, यह जोड़ देती हैं कि वह महिला काफी हद तक उनसे मिलती है, जिससे शॉप पर लोगों की नजरों का सामना न करना पड़े। कपड़ों की फिटिंग को ले कर, झिझक होने के कारण 60 प्रतिशत युवतियां दूसरों के सामने नए कपड़े ट्राई नहीं करती हैं। वहीं करीब 28 प्रतिशत युवतियां नए कपड़ों को घर पर ही ट्राई करना ज्यादा उचित समझती हैं।

### तलाशें सही रास्ता

कभी किसी बात को लेकर चिंता करके बैठने से कोई फायदा नहीं होता कुछ ऐसा ही मानना है, माडर्न गर्ल्स का। जिनमें बॉडी शेप को लेकर हमेशा नकारात्मक भावना ही नहीं रहती है। 80 प्रतिशत लड़कियां मानती हैं, कि नए कपड़े पहनते समय अगर वे उन पर फिट नहीं होते हैं, तो वे कजन कम करने के रास्ते तलाशने लगती हैं। अधिकतर कमर की चौड़ाई कम करना चाहती हैं। उनका मानना है, कि बॉडी की सही फिटनेस हमारे हाथ में होती है। जिसको हम मनचाहे रूप में पा सकते हैं। फिर भला चिंता किस बात की। जबकि होना यह चाहिए कि आप अपने बॉडी शेप के अनुसार ही कपड़े खरीदें।

### घर पर करें विचार

शॉपिंग की जल्दबाजी अक्सर गलत साबित होती है। अतः मार्केट निकलने से पहले घर पर सभी से राय जरूर ले लेना चाहिए। हो सकता है, कुछ नयी चीज आपको मिल जाए, जो शायद अक्सर नहीं मिलती है। शॉप पर अलग-अलग ब्रांड की ड्रेसिंग के साइज में अंतर होने से इस तरह का कंप्यूजन होता है। कई बार जब हम दूसरे के लिए कपड़े व वगैर खरीदने जाते हैं तो अक्सर इस समस्या का सामना करना पड़ता है इसलिए इस तरह के कंप्यूजन को घर में ही दूर करना ज्यादा बेहतर होता है।



### ट्रायल का उठाएं फायदा

कपड़ों की खरीददारी करना अलग बात है और फिटिंग रूम में ट्रायल लेना अलग। अगर देखा जाए तो 76 प्रतिशत लड़कियां फिटिंग रूम में एक ही बार इस ट्राई करना पसंद करती हैं। अगर फिटिंग सही होती है, तो अपनी पसंद के कलर को ध्यान में रख कर उसी नाप का दूसरा पीस पैक करा लेती हैं। उन्हें इस ट्राई करना बोरिंग काम लगता है। इसलिए वे एक से अधिक बार ट्रायल रूम का रुख नहीं करना चाहती हैं। जिससे सही फिटिंग न होने पर भी वो दोबारा ट्राई नहीं करती हैं और उसी ड्रेस को खरीद लेती हैं।



# ‘भारतीयों को क्रिकेट के किसी भी रूप में ऑस्ट्रेलिया को हराना बहुत पसंद है’

नई दिल्ली (एजेंसी)। बॉर्डर-गावस्कर ट्रॉफी (बीजेटी) के करीब आने के साथ ही अनुभवी बाएं हाथ के सलामी बल्लेबाज उस्मान ख्वाजा ने इस तथ्य को स्वीकार किया है कि भारतीय टीम को क्रिकेट के किसी भी प्रारूप में ऑस्ट्रेलिया को हराने में बहुत खुशी मिलती है जबकि पिछले कुछ वर्षों में ऐतिहासिक प्रतिद्वंद्विता और भी बढ़ गई है।

भारत ने ऑस्ट्रेलिया में 2018/19 और 2020/21 में हुई पिछली दो बॉर्डर-गावस्कर ट्रॉफी सीरीज में 2-1 से जीत हासिल की है। मेहमान टीम 22 नवंबर को प्रथम श्रेणी के पहले टेस्ट मैच में ऑस्ट्रेलिया में सीरीज जीत की हैट्रिक बनाने का लक्ष्य रखेगी, इसके बाद एडिलेड, ब्रिसबेन, मेलबर्न और सिडनी में खेल होगा। ख्वाजा ने कहा, ‘हम पिछले दो सालों से दुनिया की नंबर एक और नंबर दो टीम हैं। हम पिछली विश्व टेस्ट चैंपियनशिप में एक साथ थे। प्रतिद्वंद्विता हमेशा से बहुत बढ़ी रही है। मैं इसे सम्मान के संकेत के रूप में लेता हूँ और मुझे पता

है कि भारतीयों को क्रिकेट के किसी भी रूप में ऑस्ट्रेलिया को हराना बहुत पसंद है।’

उन्होंने कहा, ‘और ऑस्ट्रेलिया की इतने सालों से विश्व क्रिकेट में हावी टीमों में से एक होने की परंपरा ने उस प्रतिद्वंद्विता को दांव पर लगा दिया है। मुझे लगता है, हां, भारतीयों के लिए ऑस्ट्रेलिया को हराना हमेशा से ही रहा है। और हाल ही में, आप जानते हैं, भारत और आईपीएल के उदय और बाकी सब कुछ जो हुआ, उसके बाद से ऑस्ट्रेलिया और भारत के बीच भी यही हुआ है। खासकर तब से जब से भारत ने ऑस्ट्रेलिया को ऑस्ट्रेलिया में हरया है, जब से वे बॉर्डर-गावस्कर ट्रॉफी से बाहर आए हैं। इसका मतलब बस थोड़ा और है।’

तेज गेंदबाज जोशा हेजलवुड जो 2014/15 बॉर्डर-गावस्कर ट्रॉफी सीरीज में ऑस्ट्रेलिया का हिस्सा थे, ने कहा कि वह ट्रॉफी को वापस पाने के लिए उत्सुक हैं। हेजलवुड ने कहा, ‘हां, शायद यही सबसे कठिन प्रतिद्वंद्विता है। भारत के खिलाफ खेलना हमेशा एक बड़ी

चुनौती होती है, और वे यहां की परिस्थितियों के इतने आदी हैं कि उन्हें यह पसंद है। आप जानते हैं कि ऑस्ट्रेलिया में चुनौती बहुत बड़ी है। वे अपने शीर्ष क्रम को बल्लेबाजी कर रहे हैं, चाहे कोई भी खेल रहा हो, उनके शीर्ष छह या सात अविश्वसनीय हैं। मैंने अपनी पहली सीरीज में उनके खिलाफ खेला, जाहिर है और हमने जीत हासिल की, शायद वह आखिरी बार था। बहुत से वही खिलाड़ी अभी भी खेल रहे हैं, मुझे लगता है कि मैंने विराट को उस गेम में हरया था।’ उन्होंने कहा, ‘तो हमारे बहुत से खिलाड़ी, मुझे लगता है, भारत को टेस्ट सीरीज में नहीं हरा पाए हैं। टैविंस हेड, कैमरन ग्रीन जैसे खिलाड़ी खेल रहे थे, ऐसे ही लोग। तो, हां हमारे लिए आने वाला समर बहुत बड़ा है और उम्मीद है कि हम ट्रॉफी वापस पा लेंगे।’

ऑस्ट्रेलिया के तेज गेंदबाज ऑलराउंडर मिशेल मार्श आगामी सीरीज को लंबे फॉर्मेट को आगे बढ़ाने के एक और मौक के रूप में देखते हैं। उन्होंने कहा, ‘मुझे लगता है कि यह सिर्फ क्रिकेट



है जो दोनों टीमों के बीच खेला गया है। अगर आप इतिहास, हाल के इतिहास को देखें, तो हमने चीजें जीती हैं, उन्होंने चीजें जीती हैं। और मुझे लगता है कि जब यह इस तरह आगे-पीछे होता है, तो यह आपके भीतर प्रतिद्वंद्विता को निर्माण करता है। आप जानते हैं कि भारतीय टीम और हमारी टीम में बहुत अच्छी दोस्ती है, इसलिए कोई नफरत नहीं है। लेकिन यह मैदान पर एक शानदार प्रतिद्वंद्विता है, दोनों टीमों जीतना चाहती हैं। ऑस्ट्रेलिया बनाम भारत, यह क्रिकेट के खेल को आगे बढ़ाने का एक और अवसर है। ऐसा नहीं है कि क्रिकेट को भारत में बढ़ने की जरूरत है, बल्कि दुनिया भर में। लोग इन बड़ी सीरीज को देखते हैं।’

# एशियाई चैंपियंस ट्रॉफी : भारत ने जापान को दी करारी हार, लगातार दूसरा मैच जीता



हनुमन्गढ़ (चीन)(एजेंसी)। सुखजीत सिंह के दो गोल को मदद से गत चैंपियन भारत ने सोमवार को यहां पुरुष एशियाई चैंपियंस ट्रॉफी हॉकी टूर्नामेंट के लीग मैच में जापान को 5-1 से हराकर लगातार दूसरी जीत दर्ज की।

सुखजीत ने दूसरे और 60वें मिनट में गोल किए जबकि अभिषेक (तीसरे), संजय (17वें) और उत्तम सिंह (54वें) अन्य भारतीय गोल करने वाले खिलाड़ी रहे। माल्युमोतो काजुमासा ने 41वें मिनट में जापान के लिए एक गोल किया। रविवार को अपने शुरुआती राउंड-रॉबिन लीग मैच में चीन को 3-0 से हराने वाली चार बार की चैंपियन भारतीय टीम को दो पेनल्टी कॉर्नर मिले जबकि जापान की टीम ने पांच पेनल्टी कॉर्नर हासिल किए।

हरमनप्रीत सिंह की अगुआई वाली टीम बुधवार को पिछले चरण की उपविजेता टीम मलेशिया से भिड़ेगी, मंगलवार को आराम का दिन है। छह टीमों के बीच राउंड-रॉबिन लीग के बाद शीर्ष चार टीमों 16 सितंबर को खेले जाने वाले सेमीफाइनल के लिए क्वालीफाई करेंगी। फाइनल 17 सितंबर को होगा।

# बांग्लादेश के खिलाफ पहले टेस्ट के लिए भारतीय टीम घोषित, ऋषभ की वापसी



मुम्बई (एजेंसी)। बांग्लादेश के खिलाफ इसी माह 19 सितंबर से होने वाली दो टेस्ट मैचों की शुरुआत के पहले टेस्ट के लिए भारतीय टीम घोषित कर दी गयी है। वहीं युवा विकेटकीपर बल्लेबाज ध्रुव जुरेल को भी टीम में रखा गया है। बीसीसीआई ने कहा कि पुरुष चयन समिति ने बांग्लादेश के खिलाफ आईपीएल फिफ्ट बैंक टेस्ट सीरीज के पहले टेस्ट के लिए भारत की 16 सदस्यीय टीम का चयन कर लिया है। इस टेस्ट सीरीज से साल 2024-25 के लिए भारत के अंतरराष्ट्रीय घरेलू सत्र की शुरुआत होगी। इस सीरीज के बाद बांग्लादेश के खिलाफ तीन टी20 मैच भी खेले जाएंगे। जिसके लिए सीरीज का चयन अभी होना है।

**टीम इस प्रकार है -** रोहित शर्मा (कप्तान), यशवीर जयसवाल, शुभमन गिल, विराट कोहली, केएल राहुल, सरफराज खान, ऋषभ पंत (विकेटकीपर), ध्रुव जुरेल (विकेटकीपर), अर अर्धन, अर जडेजा, अखर पटेल, कुलदीप यादव, मो. सिराज, आकाश दीप, जसप्रीत बुग्ग, यश दयाल।

सभी हैपन है वह है यश दयाल को शामिल किया जाना। यश वहीं गेंदबाज हैं जिनपर पिछले आईपीएल में रिकू सिंह ने लगातार पांच छ्के लगाये थे। वहीं युवा विकेटकीपर बल्लेबाज ध्रुव जुरेल को भी टीम में रखा गया है। बीसीसीआई ने कहा कि पुरुष चयन समिति ने बांग्लादेश के खिलाफ आईपीएल फिफ्ट बैंक टेस्ट सीरीज के पहले टेस्ट के लिए भारत की 16 सदस्यीय टीम का चयन कर लिया है। इस टेस्ट सीरीज से साल 2024-25 के लिए भारत के अंतरराष्ट्रीय घरेलू सत्र की शुरुआत होगी। इस सीरीज के बाद बांग्लादेश के खिलाफ तीन टी20 मैच भी खेले जाएंगे। जिसके लिए सीरीज का चयन अभी होना है।

**टीम इस प्रकार है -** रोहित शर्मा (कप्तान), यशवीर जयसवाल, शुभमन गिल, विराट कोहली, केएल राहुल, सरफराज खान, ऋषभ पंत (विकेटकीपर), ध्रुव जुरेल (विकेटकीपर), अर अर्धन, अर जडेजा, अखर पटेल, कुलदीप यादव, मो. सिराज, आकाश दीप, जसप्रीत बुग्ग, यश दयाल।

# ऋषभ पंत टेस्ट में सर्वकालिक महान खिलाड़ी बनने की राह पर, छोटे प्रारूपों में सुधार की जरूरत : गांगुली



कोलकाता। भारत के पूर्व कप्तान सौरव गांगुली का मानना है कि ऋषभ पंत टेस्ट क्रिकेट में सर्वकालिक महान खिलाड़ी बनने की राह पर हैं, लेकिन साथ ही उन्हें छोटे प्रारूपों में अपने प्रदर्शन में सुधार करने की जरूरत है। दिसंबर 2022 में कार दुर्घटना में चोटिल होने के बाद पंत को रीवेंच को पहली बार भारतीय टेस्ट टीम में शामिल किया गया है और पूरी उम्मीद है कि बांग्लादेश के खिलाफ 19 सितंबर से चेन्नई में शुरू होने वाले पहले टेस्ट मैच के लिए उन्हें अंतिम एकादश में शामिल किया जाएगा। पंत ने इस साल के शुरू में सीमित ओवरों के प्रारूप में वापसी की थी और इनमें अच्छा प्रदर्शन किया था। गांगुली ने यहां एक प्रचार कार्यक्रम के दौरान कहा, ‘मैं ऋषभ पंत को भारत के सर्वश्रेष्ठ टेस्ट बल्लेबाजों में से एक मानता हूँ। उनकी टेस्ट क्रिकेट में वापसी से मैं हैरान नहीं हूँ। वह भारत के लिए टेस्ट क्रिकेट में खेले रहेगे।’ उन्होंने कहा, ‘अगर वह इसी तरह प्रदर्शन करता रहा तो टेस्ट क्रिकेट के सर्वकालिक महान खिलाड़ियों में शामिल हो जाएगा। मेरा मानना है कि छोटे प्रारूपों में बेहतर प्रदर्शन करने की जरूरत है। वह प्रतिभाशाली है और मुझे यकीन है कि वह जल्द ही ऐसा करने में सफल रहेगा।’ मोहम्मद शमी को टखने के ऑपरेशन के कारण टीम में शामिल नहीं किया गया लेकिन गांगुली को विश्वास है कि यह तेज गेंदबाज इस साल के आखिर में होने वाले ऑस्ट्रेलियाई दौर से पहले पूरी तरह फिट हो जाएगा। उन्होंने कहा, ‘मैं जानता हूँ कि मोहम्मद शमी चोटिल होने के कारण टीम में शामिल नहीं है लेकिन वह जल्द ही वापसी करेगा क्योंकि भारत को ऑस्ट्रेलिया का दौरा करना है। भारत का आक्रमण अभी बहुत अच्छा है।’

सभी हैपन है वह है यश दयाल को शामिल किया जाना। यश वहीं गेंदबाज हैं जिनपर पिछले आईपीएल में रिकू सिंह ने लगातार पांच छ्के लगाये थे। वहीं युवा विकेटकीपर बल्लेबाज ध्रुव जुरेल को भी टीम में रखा गया है। बीसीसीआई ने कहा कि पुरुष चयन समिति ने बांग्लादेश के खिलाफ आईपीएल फिफ्ट बैंक टेस्ट सीरीज के पहले टेस्ट के लिए भारत की 16 सदस्यीय टीम का चयन कर लिया है। इस टेस्ट सीरीज से साल 2024-25 के लिए भारत के अंतरराष्ट्रीय घरेलू सत्र की शुरुआत होगी। इस सीरीज के बाद बांग्लादेश के खिलाफ तीन टी20 मैच भी खेले जाएंगे। जिसके लिए सीरीज का चयन अभी होना है।

**टीम इस प्रकार है -** रोहित शर्मा (कप्तान), यशवीर जयसवाल, शुभमन गिल, विराट कोहली, केएल राहुल, सरफराज खान, ऋषभ पंत (विकेटकीपर), ध्रुव जुरेल (विकेटकीपर), अर अर्धन, अर जडेजा, अखर पटेल, कुलदीप यादव, मो. सिराज, आकाश दीप, जसप्रीत बुग्ग, यश दयाल।

# आप किसी टीम को कम नहीं आंक सकते, बांग्लादेश सीरीज से पहले बोले शुभमन गिल



नई दिल्ली (एजेंसी)। भारत के शीर्ष क्रम के बल्लेबाज शुभमन गिल का मानना है कि बांग्लादेश के खिलाफ आगामी टेस्ट सीरीज दिलचस्प होने वाली है। भारत और बांग्लादेश के बीच पहला टेस्ट 19 सितंबर को चेन्नई में खेला जाएगा, इसके बाद दूसरा टेस्ट 27 सितंबर से कानपुर में खेला जाएगा। चेन्नई मैच के लिए गिल को भारतीय टीम में शामिल किया गया है जिसमें ऋषभ पंत, केएल राहुल और विराट कोहली की टेस्ट टीम में वापसी हुई है जबकि बाएं हाथ के तेज गेंदबाज यश दयाल पहली बार टीम में दिखाई देंगे।



गिल ने कहा, ‘मुझे नहीं लगता कि आप किसी अंतरराष्ट्रीय टीम को कम आंक सकते हैं। पिछले कुछ महीनों में बांग्लादेश ने जिस तरह का क्रिकेट खेला है, खासकर पाकिस्तान में, वह प्रभावशाली रहा है। उनके तेज गेंदबाजों और जिस तरह से उनके मध्यक्रम के बल्लेबाजों ने दबाव डेला है, उसे नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। इसलिए, मेरा मानना है कि वह एक दिलचस्प और रोमांचक मुकाबला होगा।’

पाया - वेस्टइंडीज और दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ। मैं अच्छे शुरूआत कर रहा था, 20 और 30 रन बना रहा था, लेकिन मैं उन्हें बड़ी पारी में नहीं बदल पा रहा था। जब मैं वापस लौटा, तो मुझे पता था कि मुझे इन प्रदर्शनों को बदलना होगा। आगे बढ़ते हुए मेरा लक्ष्य अपने अर्द्धशतकों को बड़े शतकों में बदलना है।’

नंबर तीन बल्लेबाज के रूप में गिल ने इस साल इंग्लैंड के खिलाफ 4-1 टेस्ट सीरीज के दौरान नौ पारियों में 452 रन बनाए, जबकि उनका औसत 56.50 रहा। उन्होंने कहा, ‘यह मेरे लिए बहुत बड़ा आत्मविश्वास बढ़ाने वाला था, खासकर पहला टेस्ट मैच हारने के बाद। काफी खिलाड़ी अनुपलब्ध थे, इसलिए हम पर सीरीज जीतने का दबाव था।’ इंग्लैंड सीरीज जीत से मिली सीख के बारे में गिल ने कहा, ‘मैंने पहले कभी पांच टेस्ट मैच नहीं खेले थे, इसलिए यह एक अच्छा अनुभव था और उस तीव्रता को महसूस करना रोमांचक था। दो टेस्ट मैचों के बाद ब्रेक मिलने के बाद भी हमने कभी उस तीव्रता को नहीं छोड़ा।’

# कप्तानों को जल्दबाजी में बर्खास्त न करें: गिलेस्पी, कस्टर्न ने पीसीबी से कहा

कगची (एजेंसी)। पाकिस्तान के सीमित ओवरों और टेस्ट टीम के मुख्य कोच गैरी कस्टर्न और जेसन गिलेस्पी ने देश के क्रिकेट बोर्ड को सभी प्रारूपों में हालिया खराब प्रदर्शन के बाद जल्दबाजी में कप्तान नहीं बदलने की सलाह दी है। भारत में 2023 में खेले गए एकदिवसीय विश्व कप के राउंड रॉबिन दौर से बाहर होने के बाद बाबर आजम को सीमित ओवरों की कप्तानी से बर्खास्त कर दिया गया था। उनकी जगह लेने वाले शाहीन शाह अफरीदी को एक खराब श्रृंखला के बाद हटा दिया गया था। इसी तरह टेस्ट में बाबर के इस्तीफा देने के बाद, शान मसूद को कप्तान बनाया गया था, लेकिन बांग्लादेश से टेस्ट श्रृंखला में 0-2 से हार के बाद उन्हें तुरंत बाहर करने की मांग उठ रही है।

पीसीबी के एक सूत्र ने हालांकि ‘पीटीआई-भाषा’ को बताया कि मसूद और बाबर की बर्खास्तगी के बारे में हालिया मीडिया अटकलें कयास से ज्यादा कुछ नहीं हैं। उन्होंने कहा, ‘कप्तानों को बदलने पर कोई चर्चा नहीं हुई है क्योंकि पीसीबी अध्यक्ष मोहसिन नकवी ने यह फैसला दोनों कोच और चयनकर्ताओं पर छोड़ दिया है।’ सूत्र ने कहा, ‘कस्टर्न और गिलेस्पी बहुत स्पष्ट हैं कि शान और बाबर दोनों को उनकी नेतृत्व क्षमता का आकलन करने से पहले उचित समय दिए जाने की जरूरत है।’

उन्होंने कहा कि दोनों कोच कप्तानी में निरंतरता चाहते हैं और उन्होंने यह बात बोर्ड को साफ तौर पर बात दी है। उन्होंने यह भी स्पष्ट किया कि जब बोर्ड इस महिने के अंत में लाहौर में ‘क्रिकेट कनेक्शन’ नामक एक दिन की कार्यशाला आयोजित करेगा तो कप्तानी या टीम चयन पर चर्चा नहीं की जाएगी। उन्होंने कहा, ‘वह कार्यशाला सभी हितधारकों, मुख्य रूप से घरेलू टीम के सभी कोच, चयनकर्ताओं और अनुबंधित खिलाड़ियों के विचारों को सुनने के लिए आयोजित की जा रही है ताकि बोर्ड घरेलू क्रिकेट और अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट

को बदलने पर कोई चर्चा नहीं हुई है क्योंकि पीसीबी अध्यक्ष मोहसिन नकवी ने यह फैसला दोनों कोच और चयनकर्ताओं पर छोड़ दिया है।’ सूत्र ने कहा, ‘कस्टर्न और गिलेस्पी बहुत स्पष्ट हैं कि शान और बाबर दोनों को उनकी नेतृत्व क्षमता का आकलन करने से पहले उचित समय दिए जाने की जरूरत है।’

उन्होंने कहा कि दोनों कोच कप्तानी में निरंतरता चाहते हैं और उन्होंने यह बात बोर्ड को साफ तौर पर बात दी है। उन्होंने यह भी स्पष्ट किया कि जब बोर्ड इस महिने के अंत में लाहौर में ‘क्रिकेट कनेक्शन’ नामक एक दिन की कार्यशाला आयोजित करेगा तो कप्तानी या टीम चयन पर चर्चा नहीं की जाएगी। उन्होंने कहा, ‘वह कार्यशाला सभी हितधारकों, मुख्य रूप से घरेलू टीम के सभी कोच, चयनकर्ताओं और अनुबंधित खिलाड़ियों के विचारों को सुनने के लिए आयोजित की जा रही है ताकि बोर्ड घरेलू क्रिकेट और अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट

मानकों के बीच अंतर को पटने पर काम कर सके।’

सूत्र ने यह भी बताया कि इस कार्यशाला में कस्टर्न भी मौजूद रहेंगे जबकि गिलेस्पी इसमें ऑनलाइन तरीके जुड़ेंगे। पीसीबी प्रमुख से कहा था कि सभी प्रारूपों में टीम से दीर्घकालिक परिणाम प्राप्त करने के लिए नीतियों में धैर्य और निरंतरता की आवश्यकता है। उन्होंने कहा, ‘कार्यशाला मूल रूप से इसलिए आयोजित की जा रही है क्योंकि दोनों कोच चाहते हैं कि घरेलू टीम के कोच इस बात को अच्छी तरह से समझे कि राष्ट्रीय टीम के लिए खिलाड़ियों को तैयार करने के लिए क्या जरूरी है।’ यह पूछे जाने पर कि इस साल के अंत में ऑस्ट्रेलिया और दक्षिण अफ्रीका में एकदिवसीय श्रृंखला और फिर देश में आयोजित होने वाले चैंपियंस ट्रॉफी के लिए किसे कप्तान नियुक्त किया जाएगा, सूत्र ने कहा कि स्फेद गेंद के प्रारूप में निरंतरता को बनाये रखते हुए शायद बाबर को ही जिम्मेदारी दी जाये।



# पेरिस पैरालिम्पिक्स से हम क्या सीख सकते हैं



नयी दिल्ली (एजेंसी)। पैरिस पैरालिम्पिक्स खेलों में भारत का प्रदर्शन शानदार रहा। 7 गोल्ड के साथ 29 पदकों के साथ भारतीय दल पदक तालिका में 18वें स्थान पर रहा। पैरालिम्पिक्स से हम यह बातें सीख सकते हैं।

**खेलों को अपनाएं।** पैरिस पैरालिम्पिक्स में 23 खेल विधाएं थीं, लेकिन भारत को अधिकतर सफलता एथलैटिक्स, तीरंदाजी, शूटिंग और बैडमिंटन में मिली। उदाहरण के लिए, तैरकों में 140 पदक दांव पर थे, लेकिन भारत ने सिर्फ एक प्रतिभागी को चुना। स्पष्ट रूप से, सुधार की बहुत गुंजाइश है। भारत को 2028 में लॉस एंजिल्स में कई और पदक जीतने के लिए अन्य खेलों को अपनाने की आवश्यकता है।

**हर किसी की एक कहानी है।** पैरालिम्पिक्स पदकों के बारे में कम और प्रतिभागियों के बारे में अधिक है। हर पदक या हर एथलीट के पीछे एक कहानी है। धर्मबीर नेन और प्रणय सूरमा ने पुरुषों की क्लब थ्रो स्पर्धा में क्रमशः स्वर्ण और रजत जीता। हालांकि, उनमें विकलांगता का अनुपात इतना अधिक है कि उनके प्रदर्शन की भविष्यवाणी करना असंभव है। टेक और फोल्ड दल के कोच सत्यनारायण शिमांगा ने कहा कि उनका अपने मल त्याग पर कोई नियंत्रण नहीं है। वे अक्सर प्रतिस्पर्धा करते समय पेशाब कर देते हैं। यदि वे सही स्थिति में नहीं बैठते हैं,

तो वे प्रदर्शन नहीं कर सकते हैं। जब तक आप उनकी कहानी नहीं जानते, उनकी सफलता को समझना करना असंभव है। दल के चिकित्सा प्रमुख डॉ. अमेय कागली ने कहा कि प्राची (यादव) ने गंभीर आंख के संक्रमण के बावजूद अपने स्पर्धा के फाइनल में जगह बनाई। हमें हर छट्टे में उसकी आंख की पट्टी बांधनी पड़ती थी।

**समर्थन जरूरी है।** पैरालिम्पिक्स के बारे में मीडिया ने विस्तार से रिपोर्ट दी है। सोशल मीडिया पर लाखों लोग ने इन एथलीटों का समर्थन किया है। लेकिन अब जरूरत है कि इनसे जुड़े रहने की। उम्मीद है कि मीडिया और प्रशासक खेल खतम होने के बाद भी इन एथलीटों से जुड़े रहेंगे। पैरा इवेंट्स पर

नियमित रिपोर्टिंग से यह सुनिश्चित होगा कि उनकी प्रगति रिकॉर्ड की गई है और उनका दस्तावेजीकरण किया गया है। निरंतर रिपोर्टिंग से जागरूकता बढ़ेगी और संभवतः भविष्य में कॉर्पोरेट समर्थन में वृद्धि होगी।

**तुलना न करें।** ओलिम्पिक्स और पैरालिम्पिक्स को तुलना हो रही है। बताया जा रहा कि ओलिम्पिक्स पर 500 करोड़ खर्च कर सिर्फ 6 पदक मिले, जबकि पैरालिम्पिक्स पर 20 करोड़ रुपये से ही 29 पदक मिल गए। यह सही तुलना नहीं है। दोनों बहुत अलग टूर्नामेंट हैं और एक की सफलता का इस्तेमाल दूसरे को आलोचना करने के लिए नहीं किया जाना चाहिए। पैरालिम्पिक्स का अधिक समर्थन करें और पैरा खेलों में अधिक निवेश करें। लेकिन पैरालिम्पिक्स का उदाहरण देकर ओलिम्पिक्स को गाली देना गलत है।

**विजेताओं को याद रखें:** पदक विजेताओं के साथ सबने जश्न मनाया। लेकिन यह भी ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि हम पूरे दल के साथ जश्न मनाएं। क्योंकि जो इस बार असफल रहे हैं वे कल के चैंपियन हैं और उन्हें नहीं भूलना चाहिए। पुरुषों की ऊंची कूद में स्वर्ण पदक जीतने वाले प्रवीण कुमार विश्व चैंपियनशिप में पॉडियम तक नहीं पहुंच पाए। अगर उन्हें बाहर कर दिया गया होता, तो छत्र स्वर्ण नहीं होता। यहां समग्र समझ बेहद जरूरी है।

नियमित रिपोर्टिंग से यह सुनिश्चित होगा कि उनकी प्रगति रिकॉर्ड की गई है और उनका दस्तावेजीकरण किया गया है। निरंतर रिपोर्टिंग से जागरूकता बढ़ेगी और संभवतः भविष्य में कॉर्पोरेट समर्थन में वृद्धि होगी।

**तुलना न करें।** ओलिम्पिक्स और पैरालिम्पिक्स को तुलना हो रही है। बताया जा रहा कि ओलिम्पिक्स पर 500 करोड़ खर्च कर सिर्फ 6 पदक मिले, जबकि पैरालिम्पिक्स पर 20 करोड़ रुपये से ही 29 पदक मिल गए। यह सही तुलना नहीं है। दोनों बहुत अलग टूर्नामेंट हैं और एक की सफलता का इस्तेमाल दूसरे को आलोचना करने के लिए नहीं किया जाना चाहिए। पैरालिम्पिक्स का अधिक समर्थन करें और पैरा खेलों में अधिक निवेश करें। लेकिन पैरालिम्पिक्स का उदाहरण देकर ओलिम्पिक्स को गाली देना गलत है।

**विजेताओं को याद रखें:** पदक विजेताओं के साथ सबने जश्न मनाया। लेकिन यह भी ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि हम पूरे दल के साथ जश्न मनाएं। क्योंकि जो इस बार असफल रहे हैं वे कल के चैंपियन हैं और उन्हें नहीं भूलना चाहिए। पुरुषों की ऊंची कूद में स्वर्ण पदक जीतने वाले प्रवीण कुमार विश्व चैंपियनशिप में पॉडियम तक नहीं पहुंच पाए। अगर उन्हें बाहर कर दिया गया होता, तो छत्र स्वर्ण नहीं होता। यहां समग्र समझ बेहद जरूरी है।



# आकाश दीप को मिल सकता है बांग्लादेश के खिलाफ अवसर

मुम्बई। बांग्लादेश के खिलाफ इसी माह 19 सितंबर से शुरू हो रही टेस्ट सीरीज में इंडिया ए टीम के युवा गेंदबाज आकाशदीप को भारतीय टीम में अवसर मिल सकता है। आकाश दीप ने घरेलू टूर्नामेंट दलीप ट्रॉफी में शानदार गेंदबाजी करते हुए इंडिया बी के बल्लेबाजों को जमकर परेशान किया है। आकाशदीप ने पहली पारी में 4 विकेट लेने के बाद दूसरी पारी में भी 5 विकेट लिए हैं। अक्सर मिला जिसमें उन्होंने अच्छी गेंदबाजी करते हुए 3 विकेट लिए। उन्हें टीम में जगह मिलना इसलिए भी तय है क्योंकि अनुभवी तेज गेंदबाज मोहम्मद शमी अभी तक चोट से नहीं उबरें हैं। इसी कारण शमी बांग्लादेश के खिलाफ 2 मैचों की टेस्ट सीरीज में नहीं खेलेगे। इसके अलावा भारतीय टीम के जो खिलाड़ी दलीप ट्रॉफी खेल रहे हैं। उनमें से कई खिलाड़ियों का प्रदर्शन अब तक अच्छा नहीं रहा है। ऐसे में इन खिलाड़ियों को बाहर बैटाना पड़ सकता है। वहीं सिराज बिमार होने के कारण दलीप ट्रॉफी के शुरुआती दौर से बाहर है हालांकि उनके बांग्लादेश के खिलाफ सीरीज तक ठीक होने की संभावना है। इस साल के बचे हुए महीनों में भारतीय टीम को 10 टेस्ट मैच खेलने हैं।

मुम्बई। बांग्लादेश के खिलाफ इसी माह 19 सितंबर से शुरू हो रही टेस्ट सीरीज में इंडिया ए टीम के युवा गेंदबाज आकाशदीप को भारतीय टीम में अवसर मिल सकता है। आकाश दीप ने घरेलू टूर्नामेंट दलीप ट्रॉफी में शानदार गेंदबाजी करते हुए इंडिया बी के बल्लेबाजों को जमकर परेशान किया है। आकाशदीप ने पहली पारी में 4 विकेट लेने के बाद दूसरी पारी में भी 5 विकेट लिए हैं। अक्सर मिला जिसमें उन्होंने अच्छी गेंदबाजी करते हुए 3 विकेट लिए। उन्हें टीम में जगह मिलना इसलिए भी तय है क्योंकि अनुभवी तेज गेंदबाज मोहम्मद शमी अभी तक चोट से नहीं उबरें हैं। इसी कारण शमी बांग्लादेश के खिलाफ 2 मैचों की टेस्ट सीरीज में नहीं खेलेगे। इसके अलावा भारतीय टीम के जो खिलाड़ी दलीप ट्रॉफी खेल रहे हैं। उनमें से कई खिलाड़ियों का प्रदर्शन अब तक अच्छा नहीं रहा है। ऐसे में इन खिलाड़ियों को बाहर बैटाना पड़ सकता है। वहीं सिराज बिमार होने के कारण दलीप ट्रॉफी के शुरुआती दौर से बाहर है हालांकि उनके बांग्लादेश के खिलाफ सीरीज तक ठीक होने की संभावना है। इस साल के बचे हुए महीनों में भारतीय टीम को 10 टेस्ट मैच खेलने हैं।

मुम्बई। बांग्लादेश के खिलाफ इसी माह 19 सितंबर से शुरू हो रही टेस्ट सीरीज में इंडिया ए टीम के युवा गेंदबाज आकाशदीप को भारतीय टीम में अवसर मिल सकता है। आकाश दीप ने घरेलू टूर्नामेंट दलीप ट्रॉफी में शानदार गेंदबाजी करते हुए इंडिया बी के बल्लेबाजों को जमकर परेशान किया है। आकाशदीप ने पहली पारी में 4 विकेट लेने के बाद दूसरी पारी में भी 5 विकेट लिए हैं। अक्सर मिला जिसमें उन्होंने अच्छी गेंदबाजी करते हुए 3 विकेट लिए। उन्हें टीम में जगह मिलना इसलिए भी तय है क्योंकि अनुभवी तेज गेंदबाज मोहम्मद शमी अभी तक चोट से नहीं उबरें हैं। इसी कारण शमी बांग्लादेश के खिलाफ 2 मैचों की टेस्ट सीरीज में नहीं खेलेगे। इसके अलावा भारतीय टीम के जो खिलाड़ी दलीप ट्रॉफी खेल रहे हैं। उनमें से कई खिलाड़ियों का प्रदर्शन अब तक अच्छा नहीं रहा है। ऐसे में इन खिलाड़ियों को बाहर बैटाना पड़ सकता है। वहीं सिराज बिमार होने के कारण दलीप ट्रॉफी के शुरुआती दौर से बाहर है हालांकि उनके बांग्लादेश के खिलाफ सीरीज तक ठीक होने की संभावना है। इस साल के बचे हुए महीनों में भारतीय टीम को 10 टेस्ट मैच खेलने हैं।

# इस बार आईपीएल मेगा नीलामी में उतरेंगे स्मिथ



सिडनी। ऑस्ट्रेलिया के अनुभवी बल्लेबाज स्टीव स्मिथ को इस बार इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) में अवसर मिलने की उम्मीद है। उनका मानना है कि मेजर लीग क्रिकेट (एमएलसी) में अपने अच्छे प्रदर्शन का लाभ उठाने में। इससे वह टी20 के भी अच्छे खिलाड़ी साबित हुए हैं। इसलिए उन्हें आईपीएल के अगले सत्र में अवसर मिल सकता है, इसलिए वह इस बार मेगा नीलामी में उतरेंगे।

स्मिथ को टी20 विश्व कप के बाद स्कॉटलैंड एवं इंग्लैंड के आगामी दौर के लिए शामिल नहीं किया गया था। एमएलसी में स्मिथ के शानदार प्रदर्शन से वाशिंगटन फीडम को पहली बार लीग खिताब मिला। स्मिथ ने इस लीग में 49.00 की औसत और 154.74 के स्ट्राइक रेट से 294 रन बनाये। वह अपनी टीम की ओर से सबसे अधिक रन बनाने वाले खिलाड़ी रहे। स्मिथ ने फाइनल में भी सैन फ्रांसिस्को युनिवर्सिटी के खिलाफ 52 गेंदों में तेजी से 88 रन बनाये थे। सैन फ्रांसिस्को युनिवर्सिटी में पैट कर्मिस और हारिस रउफ जैसे तेज गेंदबाज शामिल थे। स्मिथ ने कहा, ‘मैं निश्चित रूप से आईपीएल में एक और अवसर चाहूंगा। मैं अपना नाम खिलाड़ियों की नीलामी में शामिल करूंगा। देखते हैं कि मुझे आगे बढ़ने का कितना अवसर मिलता है। उन्होंने कहा, ‘मुझे हाल में टी20 क्रिकेट और फ्रैंचाइजी में जो भी अवसर मिले हैं, मैंने काफ़ी अच्छा खेला है। ऐसे में मैं आईपीएल में अपना नाम शामिल कर इसका आनंद उठाना चाहूंगा। स्मिथ को पिछली दो नीलामी में किसी ने भी नहीं खरीदा था। ऐसे में वह 2021 से आईपीएल का मेन्यू खेल पाये हैं। इस बल्लेबाज का कहना है कि वह इससे निराश नहीं हुए और उनका ध्यान अपने खेल पर रहा है। टी20 टीम में जगह नहीं मिलने पर उन्होंने कहा, ‘अंतरराष्ट्रीय टी20 की बात करू तो मुझे नहीं पता वह चयनकर्ता के बीच क्या चल रहा है। उनके पास कुछ अच्छे विकेट हैं और वे उसे आजमाना चाहते हैं। मुझे इससे कोई शिकायत नहीं है।’ स्मिथ ने कहा, ‘मैं समझता हूँ कि वे विश्व कप को ध्यान में रख कर ऐसे खिलाड़ियों को वरीयता दे रहे हैं जो सहजता से बड़े शॉट लगा सकें। इसलिए मैं इन बातों से परेशान नहीं हूँ।’

स्मिथ को टी20 विश्व कप के बाद स्कॉटलैंड एवं इंग्लैंड के आगामी दौर के लिए शामिल नहीं किया गया था। एमएलसी में स्मिथ के शानदार प्रदर्शन से वाशिंगटन फीडम को पहली बार लीग खिताब मिला। स्मिथ ने इस लीग में 49.00 की औसत और 154.74 के स्ट्राइक रेट से 294 रन बनाये। वह अपनी टीम की ओर से सबसे अधिक रन बनाने वाले खिलाड़ी रहे। स्मिथ ने फाइनल में भी सैन फ्रांसिस्को युनिवर्सिटी के खिलाफ 52 गेंदों में तेजी से 88 रन बनाये थे। सैन फ्रांसिस्को युनिवर्सिटी में पैट कर्मिस और हारिस रउफ जैसे तेज गेंदबाज शामिल थे। स्मिथ ने कहा, ‘मैं निश्चित रूप से आईपीएल में एक और अवसर चाहूंगा। मैं अपना नाम खिलाड़ियों की नीलामी में शामिल करूंगा। देखते हैं कि मुझे आगे बढ़ने का कितना अवसर मिलता है। उन्होंने कहा, ‘मुझे हाल में टी20 क्रिकेट और फ्रैंचाइजी में जो भी अवसर मिले हैं, मैंने काफ़ी अच्छा खेला है। ऐसे में मैं आईपीएल में अपना नाम शामिल कर इसका आनंद उठाना चाहूंगा। स्मिथ को पिछली दो नीलामी में किसी ने भी नहीं खरीदा था। ऐसे में वह 2021 से आईपीएल का मेन्यू खेल पाये हैं। इस बल्लेबाज का कहना है कि वह इससे निराश नहीं हुए और उनका ध्यान अपने खेल पर रहा है। टी20 टीम में जगह नहीं मिलने पर उन्होंने कहा, ‘अंतरराष्ट्रीय टी20 की बात करू तो मुझे नहीं पता वह चयनकर्ता के बीच क्या चल रहा है। उनके पास कुछ अच्छे विकेट हैं और वे उसे आजमाना चाहते हैं। मुझे इससे कोई शिकायत नहीं है।’ स्मिथ ने कहा, ‘मैं समझता हूँ कि वे विश्व कप को ध्यान में रख कर ऐसे खिलाड़ियों को वरीयता दे रहे हैं जो सहजता से बड़े शॉट लगा सकें। इसलिए मैं इन बातों से परेशान नहीं हूँ।’

एक नजर

बांग्लादेश के सेना प्रमुख ने की राष्ट्रपति शहाबुद्दीन से मुलाकात

ढाका : बांग्लादेश के सेना प्रमुख जनरल वकार उज जमान ने आज यहां बंगभवन में राष्ट्रपति मोहम्मद शहाबुद्दीन से मुलाकात की। उन्होंने इस दौरान राष्ट्रपति को बांग्लादेश सेना की गतिविधियों से अवगत कराया। ढाका से छपने वाले अखबार द डेली स्टार की रिपोर्ट अनुसार सेना प्रमुख जमान ने राष्ट्रपति से कानून-व्यवस्था पर खास तौर पर चर्चा की। राष्ट्रपति शहाबुद्दीन ने हाल के आंदोलन के दौरान नागरिकों के जीवन और संपत्ति की रक्षा में सेना के योगदान की प्रशंसा की। उन्होंने हाल ही में देश के उत्तरी और दक्षिणपूर्वी क्षेत्रों में आई बाढ़ के दौरान राहत और बचाव कार्यों में सेना की भूमिका की भी सराहना की। उल्लेखनीय है कि सेना प्रमुख जमान देश की अपदस्थ प्रधानमंत्री के रिश्तेदार हैं। जमान की पत्नी बेगम साराहनाज कामालिका रहमान शेख हसीना के चाचा की बेटी हैं। जनरल वकार के ससुर का नाम मुस्ताफिजुर रहमान है।

उत्तर रेलवे ने विनेश फोगाट और बजरंग पुनिया का इस्तीफा किया स्वीकार

नई दिल्ली : उत्तर रेलवे ने सोमवार को पहलवान विनेश फोगाट और बजरंग पुनिया के इस्तीफों को स्वीकार कर लिया। दोनों पहलवानों ने पिछले सप्ताह कांग्रेस में शामिल होने से पहले अपने पदों से इस्तीफा दे दिया था।

वायु प्रदूषण को लेकर दिल्ली सरकार सख्त, एक जनवरी तक पटाखों के उत्पादन और बिक्री पर प्रतिबंध

एजेंसी

नई दिल्ली : वायु प्रदूषण को लेकर दिल्ली सरकार सख्त एक जनवरी तक पटाखों के उत्पादन और बिक्री पर प्रतिबंध। दिल्ली सरकार ने आगामी सर्दी के मौसम में वायु प्रदूषण को नियंत्रित करने के लिए राष्ट्रीय राजधानी में पटाखों के उत्पादन, बिक्री तथा उपयोग पर सोमवार को प्रतिबंध लगा दिया। पर्यावरण मंत्री गोपाल राय ने एक बयान में कहा कि वायु प्रदूषण में मौसमी वृद्धि को कम करने के लिए प्रतिबंध आवश्यक है। प्रदूषण पटाखों के कारण और भी बढ़ता हो जाता है। राय ने कहा, सदियों के मौसम में दिल्ली में वायु प्रदूषण बढ़ने का खतरा है। इस समय पटाखे जलाने से प्रदूषण और बढ़ जाता है। उन्होंने कहा,



इस स्थिति को देखते हुए, पिछले वर्ष की तरह, हम सभी प्रकार के पटाखों के उत्पादन, भंडारण, बिक्री और उपयोग पर पूर्ण प्रतिबंध लगा रहे हैं, ताकि लोगों को प्रदूषण से बचाया जा सके। किसी भी तरह के पटाखों की ऑनलाइन बिक्री और आपूर्ति पर

भी पूर्ण प्रतिबंध रहेगा। राय ने कहा, किसी भी भ्रम से बचने के लिए, यह प्रतिबंध सभी प्रकार के पटाखों पर लागू होता है। पटाखे जलाने से होने वाले प्रदूषण से दिल्लीवासियों को राहत देने के लिए यह प्रतिबंध एक जनवरी, 2025 तक दिल्ली में प्रभावी

रहेगा। वायु प्रदूषण से निपटने के लिए सरकार की प्रतिबद्धता पर प्रकाश डालते हुए राय ने कहा कि 21 प्रमुख क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित करते हुए एक शीतकालीन कार्य योजना विकसित की जा रही है। इस योजना में प्रदूषण को नियंत्रित करने के उद्देश्य से विभिन्न

अभियान शामिल होंगे और सरकार इसकी सफलता सुनिश्चित करने के लिए नागरिकों के साथ मिलकर काम करेगी। राय ने कहा, हम दिल्ली के सभी निवासियों से आग्रह करते हैं कि वे पटाखे जलाने के बजाय दीये जलाकर और मिठाइयां बांटकर त्योहार मनाएं। हम सब मिलकर प्रदूषण कम करने और पर्यावरण की रक्षा करने की जिम्मेदारी ले सकते हैं। यदि प्रत्येक नागरिक प्रदूषण योद्धा बन जाए, तो हम वायु प्रदूषण से होने वाले स्वास्थ्य जोखिमों को रोक सकते हैं। उन्होंने कहा कि प्रतिबंध को कठोरता से लागू करने के लिए दिल्ली पुलिस, दिल्ली प्रदूषण नियंत्रण समिति और राजस्व विभाग के सहयोग से एक कार्य योजना तैयार की जाएगी।

केंद्रीय शिक्षा मंत्री प्रधान ने एनईपी को लेकर तमिलनाडु के मुख्यमंत्री पर किया पलटवार

एजेंसी

नई दिल्ली : केंद्रीय शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) को लेकर तमिलनाडु के मुख्यमंत्री एम.के. स्टालिन पर पलटवार करते हुए सोमवार को सवाल किया कि क्या वह तमिल सहित मातृभाषा में शिक्षा का विरोध कर रहे हैं। तमिलनाडु के मुख्यमंत्री एम.के. स्टालिन ने सोशल मीडिया के माध्यम से केंद्र की भाजपा सरकार पर राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) को लेकर आरोप लगाया

है। उन्होंने एनईपी के आगे झुकने से मना करने पर देश में सबसे अच्छे प्रदर्शन करने वाले राज्यों को केंद्र सरकार पर धन देने से इनकार करने का आरोप लगाया है। केंद्रीय शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान ने स्टालिन के एक्स पर साझा किये गये पोस्ट पर प्रतिक्रिया देते हुए लिखा, लोकतंत्र में राज्यों के बीच स्वस्थ प्रतिस्पर्धा का हमेशा स्वागत है। हालांकि, किसी बात को मनवाने के लिए राज्यों को एक-दूसरे के खिलाफ खड़ा करना संविधान की

भावना और एकीकृत भारत के मूल्य के खिलाफ है। एनईपी 2020 को व्यापक परामर्श के माध्यम से तैयार किया गया था और इसमें भारत के लोगों की सामूहिक बुद्धि है। प्रधान ने स्टालिन के एनईपी के सिद्धांतवादी विरोध पर कुछ सवाल खड़े करते हुए कहा कि क्या आप तमिल सहित मातृभाषा में शिक्षा का विरोध कर रहे हैं? क्या आप तमिल सहित भारतीय भाषाओं में परीक्षा आयोजित करने का विरोध कर रहे हैं?

नाइजीरिया में पेट्रोल टैंकर में विस्फोट 48 से ज्यादा लोगों की मौत

एजेंसी

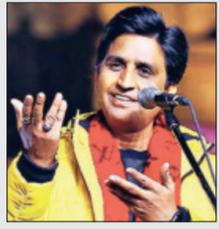
नाइजर : नाइजीरिया में कल दोपहर एक पेट्रोल टैंकर में हुए विस्फोट में 48 से ज्यादा लोगों की मौत हो गई। नाइजीरिया के समाचार पत्र प्रीमियम टाइम्स के मुताबिक, यह हादसा उत्तर-मध्य राज्य नाइजर में बिदा-अगाई-लागाई राजमार्ग पर दोपहर लगभग 12:30 हुआ। नाइजर इमरजेंसी मैनेजमेंट एजेंसी के महानिदेशक अब्दुल्ला-बाबा-अरा ने इसकी पुष्टि की। उन्होंने कहा कि आपदा स्थल राज्य के एगोई स्थानीय सरकारी क्षेत्र में डेंडो समुदाय से दो किलोमीटर दूर है।

अबुल्ला-बाबा-अरा ने कहा कि यह हादसा तब हुआ जब लागोस के रास्ते में कानो राज्य के वुडिल से यात्रियों और मवेशियों से भर एक ट्रेलर ट्रक से पेट्रोल से भरा एक टैंकर टकरा गया। इसकी चपेट में एक क्रैन और एक पिकअप वैन भी आ गए। उन्होंने कहा कि 48 से अधिक लोगों की मौत की पुष्टि हो चुकी है। 50 से अधिक गायें जिंदा जल गईं। महानिदेशक ने कहा कि एजेंसी की रैपिड रिस्पॉन्ड टीम और अन्य स्थानीय आपातकालीन प्रबंधन समितियां (एलजीएमसी) घटनास्थल पर पहुंचीं।

संक्षिप्त खबरें

कवि कुमार विश्वास को मिली जान से मारने की धमकी, मैनेजर ने दर्ज कराई प्राथमिकी

गाजियाबाद : कवि और राम कथा वाचक डॉ. कुमार विश्वास को मोबाइल फोन पर जान से मारने की धमकी देने का मामला प्रकाश में आया है। किसी कॉलर ने डॉ. विश्वास को शनिवार को उस समय धमकी दी जब वह सिंगापुर में श्रीराम कथा कर रहे थे। इस संबंध में उनके मैनेजर प्रवीण पांडेय ने पुलिस में प्राथमिकी दर्ज कराई है। एसीपी स्वतंत्र कुमार सिंह ने बताया कि पुलिस ने प्राथमिकी दर्ज कर कॉलर के नंबर के आधार पर जांच शुरू कर दी गई। जांच में पता चला है कि कॉलर मुंबई से आई थी और कॉलर उस समय शराब के नशे में थे। जल्द ही कॉलर की गिरफ्तारी की जाएगी। मैनेजर ने प्रवीण ने पुलिस को दी तहरीर में बताया है कि उनकी और डॉ. विश्वास की जान को खतरा है। कॉलर ने न तो अपना नाम बताया और न ही किसी संगठन का नाम लिया। वह सीधे डॉ. विश्वास का नाम लेकर गाली गलौज की और राम कथा करने पर उन्हें जान से मारने की धमकी दी। मैनेजर ने कहा है कि धमकी प्रकृति को देखते हुए इसे गंभीरता से लेना जरूरी है और इस संबंध में वह हर समय पुलिस का सहयोग करने के लिए तैयार हैं। डॉ. विश्वास इंदिरापुरम थानाक्षेत्र के वसुंधरा इलाके में रहते हैं। तहरीर में कहा गया है कि कॉलर ने बहुत ही अपमानजनक भाषा का प्रयोग किया और करते हुए डॉ. विश्वास को धमकी दी है। इस धमकी के बाद मेरी और डॉ. विश्वास की सुरक्षा को लेकर खतरा उत्पन्न हो गया है।



दिल्ली प्रदूषण विभाग के अभियंता मोहम्मद अली को सीबीआई ने रिश्तत लेते किया गिरफ्तार

नई दिल्ली : केंद्रीय जांच ब्यूरो (सीबीआई) ने दिल्ली प्रदूषण नियंत्रण समिति (डीपीसीसी) के वरिष्ठ पर्यावरण अभियंता मोहम्मद अली खान और एक बिचौलिए को उसके बेटे सहित 91,500 रुपये की रिश्तत की राशि की लेते हुए गिरफ्तार किया है। तलाशी के दौरान वरिष्ठ पर्यावरण अभियंता के परिसर से 2.39 करोड़ रुपये की नकदी बरामद भी बरामद की गई। सीबीआई ने यह जानकारी सोमवार को दी। सीबीआई अधिकारियों के मुताबिक, एक शिकायतकर्ता की शिकायत के बाद डीपीसीसी के वरिष्ठ पर्यावरण अभियंता मोहम्मद अली खान सहित पांच निजी व्यक्तियों के खिलाफ एक दिन पहले रविवार को मामला दर्ज किया गया था। प्राथमिकी में आरोप लगाया गया है कि आरोपित वरिष्ठ पर्यावरण अभियंता भ्रष्ट आचरण में लिप्त रहा है। वह डीपीसीसी सहमति के नवीनीकरण के लिए निजी फर्मों के प्रतिनिधियों से रिश्तत लेता रहा है। इसमें एक निजी व्यक्ति बिचौलिए और सलहाकार की भूमिका में काम कर रहा है। इसके बाद सीबीआई ने मामला दर्ज किया। सीबीआई ने जिन पांच आरोपितों के खिलाफ मामला दर्ज किया है, उसमें डीपीसीसी के वरिष्ठ पर्यावरण अभियंता मोहम्मद अली खान के अलावा बिचौलिये भागवत शरण सिंह और उसका बेटा किश्वर शरण सिंह, मेसर्स राम इलेक्ट्रोप्लेटर्स का प्रोप्राइटर राजकुमार चुध, मेसर्स राम इलेक्ट्रोप्लेटर्स और मेसर्स एमवीएम नरेला के प्रोप्राइटर गोपाल नाथ कपूरिया का नाम शामिल है।



# जन शिकायत समाधान कार्यक्रम

## नागरिकों की शिकायतों के त्वरित एवं प्रभावी निवारण हेतु झारखण्ड पुलिस की पहल

### कार्यक्रम के उद्देश्य

- नागरिकों के पुलिस से संबंधित शिकायतों को प्राप्त करना एवं उक्त शिकायतों का पंजीकरण किया जाना।
- शिकायतों पर पुलिस के द्वारा की गई कार्रवाई की सूचना शिकायतकर्ता को प्रेषित करना।
- निर्धारित समय सीमा के भीतर कार्रवाई नहीं होने की स्थिति में त्वरित पदाधिकारियों के संज्ञान में विषय को प्रेषित किया जाना।

- कार्रवाई योग्य शिकायतों पर त्वरित एवं प्रभावी निवारण करना।
- जिन शिकायतों पर कार्रवाई संभव नहीं है, उनकी भी जानकारी शिकायतकर्ता को उपलब्ध करना।
- पुलिस द्वारा बनाये जा रहे सर्वोत्तम पद्धतियों को इन कार्यक्रमों के दौरान प्रदर्शित करना।
- नागरिकों की समस्या को समझते हुए पुलिस व्यवस्था में आवश्यक नीतिगत सुधार करना।



## आज, 10 सितंबर के दिन नजदीकी जन शिकायत समाधान कार्यक्रम में जाकर अपनी समस्या का समाधान जरूर करवायें

सूचना एवं जनसंपर्क विभाग, झारखण्ड सरकार

PR- 335211 (IPRD) 24-25

नवबिहार मीडिया प्रा. लि. के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक डॉ. रामाज्ञा तिवारी द्वारा विश्वेश्वर पब्लिकेशंस प्लव्हापी की ओर से शिवासाई पब्लिकेशन प्राइवेट लिमिटेड, निबर टेंडर बागीचा पेट्रोल पंप, रातू, रांची (झारखंड) - 835222 से मुद्रित एवं उद्योग भवन मार्ग, 19 A कोकर औद्योगिक क्षेत्र रांची- 834001 (झारखंड) से प्रकाशित। संपादक- डॉ. रामाज्ञा तिवारी, प्रधान संपादक-वेदेंद्र सिंह \* (श्रीआरवी एस्टेट के तहत खबरों के चक्र के लिए जिम्मेदार), प्रबंधक- नरेंद्र कुमार सिंह. 9334331934, 9386895799, 9507466535, RNI Regn.: JHAHIN/2011/40902